3, IV

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भली-भांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पाँच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन-किन विषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं ? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक् प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म-रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प-सूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जाएं। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियाँ। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मंदी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देशकी सीमाएं नदियाँ पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान् भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन २ अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियाँ आवेंगी उन उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (शरदङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्व प्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

विजयादशमी, शरत्पूर्णिमा, श्रीहनुमानजीका जीवनचरित्र, हनुमान्जीके जन्मका शास्त्रीय-निर्णय, श्रीहनुमान्जीकी स्वामिभक्ति, दीपावली, अन्नकूट, भ्रातृद्वितीया, वष्टिकाकर्षण (रस्साकशी) गोपाष्टमी, महाकालभैरव जयन्ती, श्रीदत्तजयन्ती, मल्लद्वादशी आदि।

सब लेख श्रावण शु० १० ता० ३० जुलाई १९४४ पर्यन्त "सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पञ्जाब)" इस पते पर पहुँचना आवश्यक है।

श्रीस्वाध्यायको—

भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है—

'श्रीस्वाध्याय' पर प्राप्त हुई सम्मतियोंमेंसे भारतके सम्मानित धुरन्धर विद्वानों एवं राष्ट्रिय प्रसिद्ध पत्रोंकी सम्मतियाँ वा समालोचनाएं प्रथम द्वितीय और तृतीयवर्षके गताङ्कोंमें क्रमशः दो-दो पृष्ठोंमें प्रकाशित की गई थीं। अब भी 'श्रीस्वाध्याय' की सफलताके लिए बधाईके पत्र एवं सुन्दर सम्मतियाँ निरन्तर आ रही हैं, उन सब सहृदय विद्वानोंके हम हृदयसे आभारी हैं। स्थानाभावके कारण अब सम्मतियोंके लिए केवल एक पृष्ठ ही रक्खा है; अतः जिन सम्मान्य विद्वानोंकी सम्मतियाँ प्रकाशित न हो सके वा विलम्बसे निकले तो आशा है वे क्षमा करेंगे। अभी प्राप्त हुई अनेक सम्मतियोंमेंसे कुछ एकका संक्षिप्त भाग निम्न है—

हिन्दी तथा संस्कृत-साहित्यके सुप्रसिद्ध मर्मज्ञ विद्वान् भू०पू० 'सौरभ' सम्पादक और अ० भा० गु० ब्राह्मण महासभा के भू०पू० सभापति श्री पं० रामनिवासजी शर्मा ब्रजनगरसे लिखते हैं—

"......'श्रीस्वाध्याय' के दर्शन हुए। पत्र अत्यधिक श्रेष्ठ और उपयोगी है। इसमें साहित्यिक वैज्ञानिक दार्शनिक और धार्मिक विषयों का रुचिकर वर्णन रहता है। आदर्श उत्तम और आदरणीय है। पत्र अपने ढंगका अनोखा और उच्चकोटिका है। यह वस्तुतः आपकी विद्वत्ता और प्रकाण्ड योग्यताका ज्वलन्त प्रमाण है।"

❃ ❃ ❃ ❃

संस्कृत तथा हिन्दी-साहित्यके प्रतिभासम्पन्न सुप्रसिद्ध विद्वान्, मारवाड़प्रान्तीय सनातन-धर्मसभाके मंत्री और श्रीरामानुज-संस्कृत-महाविद्यालयके प्रधानाध्यापक साहित्याचार्य श्री पं० रामेश्वरजी शास्त्री विद्यालङ्कार डीडवाना (मारवाड़) से लिखते हैं—

'श्रीस्वाध्याय' मिला। वास्तवमें हिन्दी-संसारके लिए आपकी यह अपूर्व देन है। सभी लेख सुपाठ्य उपादेय एवं बहिरङ्ग अत्यन्त आकर्षक और सादेपनकी सजीव मूर्ति है। प्रत्येक विषयोंका समावेश यथास्थान हुआ है और लेखकोंने अपने लेख मननपूर्वक लिखे हैं।

❃ ❃ ❃ ❃

दिल्ली का साप्ताहिक 'गोपाल' पत्र अपने १ अप्रैल १९४४ के अङ्कमें लिखता है—

"श्रीस्वाध्याय पत्रके उद्देश्य महान्, कागज व छपाई उत्तम और लेख सर्वोपयोगी, विभिन्न सुचारु रूपेण निर्वाचित विषयों पर उन-उन विषयोंके मर्मज्ञ विद्वानों द्वारा लिखित उच्च कोटिके होते हैं। ज्योतिशास्त्र सम्बन्धी मौलिक लेखोंका अनुपाततः बाहुल्य है। हम इसके सञ्चालक वरको इसकी असाधारण सफलता पर बधाई देते हैं और सर्वसाधारणसे आशा करते हैं कि वे इसके अधिकसे अधिक संख्यामें सदस्य बन कर लाभ उठाएंगे........।"

❃ ❃ ❃ ❃

म० म० श्री पं० हरिहरकृपालुजी द्विवेदी, श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा कौशिक और श्री पं० मनोहरलालजी गौड़ व्याकरणाचार्य आदि मान्य विद्वानोंकी सम्मतियाँ यहाँ स्थानाभावके कारण प्रकाशित न हो सकी; वे अग्रिम अङ्कमें आवेंगी।

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः । ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्मांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष	सोलन, आषाढ़ शु० १० शनिवार	संख्या
३	सं० २००१ वि०	४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

प्रभुसे !

[श्री पं० चम्पालालजी विशारद कविशेखर 'मञ्जुल']

सदियोंसे पड़े-पड़े सो रहे हैं सुनके कभि नेक लजाते नहीं ।
कर प्रेम निरन्तर भारतिसे उरका तम-तोम भजाते नहीं ॥
कवि 'मञ्जुल' कामके चाकर हो तन पर शुचि-शस्त्र सजाते नहीं ।
करनेको इन्हें फिर जागृत क्यों व्रजवल्लभ वेणु बजाते नहीं ॥१॥

कवि 'मञ्जुल' देशके सेवकोंका निशिवासर हाथ बटा रहे हैं ।
भयभीत न किञ्चित होके कभी पद पीछे न नेक हटा रहे हैं ॥
दिखलाके पराक्रम जो रणमें रिपुका अभिमान घटा रहे हैं ।
धन हैं वह वीर स्वदेश पै जो बलिदान हो शीश कटा रहे हैं ॥२॥

अखण्डभारतवर्ष

साम्राज्यवादियोंकी सदासे ही यह नीति चली आई है कि साम्राज्योंकी शासक जातियाँ अधीन जातियोंको अनेक प्रकारसे निर्बल बनानेका प्रयत्न करती रही हैं। इससे इन शासक जातियोंको यह लाभ होता है कि शास्य अर्थात् अधीन लोग सदा अधीन ही रहते हैं। उनमें स्वातन्त्र्य प्राप्तिके लिए उत्साह ही उत्पन्न नहीं होता। उत्साह होने पर भी उनमें अनेकों प्रकारकी निर्बलताओंके कारण उनके सभी प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। जातिकी निर्बलताका सबसे बड़ा कारण होता है पारस्परिक कलह तथा फूट। इतिहासके अध्ययनसे यही ज्ञात होता है कि भारतवर्षकी परतन्त्रताका भी मुख्य कारण सदा आपसकी फूट ही था। भारतीय राज्योंके पारस्परिक कलहोंने ही विदेशियोंको भारतमें अपने साम्राज्य बनानेका अवसर दिया। साम्राज्यको बढ़ाने तथा दृढ़ बनानेके लिए इन लोगोंने यहाँकी फूटको बढ़ाया और अब भी अपने अधिकारोंकी रक्षाके लिए इस फूटको बढ़ानेका प्रयत्न अनेक प्रकार से कर रहे हैं। इन प्रयत्नोंका ही एक फल है जिनाहका पाकिस्तान। परन्तु सभी लोग स्वार्थी तथा स्वदेशद्रोही नहीं होते; अतः भारतवर्षके समस्त हिन्दू तथा अधिकांश शिक्षित मुसलमान इस पाकिस्तानका विरोध तथा अखण्ड-हिन्दुस्थानका पक्ष करते हैं। अखण्ड-हिन्दुस्थान अर्थात् अखण्ड-भारतवर्ष किसको वस्तुतः कहना चाहिए और इसकी प्राप्ति कैसे हो सकती है; यह इस लेखका विषय है।

देशोंके विभाग तथा उनकी सीमाओंके निर्णय का आधार जैसे भूगोल शास्त्र है वैसे ही इतिहास भी है। अनेक देशोंका विभाग भौगोलिक विभाग के न होने पर भी केवल इतिहास ही के आधार पर हुआ करता है। अतः इतिहास इस विषयमें अधिक प्राधान्य रखता है। प्राचीन इतिहाससे हमें यह ज्ञात होता है कि भारतीय सभ्यता, संस्कृतभाषा तथा वैदिकधर्मका प्रचार वैदिककालसे लेकर ऐतिहासिककाल तक पूर्वमें कामरूपसे लेकर पश्चिममें हिन्दुकुश पर्वत तक; तथा उत्तरमें हिमालयसे लेकर दक्षिणमें सिंहलद्वीप अर्थात् लङ्काद्वीप तक था। कम्बोज देश (काबुल) गन्धार देश (कन्दहार) तथा सिन्धु पारके प्रदेशकी श्वेत्या (स्वात) क्रुमु (कुर्रम) गोमती (गोमल) तथा कुभा (काबुल) आदि नदियों का उल्लेख तो वेदोंमें भी आता है। निरुक्तादि ग्रन्थोंमें भी इनका वर्णन आता है। निरुक्तकार, पाणिनि तथा पतञ्जलिने संस्कृतभाषाके उन प्रयोगों का भी व्याख्यान किया है जो कम्बोज अर्थात् काबुल देशमें प्रयुक्त होते थे। उपनिषदोंमें भी गन्धार (कन्दहार) देशका उल्लेख मिलता है। महाभारतादि प्राचीन इतिहास तथा काव्यग्रन्थोंमें तो गान्धारके क्षत्रियोंके अनेक चरितोंका वर्णन है। ऐतिहासिककालके आरम्भमें भी ये प्रदेश प्रायः भारतवर्षके ही प्रान्त थे। चन्द्रगुप्त मौर्यके साम्राज्य में भी अफगानिस्तानके अधिकांश प्रदेश सम्मिलित थे। सम्राट् अशोकके शिलालेख सिन्धुपारके प्रदेशोंमें अनेक स्थानों पर मिलते हैं। सम्राट् कनिष्क के साम्राज्यका केन्द्र तो पिशावर ही था। मुगल शासकोंके समय भी ये प्रदेश प्रायः भारतीय साम्राज्यके ही अंश थे। पाणिनि जैसे विद्वानोंका जन्म भी इन ही प्रदेशोंमें हुआ था। इससे यह सर्वथा सिद्ध है कि सिन्धुपारके प्रदेश हिन्दुकुश पर्वत तक भारतवर्षके ही प्रान्त हैं। अतः अखण्डभारतवर्ष में वस्तुतः ये भी सम्मिलित होते हैं। इसलिए अखण्ड भारतवर्षके प्रेमीको इन प्रदेशोंको कभी भी भूलना नहीं चाहिए। ये प्रदेश भारतवर्षके साथ आधुनिक परिस्थितिमें मिल सकते हैं अथवा नहीं, यह तो बात और है। परन्तु ये प्रदेश अखण्डभारतवर्षके

अङ्ग हैं कि नहीं यह बात कुछ और है। दूसरी बात यह है कि प्रयत्नसे सब कुछ हो सकता है। चाहे भारतीय राज्यमें इन प्रदेशोंको मिलानेमें काठिन्य हो, परन्तु भारतीय सभ्यताको इन प्रदेशोंमें फैलाकर सभ्यता द्वारा इनको अखण्डभारतमें मिलाने में अधिक काठिन्य नहीं होगा। परन्तु यह तभी सम्भव है जब भारत स्वतन्त्र हो।

दक्षिण देश तो निर्विवाद भारतका ही अङ्ग है। वैदिककालमें भी दक्षिण देश भारतवर्षका ही अङ्ग था, यह बात ऋग्वेद ही से सिद्ध होती है। ऋग्वेद के "गर्तारुगिव सनये धनानाम्" तथा "विजामातु रुत वा घास्यालात्" आदि मन्त्र प्रतीकोंका व्याख्यान करते हुए यास्कमुनि स्पष्ट रूपसे कहते हैं कि इन मन्त्रों में दक्षिणदेशकी प्रथाओंका उल्लेख है। इससे यह सिद्ध होता है कि ऋग्वेदके समयमें दक्षिणके साथ आर्योंका इतना घनिष्ठ सम्बन्ध वर्तमान था कि वहाँ की प्रथाओंका उल्लेख आर्योंके ऋग्वेद जैसे ग्रन्थोंमें होने लगा। महाभारतके समय भी दक्षिण देशमें भारत (भरतके वंशज) रहते थे। बौद्धधर्म प्रचारके अनन्तर वैदिकधर्मके पुनरुत्थानमें तो दक्षिण देशके विद्वानोंने ही अधिक काम किया। इस विषय में अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं। ब्रह्मदेश को तो अंग्रेजोंने ही भारतवर्षके साथ मिलाया था और उन्होंने ही इसे पृथक् कर दिया। यद्यपि ब्रह्मदेशमें भी भारतीय सभ्यताका प्रचार था तथापि उसको हम भारतवर्षका प्रान्त मान नहीं सकते। वैसे तो समस्त पूर्वी एशिया तथा ईरान देशमें भी भारतीय सभ्यता तथा धर्मका बहुत प्रचार था। अब रह जाता है सिंहल द्वीप (लङ्का) उसका उल्लेख रामायणादिमें प्रसिद्ध ही है। इसके अतिरिक्त राजतरङ्गिणी आदि अनेक ग्रन्थोंसे यह सिद्ध होता है कि वह भी सभ्यता तथा धर्म आदि के अनुसार भारत ही का एक अंश सदासे था। वहाँ जो भाषा प्रायः बोली जाती है उसे सिंहली भाषा कहते हैं। वह हमारी हिन्दीकी भांति संस्कृतभाषा ही का अपभ्रंश है। अतः इस देशको भी अखण्डभारतवर्षका ही एक प्रान्त मानना चाहिए। चन्द्रवंशी आर्योंमें एक बड़ा पराक्रमी तथा ज्ञानी सम्राट् भरत नामक था। उसीके नाम पर उस वंशके समस्त क्षत्रियोंको भारत कहा गया। उस समय इन्हीं भारत क्षत्रियों के राज्य समस्त भारतवर्षमें स्थापित हुए थे। अतः इस देशको भारतवर्ष अर्थात् भारतोंका देश कहने लगे। "हिन्दुस्थान" नाम तो इस देशको ईरान देश के लोगोंने दिया है। वे प्रायः 'स' को 'ह' बोलते हैं। अतः सिन्धु नदी तथा उस प्रदेशके लोगों को भी वे हिन्दु कहने लगे। पुनः धीरे-धीरे समस्त भारतवर्षका नाम हिन्दुस्थान पड़ गया।

इस अखण्डहिन्दुस्थानकी प्राप्तिके मार्गमें इस समय दो बड़े विघ्न उपस्थित हैं। सबसे बड़ा विघ्न है हमारी परतन्त्रता और उससे छोटा विघ्न है मुसलमानोंका विरोध। परतन्त्रताको नष्ट करनेके विषयमें "श्रीस्वाध्याय" में पहले भी कई लेख छप चुके हैं; अतः इस समय मुसलमानोंके विरोधके विषयमें ही थोड़ा बहुत विचार किया जायगा। भारतीय मुसलमानोंमें कुछ लोग यह चाहते हैं कि जहाँ-जहाँ मुसलमान अधिक संख्यामें हैं उस-उस प्रदेशको हिन्दू-भारतवर्षसे पृथक् करके एक मुस्लिम-भारतवर्षके रूपमें मुसलमानोंको दे दिया जाय। इसी प्रकार चन्द्रभागाके पारके सभी भारतीय प्रदेश तथा सिन्धुप्रान्तको अखण्ड-भारतवर्षसे पृथक् होनेका भय है। अखण्डभारतवर्षके प्रेमियोंको इस भयसे कभी डरना नहीं चाहिए; क्योंकि यह बात कभी होने वाली नहीं। कल्पना कीजिये कि भारतवर्षको इस प्रकारसे दो विभागोंमें बाँट दिया जाय तो क्या होगा? हिन्दू-भारतवर्ष थोड़े ही वर्षोंमें उन्नति करके एक महान् शक्तिशाली राष्ट्र बन जायगा। मुस्लिमभारत अर्थात् पाकिस्तानके प्रदेश न तो अधिक धनाढ्य ही हैं और न इन प्रदेशोंमें शिक्षा ही अधिक है। इन प्रदेशोंके पाकिस्तानी नेता लोगोंमें बलिदानका कुछ उत्साह भी नहीं। प्रकृतिने इन प्रदेशोंको ऐसा बनाया है कि जीवनकी अनेक आवश्यकताओं तथा उन्नतिके

अनेक साधनोंके लिए इनको हिन्दू-भारतकी सहायताकी अवश्य अपेक्षा रहेगी। इसके बिना इनका निर्वाह होना कठिन होगा। अतः इनको भारतवर्षसे मैत्री अवश्य रखनी ही पड़ेगी। पश्चिमकी ओरके इनके पड़ोसी देश भी इतने समृद्ध नहीं कि उनसे मिल कर ये लोग काम चला सकें। अतः ये लोग धीरे-धीरे अखण्डभारतमें सम्मिलित होनेके लिए स्वयमेव विवश होते जाएंगे। यदि ये लोग भारतके साथ मैत्री न रखें और वैर ही का व्यवहार करें तो समृद्ध हिन्दू-भारतको हिन्दूकुश तकके समस्त प्रदेशोंको जीत लेनेमें कोई भी कठिनाई नहीं होगी। अब तो वह समय नहीं कि जयचन्द्र जैसे हिन्दू पाकिस्तानियोंका साहाय्य करके भारतवर्षको हानि पहुँचा सकें। अब तो सभी हिन्दू अखण्ड रहने पर तुले हैं। यदि कोई पाकिस्तानी मुसलमान ग्यारहवीं शताब्दीके स्वप्न देखता हो तो यह उसकी बड़ी भारी भूल है। अतः सन्धि अथवा विग्रह दोनों बातोंमें अखण्डभारत अनिवार्य है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या सभी पाकिस्तानी मुसलमान उन्मत्त हो गये हैं? क्या कोई भी इन बातोंको सोचता नहीं? — पाकिस्तानी मुसलमानोंमें दो प्रकारके लोग हैं। एक तो मुस्लिमलीगी नेता लोग और दूसरे पंजाब आदि प्रान्तोंके जनसाधारणके मुसलमान। इनमेंसे जनसाधारणके मुसलमानोंमें शिक्षाका बहुत ही न्यून प्रचार है। अतः वे दूरदर्शी नहीं बन सकते। वे तो प्रायः उसी संस्थाका अनुसरण करते हैं जिसकी सहायता शासक लोग करें। अतः वे अन्धश्रद्धा ही के कारण पाकिस्तानका पक्ष करते हैं। उनमें तो प्रायः इतना भी सोचने की बुद्धि नहीं कि पाकिस्तानमें होगा क्या? और उनकी स्थिति पाकिस्तानमें क्या होगी? इसलिए ये लोग तभी तक पाकिस्तानका पक्ष करेंगे जबतक ये अशिक्षित रहेंगे। अब रह गये नेता लोग। उनमेंसे किसी को भी दुःखी देश भाइयोंके साथ कोई सहानुभूति नहीं। वे तो प्रायः सभी स्वार्थ पर हैं। उनमें बलिदानका जरा भी उत्साह नहीं। उनमें प्रायः बड़े-बड़े जमींदार, जागीरदार तथा राजपदाधिकारी लोग ही सम्मिलित हैं। देशप्रेमी तथा जातिप्रेमी लोग तो उनमें बहुत ही थोड़े हैं। वे लोग अच्छी प्रकारसे समझते हैं कि भारतवर्षके स्वतन्त्र होने पर वे दुःखी प्रजाका रुधिर चूस नहीं सकेंगे। अतः वे चाहते हैं कि भारतके स्वातन्त्र्यमें पाकिस्तान आदि माँगों द्वारा विघ्न डाल दिया जाये जिससे कि अंग्रेजी राज्य ही चलता रहे। और यदि भारत स्वतन्त्र हो भी जाय तो भी रुधिर चूसने के लिए पाकिस्तानके रूपमें कोई प्रदेश मिले। सारांश उनकी माँग यह है कि अंग्रेजोंके बदले वे ही प्रजाको पीड़ित करके ऐश्वर्यको भोगते रहें। इसका एक उत्तम दृष्टान्त है पंजाबके मन्त्रिमण्डलका आयव्यय प्रबन्ध। इस वर्ष उन्हें व्ययको काटकर कई लाख रुपये बचते थे। कुछ देर तक विचार होता रहा कि इस धनको किस काममें व्यय किया जाय? पर अन्तमें यह हुआ कि इस धनको एक बहाने या दूसरे बहानेसे मन्त्रिमण्डल तथा गवर्नरमें बाँट दिया गया। यह है वस्तुतः सार पाकिस्तानकी लम्बी चौड़ी माँग का! कई वर्षोंसे हम पाकिस्तानके विषयमें बहुत कुछ सुनते रहे हैं। परन्तु आज तक हमने यह कभी नहीं सुना कि मिस्टर जिनाहने पाकिस्तानकी प्राप्तिका कोई मार्ग बताया या इसके लिए बातोंसे अतिरिक्त कोई काम भी किया। किस मुसलमानने आज तक पाकिस्तानके लिए कोई भी बलिदान किया? मि० जिनाहने कौनसा आन्दोलन आज तक इसके लिए किया? ये बातें केवल शब्दात्मक ही हैं; कर्मात्मक नहीं। अतः पाकिस्तान की माँग सर्वथा निर्मूल है। भारतवर्ष अखण्ड ही रहेगा। पाकिस्तानकी इस निर्मूलताको समझते हुए ही राजाजी कह रहे हैं कि इस बातसे डरो मत, इसे मान लो क्योंकि यह चलनेवाला आयोजन तो है नहीं; अतः इसे मान लेनेमें कोई हानि नहीं। हमारे मतमें इस विषयमें यह निर्णय होना चाहिए था कि दशवर्षके अनन्तर पश्चिमके सभी प्रान्तोंके सभी निवासियोंसे मत (वोट) ले लिए जाएं।

यदि अधिकांश लोग पार्थक्य ही चाहें तो उन्हें प्रथक् होनेका अधिकार मिले। परन्तु वोट सभी निवासियों (हिन्दू सिक्ख मुसलमान) से लिए जाएं। हमारा विचार है कि इस प्रकारसे अखण्ड-भारतवर्ष भी सिद्ध होगा और पाकिस्तानी ज्वर भी सभीका उतर जायगा।

स्थूल दृष्टिसे तो अखण्डभारतवर्षकी समस्याका विचार किया गया। अब जरा सूक्ष्म दृष्टि अर्थात् शास्त्रीय दृष्टिसे भी इस समस्या पर विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है। अखण्डभारतवर्ष ही एक विशाल तथा समृद्ध राष्ट्र बनेगा। राष्ट्रके निवासी कौन हो सकते हैं और किन्हें राष्ट्रमें रहनेका अधिकार है इसके विषयमें राष्ट्रालोकमें कहा है—

पितृ पुण्यभुवं राष्ट्रं यन्मन्यन्ते च ये नराः।
तेषां नराणां राष्ट्रं तत्स्वीयं भवति सर्वथा ॥
पितृभूत्वं पुण्यभूत्वं द्वयं यस्य न विद्यते।
तस्य स्वत्वं तत्र राष्ट्रे भवितुं न किलार्हति ॥

[जो मनुष्य जिस देशको अपनी पितृभूमि और पुण्यभूमि समझते हैं, उन्हींका उस देश पर स्वत्व (अधिकार) होना चाहिए। और जो लोग जिस देश को अपनी पितृ तथा पुण्यभूमि नहीं मानते उनका उस देश पर किसी प्रकारका भी अधिकार नहीं हो सकता।]

इस समयके भारतीय मुसलमानोंमें अनेक ऐसे हैं जो पुण्यभू और पितृभू सहस्रों मील दूरके एक मरुस्थलको मानते हैं। अतः ऐसी अवस्थामें इस प्रकारके मुसलमान कभी भारतराष्ट्रके सच्चे भक्त नहीं बन सकते। अन्य मुसलमानी देशोंमें भी प्रायः यही दशा थी, परन्तु टर्की जैसे मुस्लिमदेशोंको ऐसी अन्धश्रद्धाके दुष्परिणामोंका ज्ञान हो गया और फलतः वहाँके निवासियोंने 'कुरान' का अनुवाद अपनी टर्किश भाषामें किया और उसीका उपयोग करने लगे। इसके अतिरिक्त उन्होंने काबाकी ओर झुकना छोड़ दिया और टर्कीकी राजधानीकी ही ओर झुकना आरम्भ किया। सारांश कि वे टर्की हीको पुण्यभू तथा पितृभू मानने लगे। तब कहीं तुर्क लोग कुछ उन्नति कर सके। जब तक समस्त राष्ट्र निवासियोंको राष्ट्रके प्रति ऐसी भावना न हो तब तक राष्ट्र उन्नति कर ही नहीं सकता। "श्रीस्वाध्याय" ने तो यहाँ तक घोषणा की कि राष्ट्रका सम्राट् अथवा प्रधान भी एक मुख्य राष्ट्रसेवक ही है, राष्ट्रपति कभी भी नहीं। अतः राष्ट्रमें उसीको रहनेका अधिकार है जो राष्ट्रका सेवक ही बन कर रहे। जो किसी अन्य देशका भक्त बन कर रहे और अन्य देशके सुखोंको ही केवल भोगता रहे वह तो वस्तुतः उस राष्ट्रमें रहनेका अधिकारी नहीं। यह तो प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि जिस राष्ट्रका अन्न जल वस्त्र आदि सेवन करता हो उसी राष्ट्रका भक्त तथा सेवक बने। ऐसा न करने वाला तो सचमुच महापातकी है। वह राष्ट्रमें रहनेका अधिकारी नहीं। इसी कारणसे नाज़ियोंने अराष्ट्रभक्त यहूदियोंको जर्मन-राष्ट्रसे निकाल दिया था। इन विचारोंके अनुसार कई हिन्दू विद्वानोंका मत है कि शक्ति-सञ्चय करके मुसलमानोंको भारतवर्षसे निर्वासित करना चाहिए। परन्तु दूसरे लोग यह कहते हैं कि मुसलमान भी धार्मिक-स्वातन्त्र्यका अनुभव करते हुए भारतवर्ष हीमें सुखसे रहें। हमारा विचार तो यह है कि कई कोटिसंख्यक मुसलमानोंको निकाल देना असम्भव होगा। और यदि किसी प्रकारसे ऐसी बात सम्भव भी हो तो यह एक ऐसी बात होगी जो भारतवर्षने कभी भी पहले नहीं की। भारतका हृदय सदासे विशाल था और अब भी विशाल ही है। हमने सभीको अपनाया, किसीको निर्वासित नहीं किया। यदि हमने कभी पापियोंका विनाश भी किया तो ऐसा करनेसे पहले हमने अवश्य यह यत्न किया कि पापियोंको सुधार कर धर्मात्मा बना दिया जाए। इसीमें हमारा यश है। इस कारण हमें इस समय भी यही करना चाहिए। हमें चाहिए कि हम ऐसा प्रयत्न करें कि अखण्डभारतके निवासी मुसलमान भी सभी सच्चे राष्ट्रभक्त बन कर भारत ही को पुण्यभू तथा पितृभू मान लें। यदि इस समय मुसलमान ऐसा नहीं मानते तो हमारे विचारमें इसका मूल कारण उनके

हृदयोंकी क्षुद्रता और अज्ञान ही है। ज्यों ही उनका अज्ञान दूर होगा त्यों ही वे स्वयमेव औपनिषदधर्म को अपनाएंगे। यदि मुसलमानोंने विशालहृदय द्वारा औपनिषदधर्मका अध्ययन किया होता तो वे कभी मुसलमान नहीं बने होते। अतः औपनिषदधर्मका प्रचार ही अखण्डभारतकी प्राप्तिका मुख्य उपाय है। मुसलमानोंके कुरानका धर्म ऐसा है कि तार्किक बुद्धि वाले मनुष्यको उस पर कभी विश्वास रह ही नहीं सकता। तार्किकके लिए दार्शनिकधर्म ही उपयुक्त हो सकता है। हम अपने हिन्दू भाइयोंमें ही देख रहे हैं कि जिसकी विचारशक्ति शिक्षा द्वारा ज़रा बढ़ी उसका केवल पौराणिकधर्म पर कभी विश्वास नहीं रहता। यही दशा इस समय मुसलमान शिक्षित युवकोंकी भी है। कुरानके केवल पौराणिक धर्म पर उनका जो विश्वास था वह सर्वथा नष्ट हो गया। उनके पास पौराणिक सिद्धान्तोंसे ऊंचा कोई युक्ति सम्पन्न सिद्धान्त तो है नहीं, इस लिए वे उभय भ्रष्ट हो रहे हैं। यदि उनको युक्तिसम्पन्न सांख्य वेदान्त या किसी अन्य दर्शनका उपदेश खुले हृदयसे किया जाए तो वे हमारे धर्मको स्वयं ही स्वीकार करेंगे। यदि हम सोचें कि हम बलात्कारसे इनको हिन्दू बना देंगे तो यह हमारी भूल होगी। भारतके सम्राटों तथा शङ्कराचार्य जैसे सुधारक महापुरुषोंने ऐसा कभी भी नहीं किया। उन्होंने केवल उपदेशों द्वारा ही समस्त भारतवर्षको पुनः वैदिकधर्मी बनाया। हमारे महात्माओंने यूनानियोंके शासनकालमें अनेकों यवनोंको उपदेश द्वारा भागवतधर्मानुयायी बनाया।

आधुनिक मुसलमान प्रायः तीन प्रकार के हैं। एक तो हैं शिक्षित मुसलमान, जिनको तर्क द्वारा वाद-विवादसे दार्शनिकसिद्धान्त समझाए जा सकते हैं। हमें दर्शनोंकी फक्किकाओं तथा नव्यन्यायके शब्दाडम्बरोंमें उन्हें फंसानेकी कोई भी आवश्यकता नहीं। हमने दर्शनोंके मुख्य-मुख्य तथा उपयोगी सिद्धान्तोंका ही उपदेश करना है। वे सिद्धान्त हैं— कर्म, पुनर्जन्म, मनकी एकाग्रता, ध्यान, उपासना, ईश्वरकी सर्वव्यापकता, निष्कामकर्मयोग, भक्ति, वासना, गुणातीतता, मुक्ति आदि आदि। हिन्दूधर्म के सभी अङ्गोंका इन सिद्धान्तोंके साथ सम्बन्ध भी हमें दिखलानेकी आवश्यकता है। इतना समझाने पर प्रत्येक सद्बुद्धि वाला शिक्षित मुसलमान स्वयं ही हिन्दू बन जाएगा। मुसलमानोंमें दूसरे प्रकारके लोग हैं बड़े बड़े मौलवी। ये लोग संख्यामें बहुत थोड़े हैं, परन्तु इनका प्रभाव साधारण मुसलमानों पर बहुत होता है। यदि किसी प्रदेशमें पाँच-दश ही बड़े मौलवी हिन्दू बन जाएं तो उस देशके अधिकांश मुसलमान इनका अनुकरण करेंगे। ये मौलवी अनेक प्रकारके मन्त्र तन्त्र आदि तथा कुछ मुसलमानी रंगमें रंगे हुए योगके अभ्यासोंमें भी प्रायः प्रवीण होते हैं। किसी किसीके पास थोड़ी बहुत सिद्धि भी होती है। अतः इन लोगोंको केवल शब्दों द्वारा वश नहीं किया जा सकता। इनको तो वही महापुरुष वश कर सकता है जिसको आत्मज्ञानका कुछ अनुभव हो और जिसके पास कुछ सिद्धि भी हो, तथा जिसमें अनुग्रह तथा निग्रह शक्ति भी थोड़ी बहुत हो। अतः यह काम हमारे कोई अनुभवी महात्मा ही कर सकते हैं। अनुभवहीन केवल पण्डितका यह काम नहीं। परन्तु अनुभवी महात्माओंकी प्रायः इस ओर प्रवृत्ति ही नहीं होती। अतः पण्डित लोगोंका यह कर्तव्य है कि अनुभवी महात्माओंका अन्वेषण करके उन्हें अपनी भक्ति द्वारा इस कामको करनेके लिए प्रेरित करें। यही काम मुख्य काम है। इस कार्यसे प्रत्येक श्रेणी के मुसलमानोंको वश किया जा सकता है। इस प्रकार से मुसलमानोंको हिन्दू बनानेमें महात्माके महात्मापनमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं आ सकती। क्योंकि इस प्रबन्धसे मुसलमान धर्मभ्रष्ट कभी नहीं होंगे, वे तो उल्टा धर्ममें उन्नति करेंगे। धर्मकी निचली पौड़ियों से वे ऊपरकी पौड़ियों पर चढ़ जाएंगे। इस प्रकारसे यह मुसलमानोंके लिए बड़ा भारी उपकार होगा। तीसरे प्रकारके मुसलमान हैं अशिक्षित साधारण जनताके मुसलमान। ये लोग प्रायः अन्ध श्रद्धावाले होते हैं। यदि इनके बड़े मौलवी हिन्दू बन जायें तो पश्चात् साधारण खेचरी त्राटक आदिको जाननेवाला

अभ्यासी भी इनको वश कर सकता है।

ऊपर कही हुई बातोंसे यह स्पष्ट हो गया कि अखण्ड-भारत प्रेमियोंको समस्त भारतवासियोंको भारतीयधर्मानुयायी बनाना होगा। भारतीयधर्मके प्रचारके लिए उन्हें अनुभवी महात्माओंकी उपासना करनी होगी। उनके अनुग्रहसे शक्तिमान् बनकर मुसलमानोंको वास्तविक धर्मका सदुपदेश करना होगा। यह उपदेश वे सम्भवतः हिन्दूरूपमें रहकर कर नहीं सकते। क्योंकि मुसलमानोंके अनेकों मौलवी हिन्दूके साथ वादविवाद करनेके लिए अभी भी प्रस्तुत नहीं होते। अतः हिन्दुत्वके चिह्नोंको छिपाकर मुसलमानोंमें रहकर यह काम किया जा सकता है। मुसलमानोंमें रहकर प्रचारकको केवल फलाहारी अथवा स्वयंपाकी बनना पड़ेगा। अन्यथा वह स्वधर्म-रक्षा नहीं कर सकेगा। प्रचारकने यह कभी नहीं कहना होगा कि इसलामको छोड़कर हिन्दू बन जाओ। उसने तो मुसलमानको मुसलमान रहते हुए ही मुसलमानी भाषामें ही सद्धर्मोपदेश करना होगा। ज्यों-ज्यों सद्धर्म द्वारा मुसलमानको कल्याण प्राप्त होने लगेगा, त्यों-त्यों इसमें उसकी प्रवृत्ति बढ़ती जायगी और धीरे-धीरे वह स्वयं ही पूर्णतया हिन्दू बन जाएगा। हमने पाँचवर्ष पूर्व गुलमरग (काश्मीर) में एक सन्यासी महात्माको देखा है जो मुसलमानोंको भी अजपाका उपदेश करते थे। उन्हें वे "सोऽहम्" मन्त्रके स्थान पर "अल्लाहू" का मन्त्र देकर अजपा सिखाते थे। इस कामको सफल बनानेके लिए हमें फारसी, अरबी, पंजाबी, बंगाली, पश्तो, सिन्धी तथा बलोची भाषाओंमें साधारण दार्शनिक विषयों पर छोटे-छोटे ग्रन्थ भी लिखने होंगे, जिससे कि सद्धर्मके प्रचारमें सौकर्य हो। ऐसे-ऐसे प्रयत्नोंसे ही भारतके मुसलमानोंका वास्तविक कल्याण होगा और अखण्डभारतवर्ष एक बड़ा शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा। क्योंकि राष्ट्र तभी शक्तिशाली बन सकता है जब राष्ट्रके सभी निवासी उन्नत हो जाएं। यदि भारतवर्षके आठ करोड़ निवासी अध्यात्म क्षेत्रमें उन्नति न कर सकें तो भारतकी उन्नतिमें भी त्रुटि रह जायगी।

बन्धमोक्ष रहस्य

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री बी० ए०]

मोक्ष किसे कहते हैं और बन्धन क्या है, इस विषयमें कभी कभी हम 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा पाठकोंकी सेवा करनेका प्रयत्न यथाशक्ति करते ही हैं। आज अपने शब्दोंको छोड़ कर एक ऐसे ब्रह्मज्ञानी महात्मा के शब्दोंसे इस विषय पर प्रकाश डाला जाएगा जिनको जीवनमें ही मोक्षकी प्राप्ति हुई थी, अतः जो बन्धन और मोक्षके रहस्यको अनुभवमें ला चुके थे। इस कारण इनके शब्दोंमें शतप्रतिशत प्रामाण्य अवश्य मानना पड़ेगा। वे महात्मा हैं "ईश्वरप्रत्यभिज्ञा" आदि प्रसिद्ध दर्शनग्रन्थोंके कर्ता, काश्मीरदेशीय भगवान् उत्पलदेव आचार्य। बन्धमोक्ष विषय में उनका अनुभूत सिद्धान्त यह है:—

तैस्तैरप्युपयाचितैरुपनतस्तन्व्याः स्थितोऽप्यन्तिके
कान्तो लोकसमान एवमपरिज्ञातो न रन्तुं यथा।
लोकस्यैष तथानवेक्षितगुणः स्वात्मापि विश्वेश्वरो
नैवालं निजवैभवाय तदियं तत्प्रत्यभिज्ञोदिता॥

अनेक पाठकोंने महाकवि कालिदासका कुमारसम्भव तो अवश्य पढ़ा होगा। उसके पञ्चमसर्ग के अन्तको स्मरण कीजिये। त्रिपुरसुन्दरी भगवती पार्वती वर रूपमें महादेवकी प्राप्तिके लिए घोर तपस्या कर रही हैं। (तैस्तैः) अनेक प्रकारोंसे भगवान्‌को (उपयाचितैः) मिलनेकी प्रार्थनाएं कर रही हैं। अन्तमें महादेवका हृदय दयार्द्र हो जाता है और वे (उपनतः) प्राप्त हो जाते हैं। अर्थात् पार्वतीके पास आजाते हैं और (तन्व्याः स्थितोऽप्यन्तिके) त्रिपुरसुन्दरीके समीप ब्रह्मचारीके रूपमें खड़े हो जाते हैं। परन्तु पार्वती उनको (अपरिज्ञातः) नहीं पहचान सकती हैं। क्योंकि उनको वह (लोक समानः) साधारण ब्रह्मचारी के समान ही प्रतीत होते हैं। इस कारण पार्वतीको अपने कान्तके प्राप्त होने पर भी न पहचाननेके कारण विप्रलम्भकी अवस्था बढ़ती ही जाती है। (न रन्तुम् अलम्) प्रिय समागमके सुख को वह अनुभव नहीं कर सकती हैं। ठीक उसी प्रकार से लोग मोक्ष तो चाहते हैं। अर्थात् आत्मज्ञान द्वारा विश्वेश्वर बनना चाहते हैं और इसके लिए अनेक प्रयत्न करते रहते हैं। परन्तु जिस परमेश्वर को वे ढूंढते हैं, वह तो उनका स्वात्मा अर्थात् अपना आत्मा ही है, जो कि विश्वका ईश्वर है। परन्तु (अनवेक्षित गुणः) उस आत्माके सर्वज्ञत्व सर्वकर्तृत्व सर्वशक्तिमत्व पूर्णस्वतन्त्रत्व आदि गुणोंको वे जानते नहीं। अर्थात् अपनी आत्माको पहचानते नहीं। न पहचानने हीके कारण तपस्विनी पार्वतीकी भांति परम आनन्दकी निधिके पास होते हुए भी उस आनन्दका अनुभव नहीं कर सकते। प्रत्युत अनन्त दुःखोंके जालोंमें फंसे रहते हैं। इसी कारण भगवान् उत्पलदेव कहते हैं कि हमने यह प्रत्यभिज्ञा अर्थात् ईश्वरप्रत्यभिज्ञा नामक दर्शनग्रन्थ कहा।

श्लोकका पदशः अर्थ तो हमने कहा नहीं। परन्तु दृष्टान्त सहित इतने व्याख्यानसे सारा अर्थ स्पष्ट हो गया है। इस उपदेशमें यही प्रतिपादित है कि प्रत्यभिज्ञा अर्थात् अपने सच्चे स्वरूपको पहचानना ही मोक्ष है और इसको न पहचानना ही बन्धन है। न पहचानने हीके कारण हम बन्धनमें पड़ कर अनन्त दुःखोंको भोग रहे हैं। यदि एक बार भी हम वस्तुतः अनुभव करें कि हम वास्तवमें कौन हैं तो सदाके लिए मुक्त हो जाएंगे। मुक्त क्या हो जाएंगे? मुक्त होते हुए ही अपने मुक्तस्वभावको केवल समझ कर स्वयं कल्पित बन्धनसे छूट जायेंगे। छूटना भी विचित्र ही है। संसार तो उस समय भी रहेगा। शरीर इन्द्रिय प्राण आदि उस समय भी रहेंगे। परन्तु भेद केवल इतना है कि हम इस समय अपने आपको बन्धनोंके अधीन समझ रहे हैं, परन्तु प्रत्यभिज्ञा

सच्चा सुख

[लेखक— श्री पं० अम्बाप्रसादजी शुक्ल]

हम विषयभोगोंमें इतने आसक्त हैं कि उनसे सदा दुःख और क्लेशका अनुभव होते हुए भी हमारा विषय प्रेम किसी भांति भी न्यून नहीं होता। सुखके लालची होकर हम विषयप्रेमको ही सुख मान लेते हैं, परन्तु उससे हम सच्चे सुखका मुख भी नहीं देख पाते। भारतके प्राचीन ऋषियों मुनियों और महापुरुषोंने यह अनुभव किया था कि विषयविकारोंको छोड़ना ही परमसुखकी सामग्री है। हम सर्वदा सुखके लिये ही प्रयास करते हैं; परन्तु इस बातको न जान कर कि सुख किस प्रकार प्राप्त किया जावे और इसका वास्तविक रूप क्या है; व्यर्थ विषय-वासनाकी ओर दौड़ते रहते हैं। परिणाम इसका यह होता है कि हम और भी दुःख-सागरमें डूब जाते हैं। प्यासा मृग जिस भांति रेतके ढेरको चमकता देख देख कर थक कर अन्तमें प्राण तोड़ देता है। ठीक मृगतृष्णाकी भांति हम भी लक्ष्य मार्गसे इधर ही अपनी आयुका अन्त कर लेते हैं। परन्तु परम-सुख क्या वस्तु है इसे नहीं समझ पाते। कल निर्धन थे आज धनवान् हो गये किन्तु सुख न मिला। धीरे धीरे और धनी हो गये। ऐसी ही असीम वासनाएं उत्पन्न होती रहती हैं। मैं राजा हो जाऊं, मैं बहुत बलवान् हो जाऊं, मुझे सर्वसुखोंकी सामग्री मिल जावे, जिधरसे निकल जाऊं मनुष्योंके माथे स्वयं झुक जावें, जहाँ जाऊं मान पाऊं, सुन्दर सुन्दर मोटरें मेरे पास हों, ऐसी समस्त वासनाएं हैं जो हमें सर्वदा फंसाए रखने में सामर्थ्यवान् हैं। परन्तु हम हैं कि इन्हीं वस्तुओं में परमसुख समझे बैठे हैं। वास्तवमें यह पूर्ण सामग्री पा लेने पर भी हमें परमसुखकी प्राप्ति नहीं हो सकती, फिर भी हम अधीर और खोये खोयेसे और अप्रसन्न रहेंगे। अन्तमें ऐसा क्यों? क्योंकि यह सच्चा सुख नहीं, सच्चे सुखका तो इनसे नाम मात्र भी सम्बन्ध नहीं। वह तो और ही वस्तु है जो इनसे बहुत ही परे है, दूर है।

कुछ थोड़ा विचार कर देखो कि एक लखपति सेठ पहिले निर्धन था, आज अपने धनको और अधिक बढ़ानेका क्यों प्रयत्न करता है? क्या वह सोच नहीं सकता कि इतना ही पर्याप्त है। एक साधारण क्लर्क जो आज बड़ा भारी अधिकारी बन कर बड़े बड़े अधिकार प्राप्त किये बैठा है, क्यों अपनी और विशेष उन्नतिके लिए दुःखी है? इन बातोंका एक ही उत्तर है कि हम सब मनुष्य अपने अपने सुखके लिए परस्पर दौड़ लगा रहे हैं। परन्तु यह नहीं सोचते कि हम जिधर दौड़ रहे हैं उस दिशामें परमसुखका मार्ग नहीं।

इसके लिए हमें चाहिए कि किसी एक महापुरुष या महात्मासे जाकर सम्मति लें। जो परमसुखके मार्गसे भलीभांति परिचित हो। ऐसी पुस्तकोंका अध्ययन करें जिन पर परमसुखमार्गके चित्र खिंचे हों। हमारे लिये भगवान्ने जो विधान किया है उसी में हमें सन्तुष्ट रहना चाहिये। कभी किसी दुःख या असफलतासे असन्तुष्टता प्रकट न करें। दुःख क्लेश कुछ ही सम्मुख आए, व्यथित न हों। विचार वैराग्य धैर्य और शान्तिसे काम लें। जो इस प्रकार विचारवान् रहते हैं उन्हें सुखदुःख नहीं सताते। जो कुछ होता है वह ईश्वरकी इच्छासे होता है और ठीक ही होता है यही कह कर मेरे गुरु मुझे बिलकुल शान्त कर देते हैं — जब मैं किसी घटनासे दुःखित होकर शान्ति प्राप्त करनेके लिये उनके चरणोंमें जाता हूँ।

होते ही सभी बन्धन हमें अपने ही कल्पित विलासरूपमें प्रतीत होंगे। वे ही हमारे अधीन दिखाई पड़ेंगे। जैसे कि जब भारतवर्ष स्वतन्त्र होगा उस समय भी अनेक अंग्रेज आदि यहाँ रहेंगे, परन्तु भेद केवल इतना ही होगा कि इस समय वे स्वामी और भारत उनके अधीन दिखाई पड़ता है, परन्तु स्वातन्त्र्य के समय भारत स्वतन्त्र और वे लोग उसीकी प्रजाके रूपमें रहेंगे। इस प्रकारसे आलङ्कारिक रीत्यनुसार ग्रन्थकारने अत्यन्त सुन्दर तथा सुगम रीतिसे प्रत्यभिज्ञारूपी मोक्षका स्वरूप बता दिया।

वेदस्वरूपनिरूपण

[लेखक—विद्याभूषण विद्यावागीश विद्यानिधि श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत]

—[गताङ्कसे आगे]—

जब पाणिनिको मन्त्रभाग एवं ब्राह्मणभाग दोनों में ही कार्य करना अभीष्ट होता है; तब वह 'मन्त्रे' अथवा 'ब्राह्मणे' पृथक्-पृथक् न कह कर 'छन्दसि' कहता है। जैसेकि— 'चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि' २।३।६२ यहाँ पर 'छन्दसि' कहा गया है। इसीलिए ही महाभाष्यमें इस सूत्रके उदाहरणमें 'या खर्वेण पिबति तस्यै खर्वः' इस ब्राह्मणभागका उदाहरण भी दिया जा सका है।

इसी प्रकार पाणिनि केवल मन्त्रभागको भी कहीं 'छन्दः' कहता है, जैसे कि—'छन्दो-ब्राह्मणानि च तद्विषयाणि' ४।२।६ यहाँ पर 'छन्दः' शब्दसे केवल मन्त्रभागका ग्रहण अभिप्रेत है। यहाँ पर वही पहला कहा हुआ न्याय चरितार्थ किया गया है कि— 'समुदायेषु हि वृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्ते' अर्थात् समुदायवाचक शब्द कहीं कहीं अवयवपरक भी प्रयुक्त किये जाते हैं'। इसी प्रकारका अन्य उदाहरण भी देखिये— 'एवमिमे सर्वे वेदा निर्मिता ·······सब्राह्मणाः' १।२।१० इस गोपथब्राह्मणके प्रमाण में ब्राह्मणभागके पृथक् कहनेसे 'वेद' शब्द यहाँ पर मन्त्रभागमात्र (११३१ शाखा) का वाचक है।

पूर्व शैलीसे ही पाणिनि कहीं पर केवल ब्राह्मण-भागको भी 'छन्दः' शब्दसे कहता है। जैसे कि— 'जुष्टाऽर्पिते च छन्दसि' ६।१।२०६ इस सूत्रमें पाणिनिने जुष्ट शब्दको 'वेद' में विकल्पसे आद्युदात्त स्वर कहा है। फिर 'नित्यं मन्त्रे' ६।१।२१० इस साथ वाले सूत्रमें 'मन्त्रभाग' में जुष्ट शब्दको नित्य आद्युदात्तका विधान माना है। इस 'मन्त्रभाग' के लिये पृथक् सूत्र निर्म्माणसे सिद्ध है कि इससे पूर्व सूत्रमें 'छन्दः (वेद)' शब्द ब्राह्मणभागके लिए रक्खा गया है।

इसी प्रकार 'मन्त्रे श्वेतवह' ३।२।७१ इससे मन्त्र-भागकी अनुवृत्ति आ रही होने पर भी 'विजुपे छन्दसि' ३।२।७३ इस साथ वाले सूत्र में 'छन्द (वेद)' का ग्रहण केवल ब्राह्मणभागका बोधक है, इसीलिये ही काशिकामें उक्त सूत्रकी वृत्तिमें कहा गया है— 'छन्दो-ग्रहणं ब्राह्मणार्थम्'।

इसमें कारण क्या? कारण यही है कि– वेद शब्द हो अथवा छन्दः शब्द हो, किंवा उसका पर्याय-वाचक निगम आम्नाय आदि शब्द हो; यह सब समुदायवाचक शब्द हैं। परन्तु समुदायवाचक शब्द अवयववाचक भी हुआ करता है। इसीलिये ही महाभाष्यके पस्पशाह्निकमें श्रीपतञ्जलिजीने कहा है— 'समुदायेषु हि वृत्ताः शब्दा अवयवेष्वपि वर्तन्ते, पूर्वे पञ्चालाः, उत्तरे पञ्चालाः; घृतं भुक्तम्, तैलं भुक्तम्, घृत शब्द समुदायवाचक है; पर 'घृतं भुक्तम्' इस वाक्यमें वह अवयववाचक है, नहीं तो सारे संसार का घी खाजाना मानना पड़ेगा। अब यह कहने वालेकी इच्छा पर अवलम्बित है कि– वह समुदाय-वाचक शब्दको अवयव-परक रक्खे, अथवा समुदायपरक।

तब जो आजकल तत्तद् वेदकी एक-एक शाखा को उस उस वेदके नामसे कहा जाता है, वह उक्त न्यायसे जानना चाहिये। वास्तवमें उसे उस वेद की शाखा ही मानना चाहिये। पाणिनि 'मन्त्रे' कहकर वा 'छन्दसि' कहकर जिस विधिको मन्त्र-भागात्मक वेदमें करता है, वह विधि केवल आर्यसमाज सीमित चार पुस्तकोंमें नहीं होती; किन्तु अन्य शाखाओंमें भी हुआ करती है। इसका उदाहरण देखिये—

'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेपि' ६।४।७५ यहाँ पर

माङ् के योगमें अट् के अनिषेधका उदाहरण 'मा वः क्षेत्रे परे बीजान्यवाप्सुः' दिया गया है। पर यह आर्यसमाज सीमित वेदमें नहीं, किन्तु भिन्नशाखा वा ब्राह्मणमें है॥ 'छन्दसि गत्यर्थेभ्यः' ३।३।१२६ यहाँ पर वेदका उदाहरण 'सुवेदनामकृणोद् ब्रह्मणे गाम्' दिया गया है, परन्तु यह उदाहरण स्वा० दयानन्दाभीष्ट वेदमें नहीं, किन्तु ब्राह्मणभागमें है। वेदाङ्गप्रकाशके ३१२ पृष्ठमें स्वा० दयानन्दने 'बहुलं छन्दसि' ३।२।८८ इस वैदिकसूत्रका उदाहरण 'मातृहा सप्तमं नरकं प्रविशेत्' दिया है, पर वह तत्सम्मत वेद में नहीं; किन्तु शाखान्तर वा ब्राह्मणभागका है।

जब पाणिनि सब वेदोंमें विधि नहीं करना चाहता, किन्तु वेदके किसी भेदमें; तब वहाँ पर 'छन्दसि' इस प्रकार सामान्यरूपसे न कह कर 'ऋचि' 'यजुषि' इत्यादि पढ़ा करता है। जैसा कि— 'ऋचि तुनुघ' ६।३।१३३ इस सूत्रमें यद्यपि 'मन्त्रे सोमाश्व' ६।३।१३३ इस सूत्रसे 'मन्त्रे' की अनुवृत्ति आ रही है; तथापि यहाँ पर 'ऋचि' कहनेसे यह कार्य (दीर्घ) मन्त्रभागकी सभी शाखाओंमें न होकर ऋग्वेदमात्रकी सभी (२१) शाखाओंमें होगा। 'यजुष्युरः' ६।१।११७ यहाँ पर 'यजुषि' का ग्रहण है, तब यह प्रकृतिभाव चारों वेदोंकी सभी शाखाओंमें नहीं होगा, किन्तु यजुर्वेदकी सभी (१०१) शाखाओंमें होगा।

परन्तु जब पाणिनि उस-उस वेदकी सभी शाखाओंमें उस-उस विधिको नहीं करना चाहता; किन्तु किसी वेदकी खास शाखामें ही उस विधिको करना चाहता है तब केवल वेदका नाम न लेकर उसकी उस शाखाका भी ग्रहण करता है। जैसे कि—'देवसुम्नयोर्यजुषि काठके' ७।४।३८ यहाँ पर 'यजुषि' के साथ 'काठके' शब्द कहनेसे देव और सुम्न शब्दको क्यच् परे होने पर आत्व कृष्णयजुर्वेदीय काठकसंहितामें ही होगा, न शुक्लयजुर्वेदकी शाखाओंमें होगा, न ही कृष्णयजुर्वेदीय अन्य शाखाओंमें होगा।

इसी प्रकार वैदिक प्रक्रियामें 'मन्त्रे' अथवा 'छन्दसि' कह कर उदाहरण दिये गये हैं; उनमें कई कृष्णयजुर्वेदके हैं, जैसे कि—'तप्तनप्' ७।१।४५ इस सूत्रका उदाहरण 'शृणोत ग्रावाणः' यह कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीयसंहिताका है, जहाँ इस स्थलमें पाणिनिने इसे वेद माना है; वहाँ महाभाष्यकर पतञ्जलिने भी इसे ३।१।७ सूत्र में वेद (ऋषि) माना है। इससे विरुद्ध मत रखनेवाले आधुनिक इससे निरस्त हो गये। इसी प्रकार 'अश्वाघस्यात्' ७।४।३७ 'छन्दसि परेचत्यां क्यच-उपसंख्यानम्' इसका उदाहरण 'मा त्वा वृका अघायवः' तै० सं० १।२।६ (१) कृष्णयजुर्वेदमें मिलता है। इसी प्रकार 'छन्दसि शायजपि' ३।१।८४ का उदाहरण 'शस्यमानं गृभाय' तैत्ति० सं० १।२।३ (६) कृष्णयजुर्वेदमें मिलता है।

कई वैदिक प्रक्रियाके उदाहरण स्वा० दयानन्दाभीष्ट चार-वेद-ग्रन्थोंसे अतिरिक्त शाखाओंके हैं, जिसका दिग्दर्शन पहले हो चुका है। कई वहाँके उदाहरण ब्राह्मण भागके भी हैं, जैसे कि —'छन्दसि निष्टर्क्य' ३।१।१२३ इस सूत्रका उदाहरण 'निष्टर्क्यं चिन्वीत पशुकामः' 'भावलक्षणे जनिभ्यस्तोसुन्' ३।४।६ इस वैदिकसूत्रका उदाहरण 'काममाविजनितोः सम्भवाम' 'तृतीया च होश्छन्दसि' २।३।३ इस सूत्रका वैदिक उदाहरण 'यवाग्वाऽग्निहोत्रं जुहोति' ये सभी उदाहरण ब्राह्मणभागके हैं; आर्यसमाज सीमित वेदके नहीं। 'तुग्राद्घन्' ४।४।११५ इस सूत्रका उदाहरण 'तुग्रियाः' किसी अन्य शाखाका है।

इस प्रकार निरुक्तमें दिये गये निगम भी कई वर्तमान प्रचलित शाखाओंसे भिन्न शाखाओंके हैं, कई ब्राह्मणभागके हैं — यह बात डा० श्रीलक्ष्मणस्वरूप एम. ए. डी. फिल (आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी) प्रिन्सिपल ओरियण्टल कालेज लाहौरसे 'ओरियण्टल कालेज मेगज़ीन' में प्रकाशित निरुक्त सूचीमें स्पष्ट है।

इस प्रकार सिद्ध हुआ कि — वर्तमानमें मिलनेवाले ऋग्वेदसंहिता, यजुर्वेदसंहिता, सामवेदसंहिता,

अथर्ववेदसंहिता ही केवल ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद नहीं है, प्रत्युत ऋग्वेदकी सभी इकीस शाखाएं ऋग्वेद हैं। पृथक्-पृथक् उनके भिन्न-भिन्न नाम शाकल्यसंहिता, बाष्कलसंहिता, आश्वलायनसंहिता, शाङ्खायनसंहिता, बह्वृचसंहिता' आदि भी हैं। उतने ही 'ब्राह्मण' भी ऋग्वेद शब्दसे गृहीत हो जाते हैं। पृथक्-पृथक् उनके नाम ऐतरेय शाङ्खायन आदि भी हैं।

इसी भांति यजुर्वेदकी वाजसनेयीसंहिता, काण्वसंहिता आदि पन्द्रह शुक्ल शाखाएं, तैत्तिरीयसंहिता, काठकसंहिता, मैत्रायणीसंहिता आदि ८६ कृष्णशाखाएं, सब १०१ शाखाएं यजुर्वेद है। पृथक्-पृथक् उनके उक्त भिन्न-भिन्न नाम भी हैं। उतने ब्राह्मण भी यजुर्वेद शब्दसे गृहीत हो जाते हैं। पृथक् उनके शुक्लशाखाओंमें शतपथ आदि नाम हैं, और कृष्णशाखाओंमें तैत्तिरीय आदि।

इसी प्रकार सामवेदकी कौथुमीसंहिता, राणायनीयसंहिता, औपमन्यवसंहिता आदि सभी एक सहस्र शाखाएं सामवेद हैं। पृथक्-पृथक् उनके पूर्व कहे नाम भी हैं। उतने ही ब्राह्मण भी सामवेद में गृहीत हो जाते हैं, क्योंकि वेद मन्त्रब्राह्मणात्मक हुआ करता है। उनके पृथक्-पृथक् ताण्ड्य, छान्दोग्य, दैवत, षड्विंशादि नाम भी हैं। ब्राह्मणभागके ही अन्तर्गत आरण्यक उपनिषद् भी माने जाते हैं, तभी तो निरुक्तमें यास्कने २।३।१ स्थलमें 'यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चित्' इस कृष्णयजुर्वेदीय ब्राह्मणान्तर्गत श्वेताश्वतरोपनिषत्की कण्डिकाको भी 'इत्यपि निगमो भवति' शब्दसे वेदप्रमाण माना है।

इसी तरह अथर्ववेदकी शौनकसंहिता, पैप्पलादसंहिता, जाजलसंहिता आदि सभी नौ शाखाएं मिलकर अथर्ववेद होता है। पृथक् पृथक् उनके उक्त नाम भी हैं। उतने ही उसके ब्राह्मण भी उसमें गृहीत हो जाते हैं। पृथक् पृथक् उनके नाम गोपथ आदि हैं। इतना वैदिक साहित्य है। इन सभी शाखाओंके कल्पसूत्र (श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र) भी हैं, जिनमें उक्त शाखास्थमन्त्रोंके तत्तत्कर्मविशेषमें विनियोग बताये गये हैं। इसी वैदिक साहित्यको पढ़नेके लिए प्राचीन समयमें ४८ वर्षका ब्रह्मचर्य रखा जाता था। चारशाखामात्र वेद माना जावे; वह तो थोड़े ही समयमें समाप्त हो सकता है। इसलिए स्पष्ट है कि सभी शाखाएं एवं सभी ब्राह्मण वेद हैं। परन्तु समयके हेरफेरसे इसमें पर्याप्त भाग लुप्त हो चुका है।

ऋग्वेदकी शाकल्यसंहिता तो वर्तमानमें मिल रही है, परन्तु उसका ब्राह्मण लुप्त है। उसकी आश्वलायनीसंहिता तो लुप्त है, परन्तु उसका ब्राह्मण ऐतरेय मिलता है। ऋग्वेदकी शाङ्खायनी संहिता तो लुप्त है, परन्तु उसका शाङ्खायन ब्राह्मण मिलता है। इसी प्रकार लुप्तशाखाओंके मध्यमें बाष्कलसंहिताके कई मन्त्र कई यज्ञपद्धतियोंमें मिलते हैं, अन्य शाखा और ब्राह्मण लुप्त हैं।

यजुर्वेदमें शुक्लकी वाजसनेयी तथा काण्वसंहिताएं मिलती ही हैं, उनके पृथक् पृथक् शतपथ ब्राह्मण भी मिलते हैं; अन्य संहिताएं तथा ब्राह्मण लुप्त हैं। कृष्णयजुर्वेदकी तैत्तिरीयसंहिता एवं तैत्तिरीयब्राह्मण मिलते हैं। काठकसंहिता और मैत्रायणीसंहिता कुछ समय हुआ मिली हैं, अन्य शाखाएं वा ब्राह्मण लुप्त हैं।

सामवेदकी कौथुमीसंहिता सुलभ है; उसके ताण्ड्य एवं छान्दोग्यादि ब्राह्मण भी मिलते हैं। राणायनीयसंहिता कर्णाटक आदि दक्षिणापथमें विद्यमान है, परन्तु उसका ब्राह्मण लुप्त है। अवशिष्ट संहिताएं वा ब्राह्मण नहीं मिलते।

अथर्ववेदकी शौनकसंहिता तो सुलभ ही है, परन्तु उसका ब्राह्मण लुप्त है। उसकी पैप्पलादसंहिता अब मिली है; उसका गोपथब्राह्मण सुलभ है। अन्य शाखाएं वा ब्राह्मण लुप्त हैं। मुक्तिकोपनिषद्में लिखा है—'एकैकस्यास्तु शाखाया एकैकोपनिषन्मता'

तब उपनिषदें भी ११३१ होनी चाहियें। (स्वा० दयानन्दजीने काण्वशाखान्तर्गत ईशोपनिषद्को वेद माना है।) आजकल १०८ उपनिषदें मिलती हैं; पर उनमें बहुतोंका यह पता नहीं चलता कि- वे किस वेदकी किस शाखाकी है। इसी प्रकार कई शाखाओंके सूत्रग्रन्थ तो मिलते हैं, उनमें उस-उस शाखाके मन्त्र हैं; परन्तु शाखाएं लुप्त हैं। कई शाखा तो मिलती हैं; परन्तु उनके सूत्र ग्रन्थ लुप्त हैं।

फलतः 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' मनुस्मृति० २।६ इसमें जो सारा वेद धर्मका मूल माना गया है, वह यही है जिसका वर्णन हमने प्रकृतनिबन्धमें किया है। आशा है आज तक पाठक जो इस भ्रान्तिमें रहे हैं कि वर्तमानमें मिलनेवाले चार संहिता-ग्रन्थ ही चार वेद हैं, यह भ्रांति दूर हो गई होगी। यह तो चार वेदोंकी एक-एक शाखा है; न कि सम्पूर्ण वेद। जो आधुनिक लोग उक्त मतका प्रचार करते हैं, उनका पक्ष सर्वथा निर्मूल है। आशा की जाती है कि विद्वान् पाठकगण भी इस विषयमें गवेषणा की रुचि रक्खेंगे।

अन्तमें निवेदन

आशा है विद्वान् पाठकोंने हमारे इस निबन्धका मनोयोगसे अध्ययन किया होगा, तथा निश्चित परिणाम पर पहुँचनेका प्रयास भी किया होगा। 'श्रीस्वाध्याय' के सुयोग्य सम्पादक महोदयने अपनी स्वाभाविक उदारतावश प्रतिपक्षको भी इस विषय पर विचारका अवसर दिया है, यह बात सर्वथा उपयुक्त है। परन्तु इस पर निवेदन यह है कि यह निबन्ध अभी अपने सर्वांशका एक भाग है, अभी इसका दूसरा भाग अवशिष्ट है। उसके प्रकाशित हो जाने पर तब उस पर प्रतिपक्ष विचार भी सर्वथा उपयुक्त तथा सुविधाजनक होगा। इसमें कुछ विस्तार तथा विषयगम्भीरतामूलक दुरूहता अनिवार्य है; पर यह है 'श्रीस्वाध्याय' का अपना विषय ही। उसके धर्म-स्तम्भका प्रथम विषय ही 'वेदोंका स्वाध्याय' है। तो जब तक वेदस्वरूप पर निश्चय नहीं हो जाता, तबतक उस विषयमें निश्चित निबन्ध ही नहीं लिखे जा सकते। अतएव इसका अग्रिम अंश शेष-पूरक होगा। उसके बाद प्रतिपक्षको भी उस पर विचार करनेका पूर्ण अधिकार है। आशा है विज्ञ पाठकगण इस विचारको पसन्द करेंगे। यदि इस विषयमें उन्हें कोई त्रुटि अनुभूत हुई हो, तो वे मुझे सूचना देकर अनुगृहीत करेंगे।

सनातनधर्मकी महत्ता

[लेखक--श्री पं० रामनारायण जी मिश्र विशारद]

संसारमें जितने धर्म प्रचलित हैं, सनातनधर्म उन सबसे प्राचीनतम है। जैसा कि उसके नामसे ही प्रकट है। अर्थात् सनातन सदातन या सदैव रहने वाला।

इस धर्म पर सैकड़ों नहीं, हजारों आक्रमण हुए और आज भी हो रहे हैं। यहाँ तक कि अब तो कोई-कोई आधुनिक सभ्यताके अन्धभक्त इसे 'सड़ातन' कहकर खिल्ली उड़ानेमें ही अपना गौरव समझते हैं। ऐसे लोगोंकी बुद्धि पर बलिहारी है, और क्या कहें।

इतना सब कुछ होते हुए भी यह धर्म अद्यापि जीवित है और इसकी सत्ता विश्वव्यापिनी हो रही है। यही इसके सत्य और महान् होनेका ज्वलन्त प्रमाण है। विज्ञान-भास्करकी किरणें संसारसे ज्यों-ज्यों अपना आलोक सुविकीर्ण करती जाएंगी, त्यों-त्यों यह धर्म मानव-हृदय पर अपनी सत्ता और महत्ताकी छाप लगाता जायगा और एक दिन वह आएगा जब सारा संसार स्वयं इससे अभिभूत होगा और इसी धर्मको मानवसमाजके लिए सबसे

अधिक उपयोगी और सर्वोपरि निःश्रेयस्कर समझेगा।

आज हम सनातनधर्मके कुछ ऐसे मोटे-मोटे सिद्धान्त, जिन्हें प्रायः अपढ़ जनता भी नित्यप्रति व्यवहारमें लाती है, एवं जिनको हम गौण तथा हमारे विपक्षी ढोंग समझते हैं, पाठकोंके समक्ष उपस्थित करके तद्विषयक वैज्ञानिक विवेचन करने का प्रयत्न करेंगे।

१. घरमें तुलसीका वृक्ष लगाना

आजकलके डाक्टरोंने इस बातको मान लिया है कि तुलसीके पौदेमें विषैले और घातक कीटाणुओंको मारनेकी अद्‌भुत शक्ति है। मलेरियाके कीड़ोंको मारनेके लिये तो यह साक्षात् कृतान्तके समान ही है। इसके अतिरिक्त घरमें तुलसीके रहते हुए किसी स्त्रीको न तो असह्य प्रसव वेदना हो सकती है और न प्रसूत रोग ही।

इन्हीं लाभोंको दृष्टिमें रखकर हमारे धर्म-मन्दिरोंके अन्दर प्रातः सायं दोनों समय भगवान्‌के 'चरणामृत' और 'भोग' में तुलसीदलका अनिवार्य्य रूपसे डाला जाना धर्ममें सम्मिलित कर दिया गया है। हमारे अन्य बहुतेरे धार्मिक कृत्य भी प्रायः तुलसीदलके बिना सम्पन्न नहीं होते।

२. पीपलका वृक्ष

(क) घरमें इस वृक्षके लगानेका निषेध है। क्योंकि चूल्हे आदिकी आंचसे इसकी जड़ें गर्म हो जाती हैं। जड़ोंके तपनेसे इस वृक्षमें से एक प्रकार की विषैली गैस निकलती है, जो मनुष्योंके लिए प्राणघातक होती है। अनेकों कुटुम्ब घरमें पीपल होनेके कारण मिटते देखे हैं। इसीलिए तो हिंदुओं के यहाँ पीपल पर नित्य प्रति जल चढ़ाना धर्ममें प्रविष्ट कर दिया गया है।

(ख) पीपल पुत्रदाता है। इसी विश्वाससे अनेकों स्त्रियाँ पीपल पूजतीं और उसकी जड़ पर जल चढ़ाती हैं। यह ढोंग नहीं है, बल्कि इसमें बहुत कुछ मौलिकता सन्निहित है। अश्वत्थ या पीपलके सम्बन्ध में जो वेद-मन्त्र आए हैं, उन्हें आयुर्वेदिक दृष्टिसे पढ़ने पर ज्ञात होता है कि पीपलमें बन्ध्यत्व या बांझपन दूर करनेकी अपूर्व शक्ति है तथा इसका सदुपयोग नर-सन्तान उत्पन्न करनेमें विलक्षण गुण रखता है। फिर यदि इसे पुत्रदाता कहें तो आश्चर्य ही क्या है।

३. शङ्खध्वनि

हिन्दुओंके धर्म-मन्दिरोंमें दोनों सन्ध्याओंके समय प्रत्येक उत्सव और पर्व पर और धर्मकथाओं के अवसर पर शंख बजाना धर्ममें सन्निविष्ट कर दिया गया है। प्रोफेसर जगदीशचन्द्र बोसने अपने प्रयोगों द्वारा सिद्ध कर दिखाया है कि जहाँ तक शंखध्वनि पहुँचती है, वहाँ तक अनेकों रोगाणुगण स्वयं मर जाते हैं और वायु शुद्ध हो जाती है।

४. खड़ाऊं पहनना

धार्मिक दृष्टिसे पवित्र माना जाता है। यह भी विज्ञानसे खाली नहीं है। बात यह है कि खड़ाऊं पहने हुए मनुष्यके ऊपर बिजली नहीं गिरती। बिजलीके तारोंको जिनके छूनेसे मौत हो जाती है, खड़ाऊं पहने हुए हाथसे पकड़ा जा सकता है और उससे किसी प्रकारकी हानि पहुंचनेकी सम्भावना नहीं रहती।

५. कुशासन, मृगछाला और व्याघ्रचर्म

कुशासन पर बैठने और रेशमी-वस्त्र धारण करनेसे बिजली अपना प्रभाव नहीं कर सकती। कुशाके आसन पर बैठना और रेशमी वस्त्र पहनना भी हमारे धर्मके अन्दर सम्मिलित है। आज भी विद्युत् प्रवाहको बाहर निकालनेसे रोकनेके लिए तारों पर रेशम लपेटा जाता है। रक्षाबन्धनके पर्व पर रेशमी राखी हाथमें बांधना इसी अभिप्रायसे रक्खा गया था।

मृगचर्म और व्याघ्रचर्म पर बैठना भी पवित्र समझा गया है। मृगछाला पर बैठनेसे बवासीर भगन्दर इत्यादि नहीं होते। यदि हों तो दूर हो जाते हैं। व्याघ्रचर्म (बाघाम्बर) पर सांप और विषैले कीड़े नहीं चढ़ते। इसीलिये वानप्रस्थके लिए शरीसृपसंकुल-वनमें व्याघ्रचर्म पर बैठकर

हरि भजन करना बतलाया गया है। यह आसन रक्षक बनकर भगवद्भजनमें साहाय्य प्रदान करता है।

६. कड़वीतुम्बी और दरियाईनारियल

साधुओंके पास बहुधा तुम्बी और कमण्डलु होता है। जिन्हें उन्होंने अपने लिए परमपवित्र मान लिया है। बात यह है कि कड़वी-तुम्बी और दरियाई-नारियल दोनों ही में प्रत्येक प्रकारका विष दूर करनेकी विलक्षण शक्ति है।

७. रातको सोते समय सिरहाने पानी रखना

प्रत्येक मनुष्य सोते समय प्रायः बुरे-बुरे स्वप्न देखता है। रोगीको तो सर्वदा बुरे स्वप्न दिखाई देते हैं, परन्तु यदि सिरहाने किसी साफ बरतनमें पवित्र जल भर कर रख दिया जाय, तो दुःस्वप्न नहीं होते। पानी और मीठी नींदका घनिष्ठ वैज्ञानिक सम्बन्ध है। सारांश यह है कि सिरहाने पानी रखना दुःस्वप्न नाशक एक सस्ता अनुपान है।

८. गायका दूध बिना छाने नहीं पीना चहिए

हिन्दुओंका विश्वास है कि गायका रोवाँ या बाल पेटमें चला जाना महा पाप है। ठीक है। यह इसलिये रक्खा गया है कि किसी भी जानवरका बाल पेटमें जानेसे महा हानिकारक होता है। मुख्यतः गायके बालसे तो राजयक्ष्मा (तपेदिक) तकका हो जाना सम्भव है।

९. पृथ्वीके लात मारना पाप है

यह विश्वास भी बहुत पुराना है कि धरती माताके लात मारना पाप है। इसका तात्विक विवेचन यह है कि जमीन पर लात मारनेसे तलवोंमें चोट आ जाती है। इस चोटसे भी राजयक्ष्माकी उत्पत्ति हो सकती है।

१०. बच्चोंके गलेमें गण्डा और ताबीज पहनाना

दाँत जल्दी आने और कष्ट न होनेके लिए आजकल बच्चोंको बिजलीके फीते पहनाये जाते हैं। जिनमें बहुत-सा दाम व्यर्थ खर्च होता है। यह फीते और कुछ नहीं हैं, हमारे ही पुराने ताबीजोंके रूपान्तर हैं, जोकि तांबे और जस्तेके तारोंके अन्दर सरसोंके दाने आदि डालकर बनाये जाते हैं।

हमारे यहाँकी स्त्रियाँ कौड़ी, शेर और रीछ आदिके नख चांदी सोने या तांबेमें मढ़ाकर बालकों-को पहनाती थीं। पीली सरसोंकी पोटली बच्चोंके गलेमें लटका दी जाती थी और बचका एक टुकड़ा भी बांध देते थे। पीली सरसोंसे दांत आसानीसे निकल आते थे और बच बच्चोंको बुद्धिमान् बनाती थी। अफसोस! कि हम इस नवीन सभ्यताके चकाचौंधमें अपना घरेलू विज्ञान बिलकुल भूल गये और बात बातमें परमुखापेक्षी बन गये।

११. कुओं पर घीके दीपक जलाना

प्राचीनकालमें जो कुए बनते थे, उनमें पृथ्वीसे दो तीन बालिश्त नीचे एक ताक जरूर बना दिया जाता था। जिसमें धार्मिक हिन्दू घीका दीपक बड़ी श्रद्धाके साथ जलाकर रखा करते थे। इसमें क्या-क्या तत्त्व सन्निहित थे? सब जानते हैं कि बहुधा कुओंमें विषाक्त गैस उत्पन्न हो जाती है। और हमें उसका ज्ञान तब होता है, जब कई एक मनुष्य मृत्युके मुखमें चले जाते हैं। इस विषैली गैससे बचनेके लिए ही हिन्दुओंने यह साधन रखा था। क्योंकि प्रथम तो घीके दीपकसे विषैली वायु नष्ट हो जाती है। दूसरे यदि कुएमें ऐसी वायु उत्पन्न हो जाय, तो हमें उसका ज्ञान सहज ही हो सकता है। क्योंकि कार्बोलिकएसिड-गैसमें दीपक नहीं जल सकता वह तुरन्त बुझ जाता है और हम आने वाली घातक दुर्घटनाओंसे बच जाते हैं।

सहृदय वाचक वृन्द! इनके अतिरिक्त सनातन-धर्मके ऐसे ही अनेकों गूढ़ सिद्धान्त अभी अन्धेरेमें पड़े हुए हैं, जिनकी मार्मिकता पर हम दृष्टि नहीं डालते। यदि अवसर मिला, तो आगे अन्य रहस्यो-द्घाटन करनेकी भी चेष्टा करेंगे।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

आषाढ़ शुक्ल	१०	शनिवार	ता०	१	जुलाई	श्रीस्वाध्याय-सदन स्थापना दिवस
	११	रविवार	ता०	२	,,	देवशयनी एकादशीव्रत चतुर्मासारम्भ
	१२	सोमवार	ता०	३	,,	सोमप्रदोष व्रत
	१४	बुधवार	ता०	५	,,	सत्यव्रत वायुपरीक्षा ध्वजारोपण
	१५	गुरुवार	ता०	६	,,	श्रीगुरुपूजा व्यासपूजा, व्यास १५
श्रावण कृष्णा	४	रविवार	ता०	९	,,	श्रीगणेश ४ व्रत
	६	मंगलवार	ता०	११	,,	स्व० श्री लो० बा० गं० तिलक का ८९वां जन्मदिन
	११	रविवार	ता०	१६	,,	कामिका ११ व्रत,कर्क संक्राति,मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्न तक
	१२	सोमवार	ता०	१७	,,	सोमप्रदोष व्रत
	३०	गुरुवार	ता०	२०	,,	हरियाली ३० सूर्यग्रहण मेला कुरुक्षेत्र
श्रावण शुक्ला	१	शुक्रवार	ता०	२१	,,	चन्द्रदर्शन, नक्त व्रतारम्भ
	५	मंगलवार	ता०	२५	,,	नाग पञ्चमी
	७	गुरुवार	ता०	२७	,,	श्री तुलसी जयन्ती
	८	शुक्रवार	ता०	२८	,,	मेला श्री नयनादेवी व चिन्तपूर्णी
	११	सोमवार	ता०	३१	,,	पुत्रदा एकादशी व्रत
	१३	बुधवार	ता०	२	अगस्त	प्रदोष व्रत
	१५	शुक्रवार	ता०	४	,,	उपाकर्म ऋषि तर्पणी रक्षाबन्धन सत्यव्रत अमरनाथ (काश्मीर) यात्रा
भाद्रपद कृष्णा	२	रविवार	ता०	६	,,	कज्जली ३ व्रत
	३	सोमवार	ता०	७	,,	श्रीगणेश ४ व्रत
	५	बुधवार	ता०	९	,,	चन्दन ६ व्रत
	८	शुक्रवार	ता०	११	,,	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत चन्द्रोदय अर्धरात्रोत्तर [स्टे० टा० घं० १ मि० ८
	९	शनिवार	ता०	१२	,,	गुग्गा नवमी
	११	सोमवार	ता०	१४	,,	अजा एकादशी व्रत
	१२	मंगलवार	ता०	१५	,,	गोवत्स द्वादशी
	१३	बुधवार	ता०	१६	,,	प्रदोषव्रत सिंहसंक्राति मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर
	३०	शुक्रवार	ता०	१८	,,	कुशोत्पाटिनी ३० सतीपूजा
..द्रपद शु०	२	रविवार	ता०	२०	,,	चन्द्रदर्शन
	३	सोमवार	ता०	२१	,,	हरितालिका ३ मंगला गौरी व्रत वाराहजयन्ती

भाद्रपद शु०	३	मंगलवार ता० २२ अगस्त	पत्थर (कलङ्क) ४ चन्द्रदर्शन निषिद्ध
	४	बुधवार ता० २३ ,,	ऋषि पञ्चमी
	८	रविवार ता० २७ ,,	श्री दधीचि जयन्ती दूर्वाष्टमी राधाजयन्ती श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ
	११	बुधवार ता० ३० ,,	पद्मा एकादशी व्रत
	१२	गुरुवार ता० ३१ ,,	वामनद्वादशी प्रदोषव्रत मेला अम्बाला पटियाला
	१३	शुक्रवार ता० १ सितम्बर	अनन्त चतुर्दशी, श्री १०५ मान् रावराजा कैप्टेन [गिरिधारीशरणसिंह जन्मोत्सव
	१५	शनिवार ता० २ ,,	पूर्णिमा सत्यव्रत प्रौष्ठपदी श्राद्ध
आश्विन कृ०	१	रविवार ता० ३ ,,	महालया (पितृपक्षा) रम्भः
	३	मंगलवार ता० ५ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत
	११	बुधवार ता० १३ ,,	इन्दिरा एकादशी व्रत
	१२	गुरुवार ता० १४ ,,	प्रदोषव्रत
	१३	शुक्रवार ता० १५ ,,	श्रीमद्धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मान् वर्तमान बघाट नरेश- [महोदयका जन्मोत्सव
	१४	शनिवार ता० १६ ,,	शस्त्राग्निविषादिहतानां श्राद्धम् कन्या संक्राति- [मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर
	३०	रविवार ता० १७ ,,	महालय समाप्ति सर्वपितृविसर्जन
आश्विन शु०	१	सोमवार ता० १८ ,,	शारदीय नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, मातामह श्राद्ध
	२	मंगलवार ता० १९ ,,	चन्द्रदर्शन
	५	शुक्रवार ता० २२ ,,	शान्ति ५ ललिता ५
	७	रविवार ता० २४ ,,	श्रीसरस्वती आवाहन
	८	सोमवार ता० २५ ,,	महाष्टमी दुर्गाष्टमी, श्रीसरस्वती पूजन
	९	मंगलवार ता० २६ ,,	महानवमी श्रीसरस्वती बलिदान
	१०	बुधवार ता० २७ ,,	विजयादशमी (दशहरा), राजचिह्नपूजा, शमीवृक्ष पूजा, [सीमोल्लंघन, अपराजितापूजन, श्रीसरस्वती विसर्जन

सूर्यग्रहण विवेचन

कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण का वैज्ञानिक महत्व

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

आकाशीय चमत्कारोंमें सूर्यचन्द्रग्रहणका सर्वाधिक महत्त्व है। इस चमत्कारको देखनेके लिए सभी लोग विशेष रूपसे उत्कण्ठित रहते हैं। यूरोप अमेरिका आदिके कई खगोलज्ञ विद्वान् तो प्रतिवर्ष जहाँ-जहाँ खग्रास वा कङ्कण-सूर्यग्रहण होता है वहाँ वहाँ उसी प्रदेश वा महासागरमें बड़े-बड़े दूरवीक्षण यन्त्र (टेलिस्कोप) एवं वेधोपयोगी अन्यान्य यन्त्र सामग्री लेकर पहुँचते हैं और अन्वेषणके लिए ग्रहणकी सारी स्थितिका चित्र भी लेते हैं। धर्मशास्त्र मन्त्रशास्त्र एवं ज्योतिश्शास्त्रमें भी ग्रहण समयके पर्वकालकी अनेक विशेषताएं लिखी हैं। हमारे प्राचीन भारतवर्षीय महर्षियोंसे लेकर जनसाधारण तक सूर्यचन्द्रग्रहणके सम्बन्धमें क्या धारणा रखते थे, यह हम अपने प्राचीन ग्रन्थों द्वारा भलीभांति बता सकते हैं। आजके सभ्य सुसंस्कृत एवं समुन्नत कहलाने वाले अमेरिका महाद्वीपके अन्वेषक स्पेनके कोलम्बस साहबको प्राचीन समयमें शिर पर पक्षियों के पङ्ख लगाये हुए, शरीरको जंगली पशुओंके चमड़े से छिपाए हुए और गलेमें हड्डियों एवं मुण्डोंको लटकाये हुए, जिस प्रकारके अत्यन्त असभ्य अशिक्षित लोग अमेरिकामें मिले थे, उस प्रकारके लोग हमारे भारतवर्षमें नहीं थे।

जब अमेरिकन लोग ग्रहणको भगवान्‌का कोप मानकर भयसे घबरा जाते थे, उस समय भारतीय लोग ईश्वरीय संकेतसे ग्रहणको महापर्वकाल अनुभव कर जप तपादि अनुष्ठानोंमें लग जाया करते थे। एवं च आकाशीय ग्रहोंसे भूमण्डलके प्राणिमात्रका घनिष्ठ-सम्बन्ध तथा ग्रह-नक्षत्र-पिण्डकी वस्तु स्थिति और गतिको हमारे त्रिकालज्ञ भारतीय महर्षियोंने भलीभांति समझ रक्खा था, अस्तु।

अब हम 'श्रीस्वाध्याय' के विज्ञ पाठकोंको श्रावण कृ० ३० गुरुवार ता० २० जुलाई १६४४ ई० को होने वाले सूर्यग्रहणके सम्बन्धमें कुछ ज्ञातव्य बातें बतलायेंगे। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रथमवर्षके दूसरे अङ्क (हेमन्ताङ्क) में हमने चन्द्रग्रहणके सम्बन्धमें आठ पृष्ठोंमें एक विवेचनात्मक लेख लिखा था। उसमें ग्रहणकी उपपत्ति, चन्द्रमाका स्वरूप तथा कलाह्रास-वृद्धिका कारण और चन्द्रमा ग्रहण तथा राहु क्या वस्तु है? इनसे हमारा क्या सन्बन्ध है? ग्रहणमें दान जपादिका विशेष महात्म्य और भोजनादिका निषेध क्यों है? इत्यादि कई महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंका शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा वैज्ञानिक ढङ्गसे समाधान किया गया है। उन सब बातोंका पूर्णज्ञान प्राप्त करने के लिए वह अङ्क अवश्य देखना चाहिए। उस अङ्कका मूल्य २) रु० है। स्थानाभावके कारण उस पूरे लेखको यहाँ प्रकाशित करना असम्भव है, अतः सूर्यग्रहणके सम्बन्धमें ही कुछ आवश्यक बातें संक्षिप्त रूपमें यहाँ दी जाती हैं।

सूर्य

हमारे इस सौरजगत्‌में ग्रहोंमें सबसे प्रधान ग्रह सूर्य ही है। इसीके द्वारा पृथ्वी आदि अनेक ग्रहों और चन्द्रमा आदि उपग्रहों तथा नक्षत्रादिकों को—जो स्वयं प्रकाशमान् नहीं है — प्रकाश और उष्णता मिलती है। सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है—

तेजसां गोलकः सूर्यो ग्रहर्क्षाण्यम्बुगोलकाः।
प्रभावन्तो हि दृश्यन्ते सूर्यरश्मि प्रदीपिताः॥

सूर्य ही से सम्पूर्ण सृष्टिके अखिल-व्यापार निष्पन्न होते हैं। हमारा इससे घनिष्ठ सम्बन्ध है।

सूर्य प्रचण्डउत्तापका एक जाज्वल्यमान् महान् गोल है। उष्णताके अतिरिक्त वह प्रकाश और आकर्षणशक्तिका भी एक बृहत्तेजःपुञ्ज है। सूर्यका आयतन भी इतना बड़ा है कि सबके सब ग्रहों और उपग्रहोंको एकत्रित करनेसे जो कल्पित पिण्ड बनाया जाय तो सूर्य उससे भी पांचसौगुणा अधिक बड़ा ठहरेगा। हमारे इस पृथ्वीमण्डल वा भूगोलके सदृश प्रायः १३ लाख भूगोल सूर्यके उदरमें समा सकते हैं। यह पृथ्वीसे नौकरोड़ तीसलाख मील की दूरी पर स्थित है, इसी कारण हमें इतना छोटा-सा दिखाई देता है। बुध, शुक्र, पृथ्वी, भौम आदि सब ग्रहगण अपनी-अपनी कक्षाओंमें विभिन्न गतिसे गमन करते हुए सूर्यकी परिक्रमा करते हैं। अर्वाचीन ज्योतिश्शास्त्रमें सूर्यको स्थिर माना है, परन्तु यहाँ हमको यह समझाना है कि सूर्यकी स्थिरता वास्तविक स्थिरता नहीं है, किन्तु आपेक्षिक (Comparative) है। हमारे सौर जगत्के अन्तर्गत जो ग्रह उपग्रह हैं उनकी अपेक्षा तो सूर्य अचल है, किन्तु अन्यान्य सौरसमुदायकी अपेक्षा — जो हमको नक्षत्रोंके रूपमें दिखाई देते हैं — वह अचल नहीं है। इस दृश्य संसारमें किसी वस्तुको भी वास्तविक स्थिरता नहीं है। इसी सर्वव्यापी अनवच्छिन्न नियमके वशीभूत हमारे सूर्यदेव भी अपने परिवार वा ग्रहमालाको साथ लिये हुए अतीव सूक्ष्मगतिसे किसी अव्यक्त महासूर्यकी परिक्रमा कर रहे हैं। वह अनेक सूर्योंका भी सूर्य विराटसूर्य कौन है जो इस सम्पूर्ण सौर जगत्को अपने चारों ओर अहर्निश निरन्तर घुमा रहा है। उसका आयतन उसका तेज और उसकी अनन्तशक्तिका पता लगाना मनुष्यकी सामर्थ्यसे सर्वथा बाहर है। मानवी बुद्धि उसके महत्त्वके आगे पराजित हो जाती है। आचार्य केतकरने ज्योतिर्गणितमें ठीक ही लिखा है —

क्वानन्तकोट्यो ग्रहमालिकानां क्वचैकमाला गणितं मदीयम्।
पिता यथा तुष्यति बाललीलां दृष्ट्वा तथा तुष्यतु विश्वनाथः॥

सूर्यग्रहण

चन्द्रग्रहण तो जब चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करता है तब लगता है। उस समय भूपृष्ठके किसी भी स्थानसे निरीक्षण किया जाय तो स्पर्शमोक्षादि काल अथवा ग्रासमानमें भेद दिखाई नहीं देता। किन्तु सूर्यग्रहणमें यह बात नहीं है। सूर्यको जो ग्रहण लगता है उसमें भूछाया कारण नहीं। सूर्य स्वयं प्रकाशमान् पिण्ड है, वह छाया वा अन्धकारमें छिप नहीं सकता। अमावस्याको जब सूर्य चन्द्रमा और पृथ्वी तीनों एक सूत्रमें होते हैं (चन्द्रमा पृथ्वी और सूर्यके बीचमें होता है) उस समय चन्द्रमाका अपारदर्शक और निस्तेज बिम्ब घनपटलके सदृश सूर्यकी किरणोंका अवरोध करता है, जिससे भूपृष्ठपर चन्द्रमाकी छाया पड़ती है। भूपृष्ठके जितने भाग पर यह छाया पड़ती है उसमें जो स्थान आजाते हैं वहींसे सूर्यग्रहण दिखाई देता है और जो स्थान उस छायासे बाहर रह जाते हैं वहाँसे ग्रहण दिखाई नहीं देता। सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है

छादको भास्करस्येन्दुरधस्थो घनवद्भवेत्।
भूच्छायां प्राङ्मुखश्चन्द्रो विशत्यस्य भवेदसौ॥

[सूर्यमण्डल के नीचे भ्रमण करता हुआ चन्द्रमा बादलकी भांति सूर्य बिम्बको आच्छादित करता है, जिससे सूर्यग्रहण दिखाई देता है। और पश्चिमसे पूर्वको गमन करता हुआ चन्द्रमा भूछायामें प्रवेश करता है जिससे चन्द्रग्रहण दिखाई देता है।]

सिद्धान्तशिरोमणिमें श्रीभास्कराचार्यने भी लिखा है—

पश्चाद्भागाज्जलदवदधः संस्थितोभ्येत्य चन्द्रो-
भानोर्बिम्बं स्फुरदसितया छादयत्यात्ममूर्त्या॥ इत्यादि।

क्रान्तिवृत्त और चन्द्रकक्षावृत्तकी भिन्नभिन्न परिस्थितिके अनुसार चन्द्र और सूर्यके बिम्बोंमें भी कुछ न्यूनाधिक्यता होती रहती है। नीच स्थानसे बिम्ब बड़ा दीखता है और उच्च स्थानसे छोटा, अतएव चन्द्र-सूर्यग्रहणोंकी उपर्युक्त मर्यादामें भी कुछ अन्तर होता रहता है। युतिकालमें यदि चन्द्र-शर, चन्द्र और सूर्यबिम्बके मानैक्य खण्डसे न्यून हो किन्तु उनके मानान्तरखण्डसे अधिक हो तो उस समय सूर्यका खण्डग्रास ग्रहण होता है। यदि चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्बके बराबर अथवा उससे कुछ

अधिक हो और चन्द्रशर मानान्तरखण्डके बराबर वा उससे कुछ न्यून हो तो उस युतिकालमें सूर्यका पूर्णग्रास (खग्रास) ग्रहण होता है। चन्द्रबिम्ब की त्रिज्याका महत्तम मान १००६ विकला और सूर्य-बिम्ब त्रिज्याका लघुत्तम मान ९४६ विकला है। इनका अन्तर ६० विकला सिद्ध हुआ, अतएव सूर्य ग्रहणके पूर्णग्रास (खग्रास) की परमावधि दशपल सिद्ध होती है। युतिकालमें सूर्यबिम्बसे जब चन्द्रबिम्ब छोटा हो और चन्द्रशरका मान मानान्तरखण्डके बराबर या कुछ न्यून हो तो उस समय चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्ब को पूर्णतः आच्छादित नहीं कर सकता। ऐसी स्थितिमें सूर्यबिम्बका प्रकाशमान कुछ अंश कृष्णवर्ण वाले चन्द्रबिम्बके चारों ओर (वृत्ताकार रूपमें) दिखाई देता है। इस दृग्विषयको सूर्यका कङ्कणग्रहण कहते हैं। यह स्थिति १५ पल से अधिक नहीं रह सकती। ऐसा कङ्कण सूर्यग्रहण विगत संवत् १९९० भाद्रपद कृष्ण ३० ता० २१ अगस्त १९३३ ई० को भारतमें हुआ था। उस समय कुरुक्षेत्र पहुँचकर यह चमत्कार हमने भी देखा था। अब ११ वर्षके अनन्तर वर्तमान संवत् २००१ श्रावण कृष्ण ३० ता० २० जुलाईको दक्षिणभारतमें पुनः कङ्कणग्रहण होगा। कुरुक्षेत्रमें कङ्कणाकृति नहीं होगा, अस्तु।

जब यह सिद्ध हो चुका कि सूर्यग्रहणमें सूर्यका छादक चन्द्रमा और चन्द्रग्रहणमें चन्द्रमाको आच्छादन करनेवाली भूछाया है; तो फिर राहुको ग्रहणका कारण क्यों कहा गया ? यह राहु क्या वस्तु है ? इन प्रश्नोंका सप्रमाण सयौक्तिक विस्तृत उत्तर हम 'श्रीस्वाध्याय'के प्रथमवर्षके 'हेमन्ताङ्क'में लिख चुके हैं। यहाँ संक्षेपमें केवल इतना ही बतला देते हैं कि युतिकाल (पर्वान्त दर्शान्त) में जबतक राहु अर्थात् चन्द्रपातका सामीप्य चन्द्र-सूर्यबिम्बको नहीं होता तबतक ग्रहण नहीं लगता। छाया उत्पन्न करनेकी परिस्थितिका कारण चन्द्रपात या राहु ही होता है। इसीलिए राहुको "छायामार्तण्ड सम्भूत" बतलाया गया है। श्रीभास्कराचार्यने इसका स्पष्टीकरण बड़ी सुन्दर युक्तिसे निम्न श्लोकमें किया है—

राहुः कुभामण्डलगः शशाङ्कं
शशाङ्कगश्छादयतीनबिम्बम्।
तमोमयः शम्भुवरप्रदानात्
सर्वागमानामविरुद्धमेतत्॥

कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणका विशेष महात्म्य

जयसिंहकल्पद्रुम पुरुषार्थचिन्तामणि निर्णय-सिन्धु आदि धर्मशास्त्रके निबन्धग्रन्थोंके अनुसार पञ्जाबके तीर्थोंमें सन्निहित सरस्वती और कुरुक्षेत्र में स्नानका विशेष महात्म्य है। सन्निहित थानेसर (कुरुक्षेत्र) के पास एक सर है। वामनपुराण अध्याय ४३ के ३५वें-३६वें श्लोकका यह भावार्थ है कि—"कुरुक्षेत्रका सन्निहित सर ठीक उसी स्थान पर है जहाँ भगवान्ने पहलेपहल ब्रह्माण्डके अण्डसे सूर्यको उत्पन्न किया था।" नारदपुराण उत्तरखण्ड अध्याय ६४ के १३ वें श्लोकमें लिखा है कि ब्रह्माने सन्निहित सर बनाकर सृष्टि उत्पन्न करनेकी इच्छासे वहाँ तपस्या की। सृष्टिकी रक्षाकी कामनासे विष्णुने वहाँ तप किया और उसी पवित्र सरोवरमें महादेव जी स्नानकर स्थाणु नामसे प्रसिद्ध हुए। इन प्रमाणों से मानवसृष्टि और सूर्यकी उत्पत्तिका सन्निहित सरसे सम्बन्ध बतलाया गया है।

'सरस्वती' थानेसरके पास बहनेवाली एक महा नदी का नाम है। ऋग्वेद ८।३।६, यजु० ३४।११ में इसके महात्म्यका वर्णन है। ऋग्वेद ७।६।५।२ के अनुसार यह समुद्र तक जाती थी। परन्तु शतपथब्राह्मण १।३।३।१ से ज्ञात होता है कि ब्राह्मणकालमें हिमालय में होने वाले एक आग्नेय-उपद्रवसे सूखकर अन्तः सलिला हो गई। "आर्योंका मूलस्थान" नामक पुस्तकमें श्रीयुत पावगीने वेदमन्त्रों, पश्चिमीय विद्वानों की दी हुई युक्तियों और विज्ञान द्वारा बड़ी योग्यता से सिद्ध किया है कि कुरुक्षेत्रमें बहनेवाली सरस्वती नदीके तट पर ही पहले-पहल मनुष्यकी उत्पत्ति हुई है। इस सम्बन्धसे कुरुक्षेत्र संसार भरके लोगोंकी आदि मातृभूमि होनेसे न केवल भारतवासी हिन्दुओं

की ही अपितु मनुष्य मात्रके लिए श्रद्धापूर्वक यात्राका स्थान है।

"कुरुक्षेत्र" यह एक अतिप्राचीन सरोवर है। ऋग्वेद ६।११३।१ मन्त्रमें 'शर्यण्वति' यह एक पद आया है और ऋग्वेदके सांख्यान ब्राह्मणमें लिखा है कि 'शार्यण्यवत्' कुरुक्षेत्रका तालाब है। श्रीयुत वसुका अनुमान है कि ऋग्वेदका "शर्यवत" ही थानेसरके पासका कुरुक्षेत्र नामका सरोवर है। वामनपुराण ४१।१३ के अनुसार इसी सरोवर पर कुरुने तपस्या करके विष्णु भगवान्से यह वर प्राप्त किया था कि "मैंने जहाँ तक भूमि जोती है, वह सारा प्रान्त पुण्यक्षेत्र बन जाय।" भगवान् उसका तप और साहस देखकर यह बात मान गये। यजुर्वेदके शतपथ ब्राह्मण १४।१।१।२ के अनुसार यह वही पवित्रभूमि है जहाँ देवताओंने भी यज्ञ किये थे और सामवेदके ताण्ड्य ब्राह्मण २५।१३।३ में तो इसे प्रजापतिकी वेदी भी लिखा है।

सूर्यके साथ सन्निहित, सरस्वती और कुरुक्षेत्रका विशेष वैज्ञानिक सम्बन्ध है, अतः ग्रहणके समय वहाँ जाने वालोंकी सूर्यरूप आत्मा एवं चन्द्ररूप मन पर उस देश तथा कालका कोई विशेष प्रभाव पड़ता है। इसी लिए हमारे अतीन्द्रिय-ज्ञानी त्रिकालदर्शी महर्षियोंने सूर्यग्रहणमें कुरुक्षेत्र स्नानका विशेष महात्म्य बतलाया है। श्रीमद्भागवतसे ज्ञात होता है कि एक बार सूर्यग्रहणके पर्व पर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र भी द्वारिकासे अपने साथियोंके साथ कुरुक्षेत्रमें स्नानार्थ आये थे, अस्तु।

नाविक !

कवयिता—श्री० दा० प्र० थपलियाल

ले चल ले चल भोले नाविक ! मुझे तरङ्गिणि—तीर।
शान्त व्यथायें भव—बाधायें भागें उलझन पीर ॥१॥

सागर शोभित डगमग नय्या
हिलोर पवन बेपीर।
छोड़ न देना भोले वाहिक !
अनजाने तट-तीर ॥२॥

प्रतिपग प्रतिपल ढोते जाना
पतवारे ओ धीर !
नक्रोंके मुख—गह्वरको
निदयतासे देना चीर ॥३॥

बहा ले चला है मुझको
स्नेह - सिन्धुका नीर।
दूर अलक्षित शान्तिनिकेतन
प्रीतम - प्रेम - कुटीर ॥४॥

चिरकांक्षाकी धुंधली रेखा करती मुझे अधीर।
अङ्ग—अङ्गमें विह्वलता है पुलकित करता प्रेम समीर ॥५॥

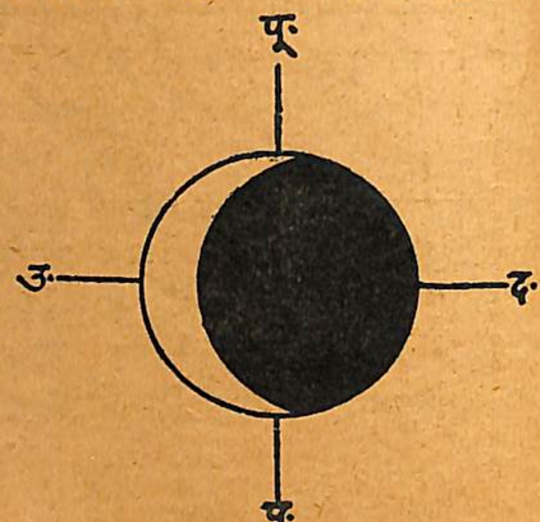
सूर्यग्रहणका संसार पर प्रभाव

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

वर्तमान सं० २००१ श्रावण कृ० ३० गुरुवार ता० २० जुलाई सन् १९४४ ई० को त्रिपादग्रस्त (खण्डग्रास) सूर्यग्रहण होगा। यह मध्यएशिया, चीन, जापान, ब्रह्मदेश, श्याम, अन्नाम, प्रशान्तमहासागर, हिन्द महासागर, उत्तरीय न्यूगिनी और भारतमें सर्वत्र दिखाई देगा। उत्तरभारतकी अपेक्षा दक्षिण भारतमें क्रमशः ग्रास अधिकाधिक दिखाई देगा। पूना सतारा और इनके समीपवर्ती ग्रामोंमें कुछ न्यून कङ्कणाकृति ग्रहण मध्यकालके समय दृष्टिगोचर होगा और जगन्नाथपुरी तथा समीपके स्थानोंमें पूर्ण कङ्कणग्रहण मध्यकालके समय दिखाई देगा। कङ्कणाकृति केवल ३ मिनट ही रहेगी। नागपुर और बम्बईसे नीचे दक्षिणकी ओर मद्रास तक ग्रहण-मध्यकालके समय सायङ्काल सूर्यास्त जैसी स्थिति हो जावेगी। चन्द्रग्रहण में तो छाद्यछादक कक्षा भेद न होनेसे सर्वत्र स्पर्शमोक्षकाल एक ही समय पर होता है और ग्रास भी एक जैसा दिखाई देता है; परन्तु सूर्यग्रहणमें यह बात नहीं है, यह हम पहले लिख चुके हैं। छाद्यछादक कक्षा भेदके कारण सूर्यग्रहणका स्पर्श मध्य मोक्षकाल प्रत्येक स्थानका भिन्न भिन्न होता है और ग्रास भी न्यूनाधिक रूपमें दिखाई देता है। इसी कारण चन्द्रग्रहणकी अपेक्षा सूर्यग्रहणका गणित बहुत कठिन एवं श्रमसाध्य है।

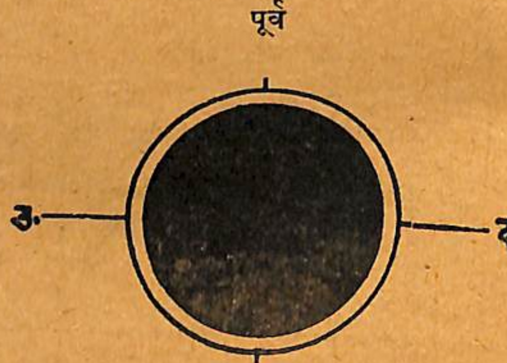
भारतके कुछ प्रधान नगरोंमें इस सूर्यग्रहणका स्पर्शमोक्षकाल नवीन परिवर्द्धित स्टैण्डर्ड टाइमके अनुसार हम आगे पृष्ठ २८ पर दे रहे हैं।

कुरुक्षेत्रमें ग्रहणमध्यकालके समय ग्रास स्वरूप



कङ्कणसूर्यग्रहण

श्रीजगन्नाथपुरी तथा पूना और दक्षिण हैदराबाद के मध्यवर्ती स्थानोंमें मध्यकालके समय कङ्कणसूर्यग्रहणका स्वरूप।

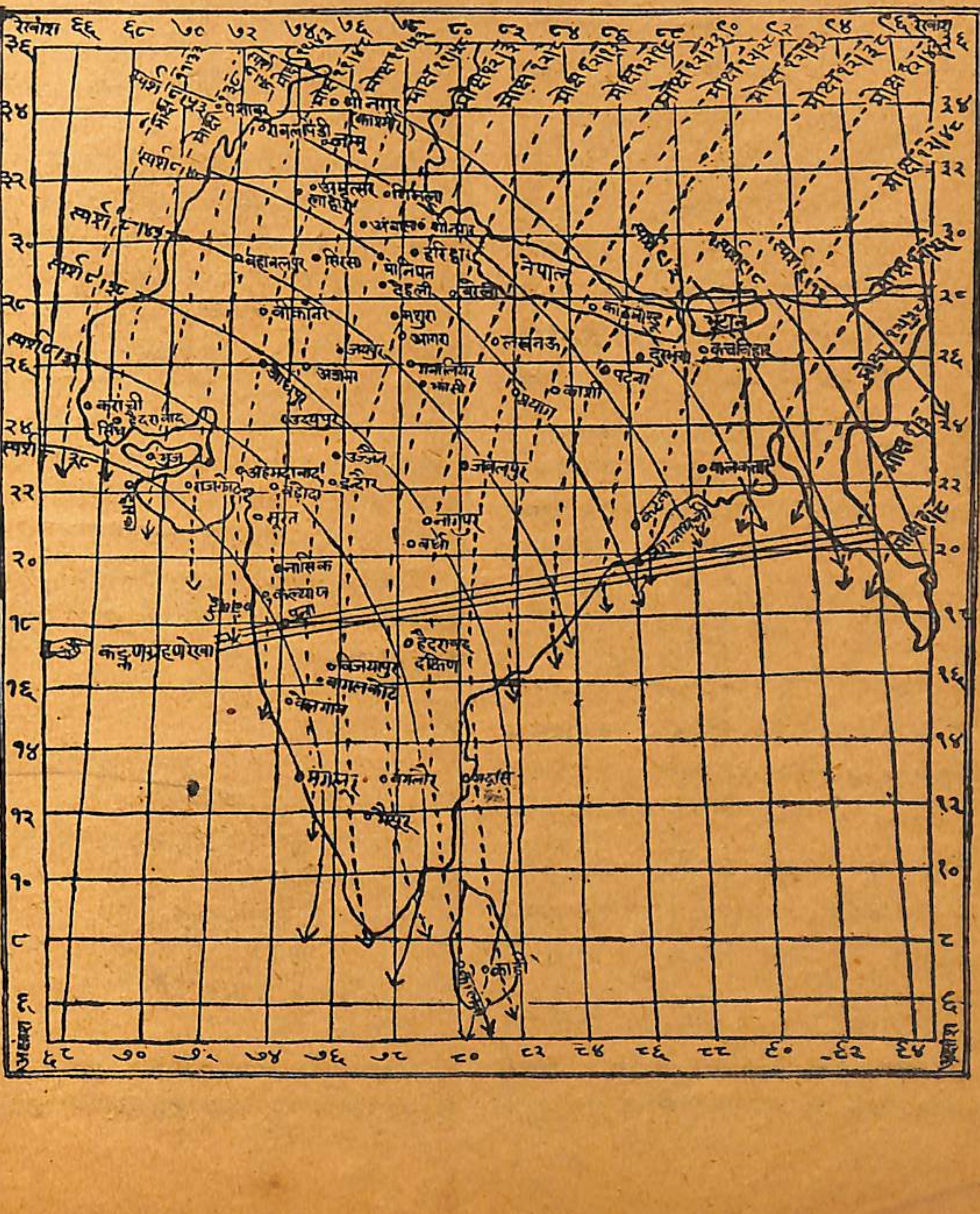


यह कङ्कणस्थिति केवल तीन मिनिट रहेगी।

सं० २००१ श्रावण कृ० ३० गुरुवार ता० २० जुलाई १६४४ ई० के

भारतीय-भूमण्डल सूर्यग्रहणका चित्रपट (नक्शा)

इस भारतके चित्रपट (नक्शे) में ⌒⌒ ऐसी टेढ़ी रेखा स्पर्शकालकी और ………………… यह त्रुटित रेखा मोक्षकाल सूचक है। नक्शेमें स्पर्श मोक्षकाल प्राचीन (पुराने) स्टैण्डर्ड टाइमके अनुसार दिया गया है।



नगर	नवीन (वर्द्धित) स्टेण्डर्ड टाइम स्पर्श घं० मि०	मोक्ष घं० मि०
पेशावर	६-५२	१२-४०
श्रीनगर काश्मीर	६-५५	१२-५०
मुल्तान	६-४५	१२-४५
लाहौर	६-५०	१२-५१
पटियाला	६-५१	१३-०
सोलन शिमला	६-५२	१३-१
हरिद्वार	६-५१	१३-५
कुरुक्षेत्र	६-४८	१३-३
दिल्ली	६-४६	१३-५
भरतपुर	६-४४	१३-७
कराची	६-३१	१२-३५
उदयपुर मेवाड़	६-३६	१२-५६
जयपुर	६-४१	१३-३
जोधपुर	६-३८	१२-५३
बीकानेर	६-४०	१२-५२
ग्वालियर	६-४४	१३-१०
बनारस	६-५०	१३-२९
प्रयाग	६-४८	१३-२५
कानपुर	६-४७	१३-१८
आगरा	६-४५	१३-८
उज्जैन	६-३५	१३-२
बड़ौदा	६-३२	१२-५८
अहमदाबाद	६-३१	१२-५३
कलकत्ता	६-५९	१३-४७
बम्बई	६-२६	१२-५५
पूना	६-२८	१३-१
पटना	६-५४	१३-३४
जगन्नाथपुरी	६-४९	१३-४१
हैदराबाद दक्षिण	६-३४	१३-१५
मद्रास	६-३६	१३-२१

उपरिलिखित स्पर्श मोक्षका सूक्ष्म शुद्ध गणितागत समय मिलानेके लिए पहले अपनी घड़ीको स्थानीय पोस्टआफिस रेलवे या रेडियोसे पहले दिन रात्रिको मिला रखें। स्पर्शकालसे पूर्व दूरवीक्षणयंत्र (टेलिस्कोप) पर काला वस्त्र या काला कांच लगाकर सूर्यबिम्बको देखिए, क्योंकि अच्छे नेत्रोंसे भी स्पर्शके कुछ मिनट अनन्तर ही प्रायः ग्रास दिखाई देता है और मोक्षके कुछ मिनट पहले ही सूर्यबिम्बका ग्रस्त भाग दीखना बन्द हो जाता है। इसी लिए श्रीभास्कराचार्य ने लिखा है —

"तेजस्तैक्ष्ण्यात्तीक्ष्णगोर्द्वादशांशो ना दृश्योऽतोऽल्पगृह्रो बुद्धिमद्भिः।"

वेध और स्नानदानादि कृत्य

इस सूर्यगृहणका वेध पहले दिन (श्रा० कृ० १४ बुधवार ता० १९ जुलाईको) रात्रिमें नवीन स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार २१-४८ पर आरम्भ होगा। सूर्यगृहणका वेध स्पर्शकालसे ४ प्रहर वा १२ घण्टे पहले लगता है। बाल वृद्ध और रोगियोंके बिना गृहणके वेध (सूतक) में भोजनादि करना निषेध है। गृहणके आरम्भमें स्नान, मध्यमें हवन, मध्यके अनन्तर दान और मोक्षके पश्चात् पुनः शुद्ध स्नान करना चाहिए। जब तक गृहण रहे तब तक जपानुष्ठानादि भगवदाराधन करना चाहिए।

गायत्री-मन्त्र तथा अन्य किसी भी मन्त्र स्तोत्र आदिकी सिद्धि, प्रयोगारम्भ और दीक्षाके लिए सूर्यगृहणका पर्वकाल अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है। शिवार्चनचन्द्रिका रत्नसागर श्रीगणपतिअथर्वशीर्षादि गृन्थोंमें लिखा है —

मन्त्राद्यारम्भणं कुर्यात्—ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
सत्तीर्थेऽर्कविधुग्रासे तन्तुदामनपर्वणि।
मन्त्रदीक्षां प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन्न शोधयेत्॥
सूर्यग्रहणकाले तु नान्यदन्वेषितं भवेत्।
सूर्यग्रहणकालेन समो नान्यः कदाचन॥
न मासतिथिवारादि शोधनं सूर्यपर्वणि।
"सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा सन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति॥"

यद्यपि सूर्यगृहणका सर्वाधिक महत्त्व कुरुक्षेत्रमें है। इसीलिए वहाँ (कुरुक्षेत्रमें) सूर्यगृहणके पर्व पर

असंख्य भारतीय धर्मप्राण जनताका सुविशाल मेला भी होता है। महीनों पहले प्रान्तीय सरकारकी ओरसे इस मेलेका प्रबन्ध आरम्भ हो जाता है और समय पर अनेक स्पेशल ट्रेनें भी छूटती थीं। परन्तु महायुद्ध की वर्तमान विषम स्थितिमें सरकारकी ओरसे समुचित प्रबन्धकी आशा अब नहीं है, अतः पहले जैसा मेला इस बार होना असम्भव ही है। ग्रहणमें गङ्गा यमुना आदि महानदियों और सभी छोटी बड़ी पुण्य नदियोंमें स्नानका विशेष महात्म्य है। परन्तु दैवात् यदि कोई भी तीर्थ उपलब्ध न हो सके तो जहाँ जैसा स्थान और जल उपलब्ध हो वहीं स्नान, भगवद्भजन और यथाशक्ति दान करना आवश्यक है। ग्रहणमें देश पात्र और द्रव्य विशेषकी शङ्का नहीं करनी चाहिए। भगवान व्यासने लिखा है—

सर्वं गङ्गा समं तोयं सर्वे ब्रह्मसमा द्विजाः।
सर्वाभूमिः कुरुक्षेत्रं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः॥

राशियोंको शुभाशुभ

यह ग्रहण पुनर्वसु पुष्य नक्षत्र और कर्कराशिमें हो रहा है। स्पर्शकालके समय पूर्वक्षितिज पर सिंह-राशि (लग्न) का उदय है और मध्य तथा मोक्षके समय पूर्वक्षितिजमें कन्याराशिका उदय है। अतः जिन राष्ट्रों और व्यक्तियोंकी जन्मराशि जन्मलग्न कर्क सिंह कन्या; तथा धनुः मकर कुम्भ और मेष होंगे उन देशों और व्यक्तियों पर इस ग्रहणका अनिष्ट परिणाम होगा। संक्षेपमें बारह राशियोंका ग्रहण फल निम्न है—

मेष लग्न और राशिवाले प्राणियोंको शारीरिक मानसिक चिन्ता, कष्ट, क्लेश, दैन्य, वाहन भूम्यादि स्थावरसम्पत्तिकी चिन्ता।

वृषभ—उत्कर्ष, उत्साह, उद्यमसे यश, लाभ।

मिथुन—व्यवसायमें वाधा, कौटुम्बिक क्लेश, साम्पत्तिक हानि, भय, मनमें उद्वेग।

कर्क—शारीरिककष्ट, घात पतनादि भय, मनोभङ्ग, क्लेश, चिन्ता।

सिंह—व्ययाधिक्य, व्यवसायमें अचानक आपत्ति या हानि, द्रव्यका अभाव, मानसिक चिन्ता।

कन्या—द्रव्य लाभ, सम्मान प्राप्ति, शत्रुनाश, कौटुम्बिक सुख, स्वास्थ्य साधारण।

तुला—सर्वप्रकारका सुख, अधिकार, श्रेष्ठता, जनतामें सम्मान।

वृश्चिक—स्थान मानहानि, कौटुम्बिक क्लेश, बुद्धिभ्रंश, चित्तमें व्याकुलता।

धनुः—मृत्यु तुल्य कष्ट, भांतिभांतिके शारीरिक मानसिक क्लेश, द्रव्याभाव, व्यवसायमें वाधा।

मकर—स्त्रीकष्ट, मानसिक चिन्ता, पारिवारिक क्लेशके कारण चित्त अत्यन्त उद्विग्न, स्वास्थ्य हानि।

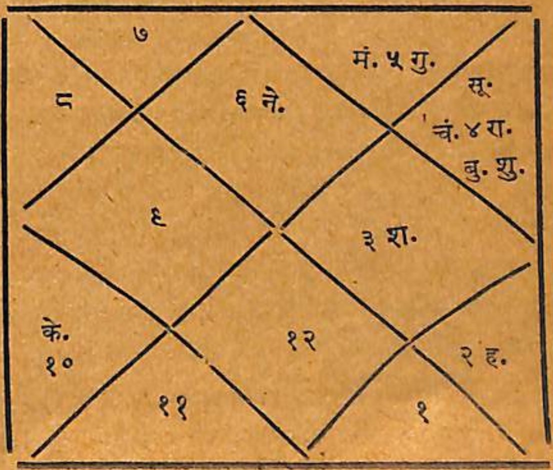
कुम्भ—रोग और शत्रुका नाश, उद्योग व्यवसायमें उन्नति, चित्तमें शान्ति, पारिवारिक सुख उत्तम।

मीन—बुद्धि चाञ्चल्यके कारण कार्य व्यवसायमें उलट फेर हो, परन्तु हानिकी सम्भावना नहीं। अन्तिम परिणाम शुभ रहेगा।

उपर्युक्त ग्रहणका फल जिन मनुष्योंका जन्मलग्न और जन्मराशि एक ही होगा उनको पूर्ण मिलेगा और जिनके जन्मलग्न और राशि भिन्न-भिन्न होंगे उनके शुभाशुभ फलमें कुछ न्यूनाधिक्य होगा।

सूर्यग्रहणका संसार पर प्रभाव

ग्रहण मध्यकालीन लग्नकुण्डली



यह ग्रहण पृथ्वीतत्त्व एवं द्विस्वभाव राशिके लग्नमें हो रहा है, अतः सर्वसाधारण जनताकी स्थिति अच्छी न रहे। व्यापार, शिक्षण, धार्मिक आन्दोलन, अपराध, असहयोग, प्रवास, खनिज-पदार्थ कृषि और साम्पत्तिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़े। अधिकारारूढ़पक्षको महान् कष्ट। लग्नेश दशमेश लाभमें ग्रहणराशिमें होनेसे पार्लियामेंट और केन्द्रीय व प्रान्तीय व्यवस्थापक सभाओं (कौंसिल असम्बलियों) में वादविवाद व तीव्र मतभेद उपस्थित हो। प्रजापक्षी सदस्योंको विशेष कष्टका साम्मुख्य करना पड़े। लौकसत्ता प्रजातंत्र एवं स्वायत्त शासनाधिकार प्राप्तिके लिए सर्वत्र प्रबल प्रयत्न हों। धनेश बुध ग्रहणग्रस्त-राशिमें है, अतः संसारकी आर्थिक दशा, व्यापार, धनोत्पादक व्यवसाय आदिकी स्थिति बहुत बिगड़ेगी। प्रजाको करोंका बोझ असह्य होगा। तृतीयेश अष्टमेश मंगल चतुर्थेश सप्तमेश गुरुके साथ लग्नसे व्ययमें और ग्रहणराशिसे तृतीय है, अतः रेल्वे, मोटर एवं अन्यान्य यातायातके साधनोंमें भयङ्कर कठिनाई होगी और कई स्थानोंमें अपघात वा दुर्घटनाएं भी होंगी। राष्ट्रिय शिक्षा, समाचारपत्र, लेखक, प्रकाशक, ग्रन्थकार और विद्वानोंके लिए यह समय कष्टकारक रहेगा। संसारमें मृत्यु संख्या अधिक हो। राजपक्ष वा अधिकारारूढ़ किसी प्रसिद्ध पुरुष एवं महिलाकी मृत्यु हो। समुद्रमें मेघ तूफान भयङ्कर ज्वारभाटा और युद्धसे हानि होगी। समुद्रतटवर्त्ति जनता, अधिकारीवर्ग और सर्वसाधारण जनताको विशेष कष्ट भोगने पड़े। परराष्ट्रिय सम्बन्ध और राष्ट्रिय समस्याकी विकट स्थिति उपस्थित हो। गुप्तषड्यंत्र अधिक हों। पञ्चमेश षष्ठेश शनि दशम है अतः बच्चों और युवा पुरुषोंकी मृत्यु संख्या अधिक हो। उच्चवर्गके किसी प्रसिद्ध पुरुष पर भयङ्कर सङ्कट आवे। रोग वृद्धि हो। संसारमें सांसर्गिक रोग (प्लेग आदि) से बहुत हानि हो। श्रमजीविवर्गमें असन्तोष। मजदूरवर्गके असहयोगसे कई बड़े-बड़े कारखानोंमें सामूहिक गत्यवरोध या हड़ताल जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। भृति (नौकरी) पर अवलम्बित रहनेवाले लोगोंके लिए यह काल कष्टकारक जाएगा।

यह सूर्यग्रहण भूमण्डलके जिन भागोंमें दृष्टिगोचर होगा वहाँ सर्वत्र उपर्युक्त अनिष्ट परिणाम घटित होगा। इसके अतिरिक्त स्काटलेण्ड, हालेण्ड, पश्चिम-उत्तर अफ्रीका, फ्रान्स, इटली, रूमानिया, जर्मनी, पोलेण्ड, फिनलेण्ड, आस्ट्रेलिया, जापान, चीन, प्रशिया, रशिया, स्वीडन, अबीसीनिया और हमारे भारतवर्षमें बंगाल, आसाम, बिहार, कलकत्ता, कराची, निजामराज्य, मद्रास, महाराष्ट्र, काठियावाड़, सिन्ध तथा पंजाबमें उक्त ग्रहणका अनिष्ट प्रभाव अधिक होगा। महायुद्धकी ज्वाला तीव्ररूपसे भड़केगी।

यों तो ग्रहणका फल प्रायः ६ मास पर्यन्त होता रहता है। परन्तु प्रो० टालमी आदि कुछएक पाश्चात्त्य विद्वानोंका मत है कि जितने घण्टे तक सूर्यग्रहण (पर्वकाल) रहे, उतने ही वर्षपर्यन्त उस ग्रहणका शुभाशुभपरिणाम होता रहता है। अतः इस मतके अनुसार तो भारतमें ३॥ वर्षपर्यन्त इस ग्रहणका अनिष्टपरिणाम न्यूनाधिक रूपमें सर्वत्र होना चाहिए। किन्तु यह मत सर्वमान्य नहीं है।

श्री वराहमिहिराचार्यके मतसे इस ग्रहणके मास, वार, नक्षत्र, राशि, पर्वेश, खांश, वर्ण, ग्रास आदिके शुभाशुभ फलका निष्कर्ष यह है—

ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, कृषक, सेवक, व्यापारी, नास्तिक, राजा, राजपुत्र, धनाढ्य, शबर (भील किरात) पल्हव (परसियन लोग) मल्ल, स्त्रीवर्ग, युद्ध कुशल लोग, पूंजीपति और प्रधानपुरुष तथा मत्स्य (वैराट जयपुर प्रान्त) कुरुक्षेत्र दिल्ली उत्तरपश्चिमी सीमाप्रान्त गान्धार काश्मीर म्लेच्छदेश अफगानिस्थान तुर्कस्थान आदि। चीन, गौमती गोदावरी सिन्धु यमुना तटवर्ती प्रान्त, सौवीर पाञ्चाल धनाढ्यदेश, नेपाल, शोणनद, सतपुड़ा और हिमालयपर्वतका मध्यदेश इन सब पर इस सूर्यगृहणका अनिष्ट प्रभाव पड़ेगा। लाल और पीले रंगकी वस्तुओंका भाव तेज। ६ मास तक गृहणका अनिष्टपरिणाम होता रहे।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

पंचग्रहयोग और कालयोगका भयंकर भविष्य

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी, सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय']

गताङ्कमें वर्तमान सं० २००१के भविष्यके सम्बन्ध में हम सप्रमाण विस्तृतविवेचन कर चुके हैं। महायुद्ध तथा अग्नि वायु आदि उत्पातोंके द्वारा जिन आधिदैविक आधिभौतिक उत्पातोंसे भीषण जनधन विनाशकी सूचना दी गई थी, उसका उपक्रम आरम्भ हो गया है। यह बात समाचारपत्र पाठकोंको भलीभांति विदित ही है। गताङ्ककी उस भविष्यवाणीका अधिकांश महत्त्वपूर्ण भाग भारतके सुप्रसिद्ध राष्ट्रिय साप्ताहिक अर्जुन, कर्मवीर, विक्रम, श्रीवेङ्कटेश्वर-समाचार, सन्मार्ग और मासिक सरस्वती, सतयुग आदि कई पत्र पत्रिकाओंने भी उद्धृत किया है।

अब इस आषाढ़ मासके अनन्तर आगे आकाशमण्डलमें ग्रहोंके कई भयंकर योग घटित होने वाले हैं, जिनके कारण भूमण्डल पर जनधनका भीषण विनाश होगा। वर्तमान विषमपरिस्थितिके कारण हम अपनी ओरसे अधिक कुछ न लिख कर शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा उन अशुभ योगोंका दिग्दर्शनमात्र ही पाठकोंको कराते हैं।

आषाढ़ शुक्ल और श्रावण कृष्णपक्षमें मंगल गुरु सिंहराशिमें एकत्र हैं और शुक्र शनि मिथुनमें अस्त हैं, यह दोनों योग वर्षा हानि, युद्ध, विग्रह, दुर्भिक्षादि द्वारा विनाशके द्योतक हैं। यथा—

एकराशिगतावेतौ धरापुत्राङ्गिरासुतौ।
तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षाकाले न संशयः॥
"ईज्यमंगलयोगो वै महीनाशाय कल्पते।"
शुक्रसौर्योद्वयोरस्तमेकराशौ यदा भवेत्।
अन्नपीड़ा महायुद्धं देशेदेशे च विग्रहाः॥

श्रावणके सूर्यग्रहणका विस्तृत फल इसी अंकमें पहले लिखा जा चुका है।

पञ्चग्रहयोग फल

भाद्रपद कृष्णामावस्याको सिंहराशिमें पांच ग्रह एकत्र हो रहे हैं। यह प्रजानाश, छत्रभङ्ग, दुर्भिक्ष, राज्यभ्रंश, महामारी आदि भयंकर रोग, राजयुद्ध, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, परचक्रभय और भूकम्पादि भांतिभांतिके उत्पातोंसे महाविनाशका सूचक है। यथा—

कुजार्कजीवशुक्राश्च सिंहराशिं समाश्रिताः।
छत्रभङ्गः प्रजानाशो भयभीता च मेदिनी॥
रविशुक्रसुराचार्या यदैकत्र समाश्रिताः।
राज्यभ्रंशः प्रजानाशः सर्वशस्यमहर्घता॥
रवीन्दुशुक्रेज्यशशाङ्कपुत्राः यदैकराशौ सहिता भवन्ति।
मेघाः प्रवर्षन्ति महर्घतास्यात्प्रजाविनाशो दिशि-
नैऋते स्यात्॥
शशिसूर्यसमायोगे पञ्चग्रहसमन्विते।
महारोगभयं राष्ट्रं राजयुद्धं भविष्यति॥
नृपवैरिगर्भनाशो हन्ति पञ्च जगत्त्रयम्।
जायते जननाशश्च मन्त्रिणो मरणं भवेत्॥
अतिवृष्टिरनावृष्टिः परचक्रभयं तथा।
उत्पातादिभयं सर्वं सङ्करादि जनक्षयः॥
जगत्प्रलयमेवापि तदा निर्मानुषं जगत्।
भूकम्पादि महोत्पातो नानादुःखसमाकुलम्॥
पश्वश्वादिभयं सर्वं वशिष्ठवचनं तथा।

गोल योगफल

इसी भाद्रपद कृष्ण ३० शुक्रवार ता० १८ अगस्त १९४४ ई० को प्राचीन स्थूलगणित (सूर्यसिद्धान्त मकरन्द ग्रहलाघवादि) से रात्रिके नौ बजे सिंह राशिमें सू० चं० मं० बु० गु० शु० इन ६ ग्रहोंका योग हो रहा है। संहिताग्रन्थोंमें इस योगको गोल-

योग वा कालयोग भी कहा है और इसका महाविनाशकारक अनिष्ट फल यों लिखा है। यथा —

ग्रहाणां यन्मासे ननु भवति षण्णां निवसति-
स्तदा गोलोयोगः प्रलयपदमिन्द्रोऽपि लभते।
नृपाणां नाशस्याज्ज्वलति वसुधा शुष्यति नदी
भवेल्लोको रङ्कः परिहरति पुत्रं च जननी॥
राजनाशः प्रजायेत सेनयोरुभयोरपि।
अग्निदाहो जन्तुपीड़ा मन्त्रिणोमरणं भवेत्॥
पट्टराजो विनाशोऽथ धूमकेतूदयो भवेत्।
अकालेऽपि फलं पुष्पं वृक्षाणां तत्र जायते॥
ऋतौ विपर्ययं तत्र हन्ति पञ्च जगत्त्रयम्।
देवध्वंसः रजःपातो रक्तवृष्टिश्च जायते॥ इत्यादि।

भावार्थ यह है कि संसारमें प्रलयका रूप दिखाई दे। स्वार्थपरायण उन्मत्त अनार्य शासकोंका विनाश हो। युद्ध महामारी दुर्भिक्षादिके कारण प्रजा अत्यन्त हीनावस्थाको प्राप्त हो जावे। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, अग्निप्रलयादिके अनेक उत्पातोंसे भयङ्कर जननाश हो। फ्रान्स इटली रुमानिया तुर्कस्थान स्विटजरलैण्ड मेसोपेटोमिया अफगानिस्तान बल्गेरिया ग्रीस हालेण्ड पश्चिमोत्तर–अफ्रिका पोलेण्ड जापान जर्मनी यूरोपियन रशिया और भारतमें उत्तर-पश्चिमी भारत सीमाप्रान्त समुद्रतटवर्ति प्रदेश बंगाल आसाम विहार बम्बई मद्रास कराची गुजरात और काठियावाड़में इस कालयोगका अनिष्ट परिणाम अधिक होगा।

कर्क संक्रान्तिका फल

श्रावण कृष्ण ११ रविवार ता० १६ जुलाईको प्रातःकाल जलचर राशिके कर्क लग्नमें सूर्य कर्कराशिमें प्रविष्ट हो रहे हैं। सूर्य बुध शुक्र लग्नमें और चन्द्रमा ११वें है, अतः कर्क संक्रान्तिके अनन्तर अतिवृष्टि योग है। श्रावणसे मार्गशीर्ष तक अतिवृष्टिसे कई प्रान्तोंमें बाढ़ आवे और कई ग्रामोंमें कच्चे घरोंके गिरनेसे बहुत हानि होगी। बम्बई, आसाम, उड़ीसा, गुजरात, पञ्जाब, पूना, नागपुर और सिन्ध प्रान्तोंमें विशेष चिन्ता होगी। उक्त अवधिमें खाद्यपदार्थ एवं अन्यान्य आवश्यक वस्तुओंके भाव इतने अधिक बढ़ जाएंगे कि मध्यम और निम्नश्रेणीके लोगोंके लिए उनका क्रय करना कठिन हो जाएगा। अतः सहस्रों मनुष्योंको भरपेट अन्न नहीं मिल सकेगा। श्रावणके अनन्तर राजनैतिक गगनमण्डलमें ग्रहोंके कुछ ऐसे साधक-बाधक योग घटित हो रहे हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि उस समय पुनः भारतीय नेताओंकी मुक्ति और राजनैतिक गत्यवरोध दूर करने की प्रबल चर्चा चलेगी। सम्भवतः अमेरिका इङ्गलैंडके कुछ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ भारतीय नेताओंसे विचार विनिमय करके गत्यवरोध दूर करनेका प्रबल प्रयत्न करें। परन्तु इस कार्यमें पूर्ण सफलताका योग हमें दिखाई नहीं देता। महायुद्धकी भयङ्करता मार्गशीर्षके अनन्तर थोड़ेसे अनिश्चितकालके लिए कुछ शान्त होनेका योग है।

अन्तर्राष्ट्रिय परिस्थिति

अगस्तके अनन्तर जर्मनराष्ट्र वा जर्मन अधिकृत प्रदेशोंमें अराजकता उत्पन्न हो कर राजनैतिक उलटफेर और गृहयुद्ध (Civil War) होना सम्भव है। वर्षाऋतुके अनन्तर सम्भवतः टर्कीको युद्धस्थलमें उतरना पड़े। फिनलैण्ड क्षतिग्रस्त हो। ग्रीस अपनी पूर्वस्थितिमें आनेके लिए पुनः यत्नशील हो। जेकोस्लावकियामें अराजकता होगी। फ्रान्सकी जनता निरुत्साही हो और वहाँ भी गृहयुद्धकी सम्भावना है। आयरके विजयीनेता श्री डी० वेलराके शासनकार्यमें अनेक बाधाएं उपस्थित हों।

आस्ट्रेलिया, जापान, चीन और अफ्रिकाका अधिकांश भाग आधिदैविक आधिभौतिक उपद्रव वा युद्धसे क्षतिग्रस्त होगा। न्यूजीलैण्ड और पुर्तगालके मन्त्रीमण्डलोंमें अचानक परिवर्तन होगा। धुरी राष्ट्रोंको अनेक आपत्तियाँ सहनी होंगी। मित्र राष्ट्रोंकी महत्त्वाकांक्षाएं बढ़ती जावेंगी। अगस्त मास इंग्लैण्डके लिए भी चिन्ताकारक रहेगा, वहाँ अधिकांश भागमें सांसर्गिक रोग और अग्नि जल तथा वायुसम्बन्धी उपद्रवोंसे मृत्यु संख्या अधिक होगी।

रेल्वे, पोस्ट, तार विभाग और समाचारपत्रोंकी स्थिति चिन्ताजनक रहे। असमयमें वर्षा हो। विभिन्न प्रान्तोंके मजदूरवर्गमें असन्तोष बढ़कर कई बड़े-बड़े कारखानोंमें हड़ताल जैसी स्थिति उत्पन्न हो। राजकीय वातावरण अशान्त रहे। मङ्गल शनि के गुणधर्मसे योद्धा सेनापति डाक्टर सर्जन जल स्थल एवं वायवीय सेनाके अधिकारी आदि पर अनेक आपत्तियाँ आवें। अपघात अनैतिक कार्य घटस्फोट षड्यन्त्र एवं आश्चर्योत्पादक अत्याचार अधिक हों। व्यवस्थापिका सभाओंमें राजपक्ष और प्रजापक्षमें मतभेदके कारण तीव्र विरोध हो कर एकाधिकबार प्रजापक्षकी विजय हो। प्रचलित एक सत्तात्मक राज्यपद्धति अधिक समय तक टिक नहीं सकेगी। शनि मङ्गलके कारण यूरोपियन-टर्की, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, हङ्गरी, स्पेन आदिके तैल-संग्रहालयों शस्त्रागारों और सैनिक शिविरों पर अग्निविस्फोट अधिक होंगे।

व्यापार

इन तीन मासोंमें व्यापारकी स्थिति भी बड़ी भयङ्कर होगी। कई वस्तुओंके भाव अचानक ऊपर नीचे होते रहेंगे। जिससे अनेक व्यापारियोंकी स्थिति खराब हो जावेगी और कई बन भी जावेंगे। ऐसी विषमस्थितिमें व्यापार बहुत सावधानीसे करना चाहिए। यद्यपि प्रत्येक वस्तुके भाव मूल तेजीकी ओर ही चलेंगे तथापि बीच-बीचमें कई वस्तुओंमें सहसा मन्दीकी सम्भावना है, अतः किसी अनुभवी विद्वान् ज्योतिषीकी सम्मतिसे व्यापार करना हितकर होगा। इसी अङ्कमें आगे अर्थस्तम्भमें हमने भारत के दो-तीन (तेजीमन्दीके अनुभवी सुप्रसिद्ध) विद्वान् ज्योतिषियोंके लेख प्रकाशित किये हैं। पाठक अनुभव करके उनसे लाभ उठावें।

आषाढ़ी १५ को वायुपरीक्षा

उक्त तीन मासोंके ग्रहयोग बहुत भयङ्कर विनाश सूचक हैं। यदि भगवत्कृपासे आषाढ़ शु० १५ ता० ५ जुलाईको सूर्यास्तके समय जिन प्रान्तोंमें वायुका शकुन अच्छा रहा तो ग्रहयोगोंका अनिष्ट परिणाम उन प्रान्तोंमें अधिक नहीं होगा, अन्यथा घोर विप्लव होगा। लिखा भी है —

यदा श्रेष्ठतमाऽऽषाढी ग्रहयोगातिदारुणा।
तदाऽनावृष्टिर्न दौष्ट्यं व्याधिश्च विग्रहोऽपिवा॥

आषाढ़ी पूर्णिमाको ठीक सूर्यास्तके समय यदि वायु पूर्वका हो तो वर्षा श्रेष्ठ। अग्निका हो तो कृषि हानि। दक्षिणका हो तो वर्षा हानि। नैर्ऋत्यका हो तो खेतियोंका नाश। पश्चिमका हो तो वर्षा अधिक। वायव्यका हो तो वायुका जोर। उत्तर और ईशान का हो तो कृषि (उपज) वृद्धि, सुभिक्ष, जगत्में आनन्द। वायु जोरका हो तो पूर्ण, साधारण हो तो मध्यम, और अल्प हो तो थोड़ा फल जाने। इसी पूर्णिमाको रात्रिमें जिस प्रान्तमें चन्द्रमा निर्मल रहे, अर्थात् बादल न हो तो उस प्रान्तमें दुर्भिक्ष पड़े। विज्ञ पाठकोंको चाहिए कि इस दिन अपने-अपने नगरमें वायुपरीक्षा अवश्य करें।

व्यापारिक तेजी मन्दी और ज्योतिष

[लेखक—श्री प्रो० बी० सी० मेहता म्यूनिसपल कमिश्नर]

प्राय: दो वर्षसे मैं 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकोंकी सेवा निरन्तर कर रहा हूँ, और मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पाठकोंने केवल मेरी तेजी-मन्दी के आधार पर व्यापारमें लाभ ही नहीं उठाया होगा बल्कि ज्योतिष पर भी उनकी श्रद्धा विशेष बढ़ी होगी। यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी तेजी-मन्दी केवल पाश्चात्त्य एवं पूर्वीय ज्योतिषके अलभ्य सिद्धान्तोंके आधार पर ही निकाली जाती है; न कि किसी देवी देवताओंके इष्ट व अनुष्ठानोंके आधार पर। जैसा कि कई लोग यह भ्रम दिलाते हैं कि बिना दैवी-शक्ति व इष्ट वा अनुष्ठानोंके तेजी-मन्दी निकाली ही नहीं जाती है और हमें देवीने स्वप्नमें यह तेजी-मन्दी बताई है, इत्यादि। ऐसा कहने वालोंको ढोंगी वा धोखेबाज समझना चाहिये, और जनताको चाहिये कि ऐसे मनुष्योंसे बचें। क्योंकि ऐसे व्यक्तियों की संख्या भारतमें दिन-दिन बढ़ रही है। आये दिन भोली जनता इनके आकर्षक विज्ञापनोंसे आकर्षित हो कर हानि उठाती है।

यह लेख आपको जुलाईके प्रारम्भमें मिलेगा। मेरा ध्यान है कि उस समय तक चांदी-सोनेमें काफी मन्दी आ चुकेगी। जो इस समय १३५ और १४० के भाव चांदीके और ८०।७८ सोनेके हो गये हैं, ये स्वप्नवत् दिखाई देंगे। मेरा विचार ऐसा है कि जुलाई के प्रारम्भमें हमें चांदी ११७ के लगभग व सोना ७० के लगभग मिलेगा। यह बात तो निश्चित है कि जून मासमें चांदीका ट्रेण्ड काफी मन्दीका हो चुकेगा, जैसा कि मैं अपने गत अङ्कके लेखमें लिख चुका हूँ।

अब यहां थोड़ा बाजार स्थाई होगा। ता० ३ तक जो कुछ चांदी-सोनेके नीचे भाव हो गये तो काफी अर्से तक रहेंगे। क्योंकि एक बार इस मासमें चांदी-सोनेमें थोड़ा वापिस उछाला आनेके संयोग बनेंगे। क्योंकि ता० ८ जुलाईको बुध कर्कराशिमें प्रवेश होता है, तथा ता० ११ को शुक्र कर्कराशिमें, यह दोनों योग खासकर चांदी-सोनेमें तेजीका चमत्कार अवश्य लावेंगे। इधर मंगल सिंह राशिमें १ जुलाई को प्रवेश करता है यह रुईमें भी तेजी के कारण उत्पन्न करता है। यद्यपि विशेष तेजी रुईकी अभी देरीसे आवेगी, फिर भी कुछ गर्मी अवश्य आवेगी। चांदीमें अब ता० ११ से तीन ग्रह तेजीके पक्षमें होते हैं और दो ग्रह मन्दीके पक्षमें। अत: इस मासमें दोतरफी घटाबढ़ीकी विशेष सम्भावना है।

विशेष विस्तृत रूपसे यदि देखा जाय तो ता० ५ को मंगल ग्रहसे बृहस्पतिकी युति होगी, यह युति प्रत्येक वस्तुमें तेजी लाने वाली है। खासकर इसका प्रभाव रुई और चांदी-सोने पर विशेष रूपसे दृष्टि-गोचर होगा। परन्तु दूसरे ग्रहयोग मन्दीके भी चालू हैं, सो तेजी रुकेगी नहीं और ता० १० तक वापिस मन्दी आ जावेगी। ता० १२ को फिर तेजी आवेगी और ता० १३ को वापिस मन्दी।

इस प्रकार यह दो हफ्ते दुतरफी अच्छी घटाबढ़ी में जावेंगे, अर्थात् दो दिन तेज़ी तो तीन दिन मन्दी।

ता० १५ जुलाईको शुक्र राहुकी युति। ता० १७, १८, १९ को बुध हरशल शनि, मंगल और शुक्र नेपच्यूनका लगातार सक्स्टाईल बनता है जो निश्चित चांदी और रुईमें अच्छी तेजीका द्योतक है। ता० १५ जुलाईको तेजीका व्यापार शुरू करके १९ जुलाईको काट देना चाहिये।

चूंकि ता० २० जुलाईको विशेष मन्दी आनेकी सम्भावना है। यह मन्दी ता० २४ तक रहेगी।

फिर ता० २५ जुलाईसे अच्छी तेजी आनेकी सम्भावना है, कारण बृहस्पति सायन कन्याराशिमें प्रवेश इस दिन करता है, जो रुई चांदी वा अन्य व्यापारिक वस्तुओंमें तेजी लावेगा।

अगस्तका महीना मंगल हरशल केन्द्रयोगसे प्रारम्भ होता है जो दुतरफी घटाबढ़ीका द्योतक है। ता० २।५।७ को तेजी आकर ता० ८ को फिर मन्दी आनेकी सम्भावना है। ता० ८ से १५ तक रुईमें विशेष मन्दी व चांदी-सोनेमें थोड़ी मन्दी आवेगी। यह सुनहरी समय व्यापारियोंके लिये दिखाई देता है, क्योंकि इस मन्दीसे व्यापारियोंको उस अच्छी तेजीके व्यापारमें घुसनेका मौका मिलता है जो बहुत जल्दी आने वाली है।

क्योंकि ता० १६ अगस्तको शुक्र सेक्स्टाईल शनि और मंगलका कन्याराशिमें प्रवेश होना यह बताता है कि एक बार बहुव जल्दी रुई और चांदी-सोनेके बाजारमें अनायास जोश आ जावेगा और एक ऐसा कारण वा वातावरण उत्पन्न होगा कि जिसमें चारों तरफ तेजी ही तेजी नजर आवेगी और बीचमें नफे वालोंकी बेचवालीसे थोड़ी मन्दीके रीएक्सन आ सकते हैं। परन्तु इससे डरना नहीं चाहिये और तेजीका व्यापार बराबर करते रहना चाहिये। ता० ४ सितम्बर तक बराबर तेजीका ट्रेण्ड ही रहेगा।

ता० ६ सितम्बरको मन्दीके योग दिखाई देते हैं। अतः ता० ४।५ तक तेजीके व्यापारको साफ कर देना चाहिये। परन्तु फिर भी मन्दीके व्यापारमें पड़नेकी सलाह नहीं है। तारीख १० अगस्त तक दोनोंतरफी घटाबढ़ी विशेष चलेगी। ता० १० को तेजी और ११।१२ को मन्दी और १३ को तेजी आवेगी। ता० १३ से २१ तक तेजीका ट्रेण्ड रहेगा। तथा चांदी-सोना रुईमें अच्छी तेजी आनेकी सम्भावना है। ता० २२ से २५ तक फिर मन्दी आवेगी। अतः ता० १३ को खरीद कर २१ को डबल बेचना चाहिये, जो २५।२६ तक बराबर कर देना चाहिये। ईश्वर चाहेगा तो अच्छा लाभ मिल जावेगा।

किसीसे !

[कवयिता—श्री पं० चन्द्रदत्तजी शास्त्री जोशी "चन्द्र"]

दूर पड़े ही देख रहा था सुन्दर-सुन्दर तेरा रूप।
सौरभसे पुलकित था मानस तू था अद्भुत और अनूप॥
अब भी तेरा कानोंमें वह नाद कर रहा गुञ्जन।
उत्कण्ठासे नेत्र नहीं पाते हैं अब भी आकुञ्चन॥
अब भी तेरा मधुर हास कानोंमें करता है निवास।
अब भी सब कुछ तेरा मिलिन्द मेरे मनके है आसपास॥
पर अब तक भी देख नहीं पाया था तेरा अन्तरङ्ग।
लघुतम—कायामें तेरे है उत्तम सुजातिका रूप रङ्ग॥

अब तक आँखोंमें समा रहा था वह तेरा आकार एक।
इस हृदय-पटल पर लिखा गया है अब तेरा संसार एक॥
मधुकरितामें समझा था मैं आनन्द तुम्हारे गुण केवल।
अब जाना सौरभसुरूप कुसुमोंका त्यागी परम-प्रबल॥
अमृत वचन कर इधर हृदयके कुसुमपुञ्जके कुञ्जोंमें।
रसधारासे जिधर बहा है अलि तेरे मृदु-गुञ्जोंमें॥
आ! आ!! तेरा मान नहीं कर पाया था कुछ अब तक मैं।
हृदयवाटिकाके कुसुमोंको भेंट चढाऊं पदतलमें॥

त्रैमासिक भविष्य प्रकाश (तेजी मन्दी निर्णय)

[लेखक— गणकभास्कर दैवज्ञमणि ज्योतिर्विद्यारत्न श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य]

जिस ग्रहस्थिति द्वारा प्राणियोंका भूत भविष्य वर्तमान देखा जाता है, उसी स्थिति द्वारा ग्रहोंके परिभ्रमण अंशात्मक योगों द्वारा व्यापार भविष्य भी देखा जाता है। भविष्यकी तेजीमन्दी पहिलेसे जान लेनेके लिये सबसे पहिले (१) शुद्धपञ्चाङ्गका ग्रह-गणित। (२) सर्वतोभद्र-चक्रके वेधज्ञान द्वारा वस्तुओंका वेधफल। (३) जिस समयकी तेजीमन्दी जाननी हो उस समयके ग्रहयोग। (४) जनरल किस ग्रहका अधिक प्रभाव किस वस्तु पर होता है। (५) चन्द्र शृङ्गोन्नतिके फलसे मिलान। (६) तिथि क्षय-वृद्धिके फलसे मिलान। (७) वक्री मार्गी ग्रहोंके साथ वस्तुका सम्पर्क। इन सात प्रकारोंके द्वारा निर्णय करके तेजीमन्दीका भविष्य द्योतक ज्ञान यथार्थ होता है। भविष्य द्योतक तेजीमन्दीके अपूर्व ज्ञानके विकासके लिये खास ध्यानमें रखनेकी बात यह है कि एक प्रधान तेजीके योगके साथ और भी कई योग तेजीके हो तो उनके संयुक्त बलसे उस समय अवश्य ही बड़ी तेजी होगी। इसी प्रकार मन्दीके योगोंके साथ अवश्य ही बड़ी मन्दी होगी। स्वानु-भूत चांदी, सोना, रुईके तेजीमन्दीके सीक्रेट पाइन्ट निम्न हैं—

(१) मीन, मेष, वृषभराशिमें सूर्य शुक्रके साथ बड़ी तेजी करता है, अन्य ग्रहोंके साथ मामूली।

(२) शनि और राहुकी युति मूल तेजीका कारण है।

(३) पुष्य उत्तराफाल्गुणीमें राहु रुईकी मूल तेजीका कारण है।

(४) पुष्यनक्षत्रमें सूर्य शुक्रके साथ मन्दी होती है।

(५) मकर और सिंहमें गुरु मन्दीका द्योतक है।

(६) शनि और गुरु साथमें वक्री होनेसे मन्दी होती है।

जनरल पीरयड तेजीमन्दी देखनेका तरीका यह है कि जिस समयकी तेजीमन्दी जानना हो (जिस घंटा, दिन, सप्ताह, महीने या वर्षकी घटबढ़ जानना हो) उस समयके तमाम योगोंको छांटकर मन्दीके योगों को बाएं हाथकी ओर और तेजीके योगोंको दायें हाथकी ओर लिखिये। फिर उनके बलाबल पर विचार करिए। जिसके पाइण्ट अधिक मिले वही जनरल लाईन होगी। टके वारकी ऊंचाई नीचाई जाननेके लिए तेजीमन्दीकारक बलवान् योगके दीप्तांशोंकी कक्षा वृद्धि एवं ह्रासकारक योगोंके महत्त्व को ऋणधन करके वास्तविक निर्णय होता है। आज कल भारतवर्षमें प्रायः तेजीमन्दीके गूढ़ रहस्यको जानने वाले व न जानने वाले भी एडवरटाईजमेण्ट करके व्यापारी जनताको धोखा दे रहे हैं। अधिकांश उनके चांस गलत होनेसे जनताको बड़ी हानि उठानी पड़ती है। उसका मुख्य कारण यह है कि एक योग वा एकमतसे कभी चांस सही नहीं हो सकता। इसलिए व्यापारी जनता चांस लिटलेचरोंके चक्करमें न पड़ें और अपने धनको व्यर्थ खर्च न करके नुकसानीके बचनेका यत्न करें। इस कार्यमें पूर्ण सफलता प्राप्त करनेके लिये हमने चांदी, सोना, रुईकी तेजीमन्दी निकालनेके सीक्रेट पाइण्ट तैयार किये हैं। वह १०० पाइण्ट तेजीके और १०० मंदी के हैं। केवल केतकीपञ्चाङ्गको सामने रखकर बायें और दाएं लिखकर जिस पक्षसे अधिक नम्बर प्राप्त हो वह जनरल लाईन समझके और नम्बरोंके ही बलाबल पर टकोंकी तेजीमन्दी समझें। बलाबलका तरीका चार्ट पोइण्टके नीचे दिया गया है।

त्रैमासिक व्यापारप्रदर्शक ग्रहयोग

वार ता० मास	समय	ग्रहयोग	व्यापारिक फल
श० १ जुलाई	३-२३	बु० सार्द्धकेन्द्र मं०	चांदी सोना रुई तेजीकी सूचना दे रहे हैं।
र० २	७-२४	बु० एक रा० हृ०	अलसी और मूंगके खरीदनेके चांस हैं।
चं० ३	०-३०	बु० युतिः शु०	चांदीकी सुर्खी बारदानेको साथ लेगी।
मं० ४	१-४	चं० प्रतियोग हृ०	मुनाफा मिल रहा है तो चांदी सोनेका स्टाक कम करो
बु० ५	१८-२३	मं० युतिः गु०	अचानक सोना और अलसी भड़केंगे।
गु० ६	१४-१४	चं० युतिः शु०	मन्दीका रङ्ग देखो तो चांदी रुई स्टाक करो।
शु० ७	१५-४५	चं० त्रिकोण नै०	गुवार और उड़दके वायदे खरीदना श्रेष्ठ है।
श० ८	७-३०	मं० एक० रा० रा०	चांदी, सोना, रुई, अरहरके ऊंचाई पर ध्यान रखना।
र० ९	८-३६	गु० युतिः चं०	सोना अजीब रङ्ग बदलता है, क्या समझे।
चं० १०	७-३०	बु० युतिः रा०	तिलहनोंके भावोंमें जोश पैदा होगा।
मं० ११	२-५२	चं० त्रि० शु०	चांदी सोना रुईके मुनाफे पर विचार करो।
बु० १२	१०-३०	बु० द्वि० रा० नै०	बारदाना और अलसी मुनाफा दे रही है क्या।
गु० १३	१८-३०	गु० एक० रा० रा०	मन्दी आवे तो चांदी सोना रुई खरीदनेके चांस हैं।
शु० १४	११-२३	शु० सार्धके० हृ०	ख्याल रखना तेजीके भाव टिके न रहेंगे।
श० १५	१०-२१	शु० युति० रा०	तात्कालिक चांदी सोनासे लाभ करो।
र० १६	३-४५	चं० केन्द्र मं०	चांदी सोना रुईकी तेजी अचानक मन्दी दिखलायगी
चं. १७	३-३०	मं० द्वि० रा० श०	सटोरियोंकी जान डबल बेचाण करनेमें है।
मं० १८	१३-४०	चं० युतिः श०	बारदाना और मूंगके नफेका विचार करो।
बु० १९	१६-६	र० सा० के० हृ०	बाजारका टोन क्षण-क्षणमें बदलेगा।
गु० २०	१३-५	शु० ए० रा० श०	रुई और सोनेकी रफ्तार चांदीके विपरीत होगी।
शु० २१	१-७	चं० युतिः शु०	चांदी और अलसी नफा पेश करना चाहती है।
श० २२	७-४	र० ए० रा० गु०	अचानक चांदी सोने पर तेजीकी खबर है।
र० २३	१८-१४	चं० युति० मं०	सोनेकी नरमाई चांदीको साथ लेगी।
चं० २४	३-४५	चं० केन्द्र हृ०	चांदी, सोना, रुईके वायदेके चांस चमक रहे हैं।
मं० २५	६-३०	र० द्वि० रा० नै०	मुनाफा तात्कालिक चांदी सोना पेश करें तो छोड़ना नहीं
बु० २६	१-४७	चं० केन्द्र श०	बारदाना और तिलहन मन्दीकी सूचना देते हैं।
गु० २७	१३-३०	बु० ए० रा० रा०	मूंग और उर्दका वायदा बेचाण करो।
शु० २८	१४-१०	चं० त्रि० श०	वर्षाके साथ साथ चांदी ऊंची होगी।
श० २९	१७-३०	बु० युतिः गु०	यदि एक बाजार चमके तो मुनाफा मत छोड़ो।
र० ३०	१५-५६	चं० केन्द्र गु०	सोनेका स्टाक अच्छा नफा पेश करेगा।
चं० ३१	१२-३०	चं० युतिः हृ०	चांदी सोना रुई खरीदनेके चांस समझो।
मं० १ अगस्त	१७-५	मं० द्वि० रा० रा०	बाजारका रुख धारणासे अलग चलेगा।
बु० २	५-२६	चं० युतिः श०	अलसी और अरहर मित्र बनकर लाभ पहुँचायेगी।

गु० ३		१८-४०	चं० युतिः रा०	मुनाफा मिल रहा है तो स्टाक कम कर दो।
शु० ४		१८-३७	सू० द्वि० रा० ह०	तेजीकी गर्म हवा टिकाऊ नहीं है।
श० ५	अगस्त	१२-४०	चं० युतिः शु०	सोनेकी खरीद चांदी बेचाए ही चांस है।
र० ६		२-३७	चं० युतिः गु०	बाजारका टोन दुनियाकी तरफ देखेगा।
चं० ७		०-३०	चं० युतिः मं०	अचानक मंदी आवे तो माल पोते करो।
मं० ८		६-३०	बु० सा० के० रा०	कल मंदी आज नफा दे तो सोदा बराबर कर दो।
बु० ९		२३-११	चं० त्रि० शु०	नवीन वायदा मंदीका करना ही चांस है।
गु० १०		१०-५	सू० सा० के० ने०	खुलासामें सोना रुई खरीदना।
शु० ११		३-२६	चं० त्रि० बु०	तिलहन एक दफा मंदीका चकमा देगी।
श० १२		६-३०	सू० सा० के० मं०	तेजीका पीरयड़ सफेद वस्तुका समझो।
र० १३		२२-५	गु० युतिः शु०	सोने की तकदीर क्रांस पैदा करेगी।
चं० १४		१७-५१	र० द्वि० रा० ह०	चांदी और रुईका डबल बेचाए ही चांस है।
मं० १५		१-२८	चं० युतिः श०	भड़कीले भाव अचानक पैदा हो तो नफा लो।
बु० १६		९-९	शु० द्वि० रा० श०	बाजरा ज्वार चना सुर्खरंग दिखलायेंगे।
गु० १७		१६-८	चं० युतिः मं०	सोनेकी तेजी स्पेशल राय दे रही है।
शु० १८		०-३०	र० त्रि० ह०	चांदी, रुई, बारदाना खरीदना ही चांस है।
श० १९		१-५५	र० युतिः चं०	आजका नफा फिर नहीं मिलेगा।
र० २०		२१-२	शु० सा० के० रा०	चांदी, रुई, सोने पर मंदी छायेगी।
चं० २१		७-०	चं० युतिः बु०	व्यापारी नोट करलें (स्टाक) नुकसानी देगा।
मं० २२		१४-२८	चं० केन्द्र श०	चांदी रुईका सोदा देखकर करना।
बु० २३		१-१४	चं० त्रि० ह०	बारदानेके जोशिले भाव आवें तो स्टाक कम करो।
गु० २४		६-२०	चं० केन्द्र रा०	सोना लम्बे चांसकी स्पेशल राय दे रहा है।
शु० २५		०-३०	मं० द्विं० रा० रा०	रुई का टोन दिनमें दश बार चेंज करेगा।
श० २६		१७-५	चं त्रि० रा०	चांदीके नफेवाले ऊंचाई पर विचार करो।
र० २७		११-२३	चं केन्द्र गु०	अचानक मंदी आई तो नफा जाता रहेगा।
चं० २८		९-५४	बु० युतिः शु०	आजकी राय माल पोते करना बताती है।
मं० २९		२०-२	चं० युतिः श०	तेजीकी चमक सफेद वस्तुओं पर होगी।
बु० ३०		१९-५९	चं० युति रा०	गल्लेके नफेवाले जरा मुनाफे पर विचार करें।
गु० ३१		१३-३०	र० युतिः शु०	अलसीका टोन तेजीकी सूचना दे रहा है।
शु० १	सितम्बर	४-१	सू० द्वि० रा० श०	चांदी और रुईकी तेजी पर्याप्त हो रही है।
श० २		२३-१०	चं० द्वि० ह०	आजका रुख फिर नहीं मिलेगा।
र० ३		१३-३२	चं० युतिः बु०	सोनेका बाजार सुस्त पड़नेवाला है।
चं० ४		३-५९	चं० त्रि० रा०	वर्षाकी खेंच गल्लेमें तेजी लावेगी।
मं० ५		५-३०	गु० द्वि० रा० श०	चांदी सोना रुईके नफे पर विचार करो।
बु० ६		८-०	शु० युतिः नै०	समय मिले तो रुई चांदीकी ४ पीरयडीकल रिपोर्ट तलब करो।

गु० ७	०-४	चं० त्रि० गु०	विचित्र बाजार घण्टे-घण्टे पर तबदील होगा।
शु० ८	७-०	बु० केन्द्र ह०	चांदी, रुई सोना पर उलट फेर बहुत होगी।
श० ६	११-६	चं० युतिः ह०	व्यापारी केवल धारणाके भरोसे न रहें।
र० १०	१-०	बु० सा० के० रा०	सितम्बरका व्यापार निराशाजनक समझो।
चं० ११	१६-४८	चं० युतिः श०	चांदी, रुईकी खरीदके लिए लम्बे चांस हासिल करो।
मं० १२	१३-३०	मं० केन्द्र श०	आजका बाजार तत्काल मुनाफा पेश करेगा।
बु० १३	७-३०	बु० द्वि० रा० श०	अलसीके स्टोकवाले खुशी मनायेंगे।
गु० १४	१६-०	शु० त्रि० ह०	चांदीके स्टोकवाले हताश होंगे।
शु० १५	०-०	मं० ए० रा० गु०	बाजारोंमें नवीन उथल पुथल धैर्य छुटा देगी।
श० १६	४-०	गु० सा० के० रा०	चांदीकी सेशल राय खरीदनेकी है।
र० १७	१८-७	चं० युतिः सू०	बाजार गिरे तो डबल खरीदो।
चं० १८	११-४२	चं० युतिः नै०	आजकी मंदी फिर नहीं मिलेगी।
मं० १६	०-५५	चं० केन्द्र श०	सोना, चांदी, बारदानाके नफे पर विचार करो।
बु० २०	११-३०	बु० द्वि० रा० श०	चांदी और रुईका दिल खोल कर सोदा करो।
गु० २१	१६-३०	बु० सा० के० रा०	बाजार इकतरफा चलना चाहता है।
शु० २२	२०-४	चं० त्रि रा०	देखो रुख तबदीली करते समय सावधान।
श० २३	२३-०	बु० युतिः गु०	आखरी पीरयड तेजीका होगा।
र० २४	६-०	चं० युतिः ह०	नये वायदाके लिए चांदी रुई खरीदो।
चं० २५	१७-३७	चं० केन्द्र सू०	दैनिक रिपोर्ट व्यापारमें अच्छा साथ देगी।
मं० २६	२३-४	चं० केन्द्र मं०	चांदी, सोना, रुई पर तेजी आना चाहती है।
बु० २७	५-३०	चं० युतिः रा०	मुनाफा मिल रहा हो तो ऊंचाई पर विचार करो।

त्रैमासिक व्यापारका सारांश

(आषाढ़ शु० १० से श्रावण शु० १० तक)

श्रावण मासमें पांच शुक्रवार हैं; प्रजामें सुखशांति हो, व्यापारमें तेजी मन्दी बहुत जोरदार हो। श्रावण कृ० ३० को सूर्यग्रहण और इसी दिन कर्कराशि पर (सू० चं० बु० शु० रा०) योग पड़ा है, अतः प्रजामें रोग, देशमें उत्पात, राजाओंमें घोर युद्ध, प्रजामें अनेक प्रकारकी पीड़ायें उत्पन्न हों। ग्रहणके १० दिन पहिले और पीछे चांदीमें १०) टके तेजी १५) टके मन्दी, सोनेमें ४) टके मन्दी १२) टके तेजी आवे, रुईमें एक दम ५०) टकेकी तेजी आवे।

(श्रावण शु० १० से भाद्रपद शु० १० तक)

इस मासमें पांच शनिवार हैं, प्रजमें दुर्भिक्ष हो। कहीं वर्षा अधिक हो, भूकम्प महामारीका भय हो, हैजा विशेष प्रकोप धारण करेगा। संसारमें चोरोंका उपद्रव बहुत होगा। दुनियांकी स्थिति डांवांडोल होगी। इस मासमें सिंहराशि पर पञ्चग्रही योग व्यापारमें भारी उथलपुथल करेगा। चांदी १०) टके तेज और ३०) टके मन्दी, सोना ४) टके मन्दा ११) टके तेजी। रुईमें १००) टके घटाबढ़ीका रियेक्शन ४ दफेमें आवेगा। व्यापारका टोन वायुकी तरह उड़ान मारेगा। व्यापारी दिनमें घण्टे-घण्टे पर हानि लाभका अनुभव करेंगे। मेरे ख्यालसे बिना आधारका व्यापार करना उचित नहीं है।

भाद्रपद शु० १० से आश्विन शु० १० तक

इस मासमें पांच रविवार होनेसे पशुओंको पीड़ा, बच्चोंको विशेष पीड़ा होगी। संसारमें दुर्भिक्ष

तेज रूप धारण करेगा। मनुष्योंको पेटकी बीमारी अधिक हो। राष्ट्रोंमें मतभेद। शत्रुओंके प्रबल उपद्रवके कारण अशान्ति विशेष हो। (र० मं० शु० नै०) कन्याराशि पर होनेसे व्यापारकी कायापलट होगी। रुई चांदी सोने पर जोरदार तेजी मन्दी होगी। चांदी १५), सोना ७) से १०), रुई ४०) टकोंकी तेजी में जाकर अन्तमें मन्दीमें गिरेंगे।

(नोट) इन तीन मासोंमें व्यापार करना और सांपको खिलाना बराबर है। व्यापारी खूब सोच समझ कर व्यापार करें।

विशेष सूचना—'श्रीस्वाध्याय'के ग्राहकोंको यह है कि मन्थली मासफलके सारांशके साथ दैनिक व्यापारिक फलका मिलान करके व्यापार करें, विशेष जानकारीके लिए स्पेशल रिपोर्ट व स्पेशल राय प्राप्त करें।

त्रैमासिक महर्घ समर्घ [तेजी मन्दी विचार]

[लेखक—ज्योतिर्विद् श्री राजाराम जैन, हस्तरेखा अङ्ग परीक्षा विशेषज्ञ]

रुई, सूत, कपड़ा—

(१) कर्कका शुक्र अपने २४ अंश तक सूत, रुई, कपड़ा १० जुलाईसे ३१ जुलाई तक भारी मन्दा करेगा।

(२) उपरान्त १६ अगस्त तक सूर्य राहु भी मन्दी करता रहेगा, रुई ५०) खंडी, सूत २) बण्डल, कपड़ा २५ परसेण्ट मन्दा करेगा, अगस्त मासके तृतीय सप्ताह में संग्रह करना हितकर है। आगे तेजी होगी।

चांदी, सोना—

तारीख ११ जुलाईको शनिका उदय होना, श्रावण कृष्ण अमावस पुनर्वसु नक्षत्र गुरुवारको सूर्यग्रहण होना, चांदी सोना पर १५ अगस्त तक भारी तेजीका रौला मचा देगा। तारीख १७ अगस्तको गुरु अस्त होगा, जोकि पर्याप्त मन्दी लानेकी सामर्थ्य रखता है। अगस्तके चतुर्थ सप्ताहमें संग्रह करना हितकर है। सितम्बरमें अच्छी तेजी नजर आवेगी।

गेहूँ, अरहर, चना, उड़द, सरसों—

सू० रा० शु० एक राशि पर योग, ग्रहण आदि योग भादवा मास तक गल्ले पर भारी तेजीके सूचक हैं।

सूचना—गत वर्षसे इस वर्षमें विशेष वर्षा आंधी तूफानादिके साथ होगी। आषाढ़ श्रावण मासमें काठियावाड़, गुजरात, मध्यभारत, पंजाब आदि प्रदेशोंमें महान् वर्षा तथा अन्य स्थानोंमें असामयिक विशेष वर्षा होगी। भादवामें गर्दोगुब्बार, कहीं वर्षा बेशुमार, अधिकतर वर्षाका अभाव रहेगा। अगस्त मासमें गुर्वस्त नाना प्रकारके रोग अक्टूबर मास तक करेगा।

भगवान् श्रीकृष्ण

[लेखक—राजकुमारगुरु श्री पं० तारादत्त जी राजज्यौतिषी]

[इस लेख और इसके आगेके "श्राद्धकी महत्ता" शीर्षक लेखकी पाण्डुलिपियाँ (प्रेस कापी) प्रेसमें मुद्रणविभागके कागजोंमें इधर उधर होगयी थीं, अन्वेषणमें विलम्ब होजानेके कारण उक्त दोनों लेख यथास्थान धर्मस्तम्भमें मुद्रित न हो कर यहाँ अर्थस्तम्भके मध्यमें प्रकाशित हो रहे हैं। आशा है विद्वान् लेखक इसके लिए हमें क्षमा करेंगे। —सम्पादक]

श्रावण पौर्णमासीके दिन श्रवण नक्षत्रका प्रभाव अधिक होता है। इस नक्षत्रके स्वामी विष्णु भगवान् हैं। "विष्णोः श्रोणा।" (तै० ३।१।२।५—६।।) 'श्रोणा श्रवणनक्षत्रमिति सायनः। इसलिए इस दिन वैष्णवी दिव्यशक्तियाँ विशेष रूपसे व्याप्त होती हैं। जिसके मूलमें इन दिव्यशक्तियोंसे पृथिवी पवित्र होती है, उसी उत्तम पक्षमें "रुद्राणां शङ्करश्चास्मि" इस अपने वचनके अनुसार अपनी विशिष्ट विभूति श्रीशङ्करदेवकी जया संज्ञावाली शुभ तिथि अष्टमीके दिन यज्ञपुरुष भगवान् श्रीकृष्णके रूपमें अवतीर्ण हुए हैं। "धाताहं विश्वतोमुखः" इस भगवद्वचनके अनुसार भगवान्की विशिष्ट-विभूति उन्हींके नाभि-कमलसे आविर्भूत सृष्टिकर्ता ब्रह्मदेवका नक्षत्र रोहिणी भी इस दिन था। बुधके अधिदेवता और प्रत्यधि-देवता भी विष्णुभगवान् हैं। बुध उस समय कन्या राशि और त्रिकोण स्थानमें था। इसलिए बुधवार के कारण भी इस दिन विशिष्ट वैष्णवी-शक्तियाँ व्याप्त थीं। इस प्रकार तीन प्रधान शक्तियाँ इस समय व्याप्त थीं।

उस समय चन्द्रमा अपनी उच्च राशिमें था। यह मातृकारक और मनःकारक भी है। इसलिए यह इस समय मातृ-कष्टनिवारण और मनोनिग्रहरूपा योगविद्याके प्रचारका सूचक था। सूर्य राशिबली होनेसे पितृ कष्टनिवारण, शासन-प्रणालीका सुधार और आत्म-विद्या प्रचारका सूचक था। क्योंकि सूर्य पितृकारक, राजकारक और आत्मकारक भी है। इसी प्रकार अन्य ग्रहोंकी स्थिति भी इस समय श्रेष्ठ थी।

सिंह उग्रराशि है। सूर्यसहित होनेसे उस समय इसकी अधिक उग्रता थी। इस उग्रताका प्रभाव दिनके समय अधिक था। इसलिए शान्ति-प्रिय भगवान् दिनमें प्रकट न हो कर शान्तिके अधिष्ठाता उच्चस्थ शुभ चन्द्रमाके द्वारा सूर्यके शान्त किरणोंके व्याप्त होनेके समय प्रकट हुए।

अर्धरात्रिमें सूक्ष्म रूपसे प्रकाशका प्रारम्भ और अन्धकारके नाशका आरम्भ होने लगता है। इसलिए यह समय भक्तजनोंके हृदयमें भावी अविद्याका अन्त और आत्मज्ञानके आविर्भाव का सूचक था।

सिंहार्कमें कृष्णपक्षमें ही चन्द्रमा उच्चमें होता है। इसलिए यह कृष्णपक्षका जन्म समय शुक्ल पक्षसे श्रेष्ठ था।

उस समय गो जातिकी राशिवृषमें उच्चस्थ लग्न-गत चन्द्रमा गायोंकी अत्यन्त उन्नतिका सूचक था। भगवान्से अधिष्ठित बुधकी राशि होनेसे मिथुनमें वैष्णवी शक्तियाँ विशेषरूपसे व्याप्त रहती हैं। इस प्रकार वृष मिथुनात्मक रूपसे गोसहित गोपाल भगवान् आकाशमें प्रकट हो रहे थे। इस प्रकार भगवानके आविर्भावका समय पूर्ण शुभ लक्षणोंसे युक्त था।

"अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः।
(श्रीमद्भागवत)

जिस प्रकार यज्ञपुरुषने भगवान् रामचन्द्रजीके रूपमें अवतीर्ण हो कर उत्तरायणको देवकर्मोपयोगी विशेष रूपसे बनाया, उसी प्रकार भगवान् कृष्णजीके रूपमें अवतीर्ण हो कर दक्षिणायनको विशेष रूपसे पितृ कर्मोपयोगी बनाया।

श्राद्धकी महत्ता

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथ जी शास्त्री बी० ए०]

हम आज 'श्रीस्वाध्याय' के धर्मस्तम्भमें श्राद्धके महत्त्वके विषय पर कुछ प्रकाश डालनेका प्रयत्न कर रहे हैं। चाहे व्याकरण और निरुक्त द्वारा श्राद्ध-शब्द के अनेकों अर्थ हों, परन्तु हम लोकप्रसिद्ध रूढ़ अर्थ का ही आश्रय लेते हैं। वह अर्थ है— "पूर्वजोंकी पूजा तथा सम्मान'। इस श्राद्धका इतना महत्त्व है कि प्रत्येक अभ्युदय चाहने वाले राष्ट्रको इसकी अत्यन्त आवश्यकता होती है। कोई भी राष्ट्र पूर्वजोंकी पूजाके बिना वास्तविक उन्नति नहीं कर सकता। राष्ट्रकी उन्नतिके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि राष्ट्रके सभी निवासी राष्ट्रको तथा राष्ट्रनिवासियोंको और विशेषकर अपने पूर्वजोंको बड़े सम्मानकी दृष्टिसे देखें। यदि राष्ट्रवासियोंके मनमें राष्ट्रके अतीतनिवासियोंके विषयमें सम्मान न होगा तो वे राष्ट्रका भी सम्मान नहीं कर सकते। जब राष्ट्रवासियोंमें राष्ट्रके प्रति सम्मानका भाव ही न हो तो उन्हें अपने राष्ट्रके लिए प्राणाहुति तक देनेका उत्साह कैसे हो सकता है? क्योंकि प्राणाहुति किसी सम्मान्य वस्तुके लिए ही दी जाती है। इस प्रकारसे पूर्वजोंकी पूजा राष्ट्रसेवाका एक मुख्य अङ्ग है। जो लोग अपने पूर्वजोंको पूजते हैं, उनके मनमें अपनी जातिके प्रति एक प्रकारके गौरवका भाव दृढ़ होता जाता है। यह जातिगौरव भी राष्ट्रसेवाका एक प्रधान अङ्ग है। यही कारण है कि प्राचीन समयमें ग्रीक रोमन आदि पाश्चात्त्य (आसुरी आर्य) जातियों तथा मिश्र, फिलस्तीन आदि देशोंकी सुमेरियन अनार्य जातियाँ भी पूर्वजोंकी पूजा में सदा तत्पर रहतीं थीं। इसी कारण इन जातियोंने उन्नति की और बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित किए। जातिगौरव हीके कारण वे लोग भी हमारे राजपूत वीरोंकी भाँति अनेकों युद्धोंमें लड़े। जिस जातिके पूर्वज अधिक सम्मान्य न भी हों, उस जातिको भी पूर्वज सेवा द्वारा बहुतसे लाभोंकी प्राप्ति होती है। फिर भला जिनके पूर्वज गौतम, कौशिक, उपमन्यु, भरद्वाज आदि ऋषि हों, जो कि न केवल अपने वंशजों द्वारा अपितु समस्त विश्व द्वारा पूजनीय हैं, उन लोगोंको पितृपूजासे क्या क्या लाभ हो सकते हैं, इसका कहना ही क्या। श्राद्धके समय हम सदा अपने पूर्वजोंके नामके साथ अपने गोत्र प्रवर आदिके नामका उच्चारण जब करते हैं तो शीघ्र हमारे मनमें यह भावना उत्पन्न होती है कि हम उन ऋषियोंकी सन्तान हैं जो कि सारे संसारके लोगोंसे सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। देवता लोग भी जिनको नमस्कार्य समझते हैं, जिन्होंने हमारे भारतवर्षकी विद्या, कला

"स (सूर्यः) यत्रोदङ्ङावर्तते देवेषु तर्हि भवति देवांस्तर्ह्यभिगोपायत्यथ यत्र दक्षिणावर्तते पितृषु भवति पितॄंस्तर्ह्यभिगोपायति।" (श० १।३।१।३।।)

प्रभुने इसी प्रकार शुक्लपक्षको विशेष रूपसे देवकर्मोपयोगी और कृष्णपक्षको विशेष रूपसे पितृकर्मोपयोगी बनाया। इसी प्रकार दिनको व्रतबन्धादि कर्मोंका उपयोगी और रात्रिको विवाहादि कर्मोंकी उपयोगिनी बनाया।

भगवान्के जन्म-समयमें जो दिव्य शक्तियाँ व्याप्त हुई हैं उनका अंश मास-तिथिके प्रभावसे प्रति वर्ष जन्माष्टमीके दिन प्रकट होता है। इसलिए भक्तिपूर्वक भगवान्की उपासनासे इन दिव्य शक्तियों का ग्रहण अत्यन्त आवश्यक है।

इस लेखका साररूप स्वनिर्मित श्लोकः—

चतुर्भुजाधिष्ठितखेटवासरे
चतुर्मुखाधिष्ठितभेऽतिशोभने।
त्रिनेत्रतिथ्यां हरिभाभिधानजा-
भिधानमासे भगवानवातरत्॥

आदिकी उन्नतिके क्षेत्रमें ऐसे बड़े बड़े काम किए हैं जिनसे सारा संसार चकित हो जाता है। अहा! हमारे पूर्वज कितने उच्च कोटिके थे। हमारे देशका कितना महत्त्व है, जिसने इस प्रकारके ऋषियोंको जन्म दिया। क्यों न हम भी अपने पूर्वजोंके जैसे महत्त्वको प्राप्त करें और क्यों न हम अपने राष्ट्रको फिर वैसा ही उन्नत बनाएं, जैसा हमारे पूर्वजोंने इसे बनाया था। हम आजकल भी इसी कारण सन्ध्या तथा स्नानके समय अपने नाम और गोत्रका उच्चारण करते हैं। नाम गोत्रके उच्चारणका वास्तविक रहस्य यही है। इसी कारण ब्रह्मचारी प्रतिदिन स्वनामगोत्र उच्चारण करके अपने गुरुको नमस्कार करते थे। इस प्रकार उच्चारण करनेसे विद्याके विषयमें श्रद्धा तथा संकल्पकी दृढ़ता उनके मनमें उत्पन्न होती थी। इसी कारण वे अतिपिता, अतिपितामहः पिता तथा पितामहसे भी बढ़ कर विद्वान् निकलते थे। यह है राष्ट्रिय दृष्टिसे श्राद्धका महत्त्व।

अब धार्मिक दृष्टिसे भी इस पर विचार किया जाएगा। राष्ट्रोन्नतिके नियम भी वस्तुतः धर्ममें ही अन्तर्भूत हो जाते हैं। राष्ट्रनीति नियमोंको धर्मसे पृथक् वस्तु मानना तो बड़ी भूल है। धर्मके दो फल होते हैं— (१) अभ्युदय (२) निःश्रेयस। राष्ट्र-नियम सभी अभ्युदय देने वाले होते हैं। अतः सभी धर्ममें ही गिने जा सकते हैं। मन्वादि धर्मशास्त्रों में भी अनेकों स्थलों पर राष्ट्र-नियमोंका धर्मरूपसे व्याख्यान किया गया है। राष्ट्र-नियमवेत्ता न्यायाधीश को इसी कारण संस्कृतमें धर्माध्यक्ष कहते हैं। इस प्रकारसे श्राद्ध राष्ट्र अभ्युदयकारी होनेके कारण प्रत्येक राष्ट्रवासीका परमधर्म है। व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज तथा राष्ट्रके अभ्युदयकारक नियमोंको ही प्राचीन समयसे धर्म कहा जाता है। इसके अतिरिक्त श्राद्ध भी एक प्रकारका यज्ञ है। तो जो फल साधारण यज्ञके हैं वे श्राद्धके भी हो सकते हैं। श्राद्धमें उत्तम पण्डितोंको निमन्त्रित किया जाता है। इससे श्राद्धकर्ता तथा अन्य उपस्थित लोगोंको सत्सङ्गका लाभ होता है। श्राद्धमें अग्निमें आहुति दी जाती है इससे आकाशमें रहने वाले भूतगण तृप्त होते हैं। पिण्ड आदि द्वारा जलचर तथा स्थलचर जीवोंको तृप्ति मिलती है। इस प्रकार श्राद्ध आर्योंकी विश्वप्रेम भावनाको दृढ़ करता है। श्राद्धमें दान दिया जाता है इससे एक तो हमें दानका पुण्य फल मिलता है और दूसरे दान देनेसे हमारे मनकी उदारता और विशालता बढ़ती है। इस प्रकारसे श्राद्धसे हमें अनेक दृष्ट तथा अदृष्ट फल प्राप्त होते हैं। अतः श्राद्ध बड़ा धर्म है।

अब कई लोग प्रश्न यह करते हैं कि श्राद्धमें दिया हुआ अन्नजल आदि नदीमें फेंक देनेसे पितरों को कैसे पहुँचता है? यदि इस प्रकार उन्हें अन्न पहुँच सकता है तो क्यों न जीवित मनुष्यके सङ्कल्पसे अन्नजल आदि प्रदान करनेसे उसकी भी तृप्ति होती है? इस बातका भी उत्तर हम देते हैं — अग्नि भी एक स्थूल भूत है और जल भी। जिस प्रकारसे मन्त्र द्वारा अग्निमें दी हुई हवि देवताके पास पहुँच सकती है, उसी प्रकारसे जलमें मन्त्र द्वारा दिया हुआ उदक्-तर्पण पिण्डादि भी पितरोंको मिल जाता है। वस्तुतः इस बातका रहस्य मीमांसाशास्त्रसे ज्ञात होता है। मीमांसाशास्त्र हमें बताता है कि यज्ञादि कर्म द्वारा साक्षात् स्वर्गकी प्राप्ति नहीं होती है, अपितु प्रत्येक मुख्य कर्म द्वारा एक संस्कार उत्पन्न होता है, जिसको "फल अपूर्व" कहते हैं। कर्मके अवसित होने पर भी यह अपूर्व स्थिर रहता है। और जब कर्म फलाभिमुख हो जाता है तो उस समय इस अपूर्वसे ही हमें स्व-र्गादिकी प्राप्ति होती है। जो यज्ञ तो ब्राह्मण अपने लिए करे उस यज्ञसे अपूर्व द्वारा उसीको फल मिलता है। परन्तु जो यज्ञ पुरोहित अपने राजा आदि यज-मानके लिए उसीका उद्देश्य तथा सङ्कल्प रखकर करे तो उस कर्मसे राजागत ही अपूर्व उत्पन्न होता है, जिससे राजाको ही उचित समय पर फल मिलता है। इसी प्रकार जो कर्म हम पिता पितामह आदिके लिए करते हैं उस कर्मका फल अपूर्व द्वारा उन पितरों को ही मिलता है। यदि पितर स्वर्गमें हों तो उनका स्वर्गसुख श्राद्ध द्वारा वृद्धिको प्राप्त करता है। यदि वे नरक या तिर्यक् योनिमें हों तो श्राद्धसे उनको वहीं अपूर्व द्वारा सुखकी प्राप्ति होती है, जिससे उनकी

दुःख शान्ति होती है। इस प्रकार श्राद्ध कर्मका फल पितरोंको अवश्य प्राप्त होता है।

अतिप्राचीन आर्य ग्रन्थोंमें पितृयज्ञका माहात्म्य गाया गया है। शतपथ आदि ब्राह्मणोंमें इसका उल्लेख मिलता है। वेद मन्त्रोंमें पितरोंके आवाहन और उनकी स्तुतियाँ मिलती हैं। पुत्र शब्दका निर्वचन वेदाङ्गोंमें "पुत्=नरकं, ततस्त्रायते इति पुत्रः" ऐसा मिलता है। अर्वाचीनकालिक आर्यविद्वानोंने तो मुक्त कण्ठसे पिण्डदानादिका महत्त्व गाया है। इन बातोंसे यह सिद्ध होता है कि श्राद्ध आर्योंका अति-प्राचीन अर्थात् सनातनधर्म है। यदि आजकल श्राद्धका कोई दुरुपयोग करे तो इसमें श्राद्धका कौनसा दोष है। यह तो श्राद्धका महत्त्व न जानने वाले पुरुषोंका दोष है। ऐसी अवस्थामें हमें अपने दोषोंका निवारण करना चाहिए, श्राद्धको कोसना नहीं चाहिए।

बर्ताव

[लेखक—श्री गङ्गानारायण जी अग्रवाल]

कुछ-न-कुछ करते ही रहना यह भूतमात्रका स्वभाव है। जिनमें स्वातन्त्र्य-शक्तिका विकास अधिक है, वे स्वतन्त्रतासे तथा जिनमें पारतन्त्र्य-शक्तिका विकास अधिक है, वे परवश हो कर कर्म करते हैं। कर्म करना यह प्रत्येकके लिये अपरिहार्य है। यह एक सृष्टिका अटूट नियम है। मृत्युलोकमें मनुष्य ही सबसे अधिक स्वतन्त्र है, अतः निकम्मा बैठना मनुष्य कभी सहार नहीं सकता। इसी नियमानुसार किसी न किसी इधर उधरके उपद्व्यापमें मनुष्य लगे ही रहते हैं। कारण यह स्वभाव है। परतन्त्रतासे ग्रस्त राष्ट्रोंके लिए कोई भी कार्य सुचारु रूपसे चलाना अशक्य है। पारतन्त्र्य अकर्मण्य बना देता है। संसार परिवर्तनशील है। परिवर्तनके पथके पथिकको सुख तथा दुःख ये दोनों ही सहने होंगे; किन्तु दुःखको सहना सभी अवांछनीय समझते हैं। वर्तमान समय अधिक परिवर्तनकी ओर जा रहा है। अकर्मण्यको जब कोई काम ही नहीं दीखता है, तो खाली बैठने से, 'बातों ही में क्यों न समय व्यतीत किया जाय, समय तो किसी न किसी प्रकार बिताना ही है।' ऐसा समझ कर कोई कहता है कि यूरोपीय राष्ट्रोंमें जो अधिक बली होगा वही सारे संसारका चक्रवर्ती राजा होगा। कोई कहता है नहीं! इस समयके पश्चात् सत्ययुग (सुशासन) आयेगा। संसारका प्रत्येक देश स्वतन्त्र होगा। एक देश दूसरे देशके साथ आर्यत्व का व्यवहार करेगा। कोई कहता है कि हमको इन बातोंसे कोई अर्थ नहीं। अमुककी लड़की अपने घर वालोंके कथनानुसार कार्य नहीं करती; हमारे लड़के आपसमें प्रेम नहीं करते; मेरी पुत्र बहू मेरी घरवाली की वृद्धावस्थामें कुछ भी सेवा नहीं करती। वह देखो! उस ग्रामके मुखियाके पुत्रकी बहूने आ कर क्या ही अनर्थ कर डाला! आते ही घरके बटवारे होने प्रारम्भ हो गये।

घरोंमें स्त्रियाँ चरखा कातते समय अथवा स्यापों (मृत्युशोक प्रदर्शन) के समय जब कभी किसी प्रकार एकत्रित होती हैं, तो यही झगड़े लिये बैठी रहती हैं कि मेरा लड़का कहनेमें नहीं; मेरी बहू मेरी बात नहीं मानती। मेरे तो दिन ही दुष्ट हैं। मैंने तो पाप बहुत किये हैं। वह तो सचमुच ही बड़ी सौभाग्यवती है। अरी बहिन! अब तो कलयुग का प्रभाव है कि कोई किसीको सुख नहीं देता; चाहे किसीके साथ कितना ही अच्छा करो, भलाईका प्रभाव कलयुगमें उल्टा ही होता है। अमुक लड़केकी दशा बड़ी ही शोचनीय थी। पिता मर गया था। माताने अनेकों कष्ट सहकर उसको पढ़ा कर अच्छे काम पर पहुँचा दिया; परन्तु अब वह किसीकी कोई पूछ ही नहीं करता। अमुकके पिताने अपने लड़केके लिये कितना

घोर परिश्रम किया; परन्तु कलियुगका प्रभाव तो देखो! वृद्ध पिता कष्ट सहता है, पर वह कुछ ध्यान ही नहीं देता है; आदि आदि आलोचनायें प्रायः सभी देशों, प्रान्तों, मण्डलों, गांवों, गलियों, घरों एवं व्यक्तियोंमें हुआ करती हैं। इस पर यदि पाठक विचार करेंगे तो उनको इस कलियुगका प्रभाव सर्वत्र आसुरी ही दीखेगा। प्रत्येक पुरुष जिसकी कल्पना सुखमय जीवन की की जाती है सचमुच ही दुःखमय है, अस्तु।

इन बातोंको सुनते देखते हुए मैं भी बहुत दिनों से विचार कर रहा हूँ कि क्या सचमुच ही यह सब कलियुग महाराजकी ही कृपा है? अथवा हमारा ही रचा हुआ मानसिक शाब्दिक विचारोंका ही क्रमबद्ध प्रभाव हमारे आगे आता रहता है। मैंने कई महात्माओंसे पूछा, लगभग तिहाई भारतवर्षका भ्रमण किया और देखा, परन्तु किसी भी निश्चित परिणाम पर न पहुँचा। हाँ, एक महात्माके सत्सङ्गके कारण अब यह बात कुछ कुछ अनुभवमें आने लगी है कि जो कुछ हम करते हैं ठीक वही हमारे सामने वैसा ही हमको प्रत्यक्षमें मिल जाता है। जो देश आज यह कह रहे हैं कि उसने हमारे साथ आर्यत्वका व्यवहार नहीं किया, तो वे लोग यह भूल जाते हैं कि जब उनका भाग्य-सूर्य चमक रहा था, तो उन्होंने भी तो किसीके साथ वैसा ही बर्ताव किया था, जैसा कि वह भुगत रहे हैं। जब स्त्रियाँ यह कहती हैं कि मेरी बहू मेरे अनुकूल नहीं चलती; तो उस समय भूल जाती हैं कि वह भी तो किसी दिन उस घरमें बहू ही बन कर आई थी और उसने भी अपनी सासुके साथ अथवा कुटुम्बमें कैसा व्यवहार किया था। जो पिता अपने पुत्रोंको दोषी ठहराते हैं, वह थोड़ासा विचार करें कि क्या उन्होंने अपने पिता या अपने कुटुम्बियोंके साथ कैसा बर्ताव किया था। यह उसीका प्रतिफल है जो उनको मिल रहा है। कुछ लोग कहते हैं कि मेरी पत्नी व पुत्रोंको अन्यान्य लोग भी उचित दृष्टिसे देखें, उनका सत्कार करें, उनके साथ आर्यत्व का व्यवहार करें। किन्तु उन्हें चाहिए कि पहले वे स्वयं भी आर्यपुरुषोचित आदर्शको लोगोंके समक्ष उपस्थित करें। वे भी दूसरोंको मनसा, वाचा, कर्मणा प्रेमसे देखें, परन्तु ऐसा नहीं होता। हम अपने लिए दूसरोंसे जिस व्यवहारकी आशा रखते हैं, वही व्यवहार दूसरोंके साथ भी रक्खें। परन्तु दूसरोंके साथ वैसा करना लोग नहीं चाहते हैं। सुना है कि लोकमान्य तिलककी पूज्या माताजीने बारह वर्ष पर्यन्त पुत्र प्राप्तिके लिए रविवारका व्रत किया था और पिताजीने भी पुत्र लालसासे तप किया था, तो उनके सूर्य जैसा ही पुत्र तिलक उत्पन्न हुआ। राजा दशरथ ने भी पुत्रेष्टि यज्ञ किया था तो यथा नाम तथा गुण वाले राम उत्पन्न हुए। जबकि वर्तमान समयमें इन्द्रिय लोलुपता एवं अज्ञताका बोलबाला है तो सन्तान भी ऐसी-वैसी ही उत्पन्न हो जाती है। सन्तानोंके लिए कोई परिश्रम तो करता ही नहीं है। यदि कोई करता भी है तो कुसंकल्पोंके द्वारा ही करता है, जिससे कि कुत्सित सन्तानें ही प्राप्त होती हैं। अस्तु।

उपर्युक्त सभी बातों पर विचार करनेसे यही ज्ञात होता है कि यथार्थमें हम ही अपने चारों ओरका वातावरण अपने आप उत्पन्न करते हैं। परन्तु स्मृति न रहनेके कारण हम पछताते हैं कि हाय! अब हम दुखी हैं। धैर्यसे कार्य नहीं करते। अच्छे कार्य ही सदैव सहायता करते हैं। राजा दुर्योधनसे कहा गया कि तुम कोई साधु पुरुष ढूँढ कर लाओ तो उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे कोई नहीं मिला।" परन्तु युधिष्ठिर महाराजको कोई दुष्ट आत्मा ही दिखाई न दिया। इसका कारण अपना अपना स्वभाव ही तो था। हमारे यहाँ महात्मा अपने विचारोंको इतना ऊंचा उठाते हैं कि मनसा, वाचा, कर्मणा, जलचर, नभचर, थलचर, जड़ चेतन किसीको भी कष्ट नहीं पहुँचाते। प्रत्येकको प्रेमसे देखते हैं, तो उनसे भी संसारका अणु-अणु प्रेम करने लगता है। वे भयानक जंगलोंमें सिंहों सांपोंके साथ रात्रि दिन अपना जीवन "वसुधैव कुटुम्बकम्" के अनुसार बिताया करते हैं। संक्षेपमें यही बर्ताव है कि जो बात हम चाहते हैं कि दूसरे लोग हमारे साथ ऐसा बर्ताव न करें, अथवा ऐसा बर्ताव करें, तो उनको भी चाहिये कि वे भी वैसा ही

नेत्र-रचना

[लेखक—श्री डाक्टर श्रीनाथ तिक्कू शास्त्री A. M. S. (B. H U.)]

मानव शरीरमें नेत्र जितने उपयोगी और कोमल अवयव हैं उतना कोई अन्य अङ्ग नहीं। जिनके नेत्र जन्मोत्तर विकृतिके कारण अन्धे हो गये हैं वे लोग वास्तवमें यह बता सकते हैं कि नेत्र मनुष्य शरीरमें कितना मूल्यवान् स्थान रखते हैं। यद्यपि स्वाभाविक प्रज्ञाचक्षु लोग भी इनके मूल्यको विशेषतया जानते हैं, तथापि वैकृतिक दृष्टिहीन लोग इनके उपयोगोंका मूल्य तथा इनके अभावमें होनेवाली त्रुटियोंको आनुभविक रूपसे समझते हैं। आधुनिक समयमें भारतीय जनतामें जितनी नेत्रोंकी विकृतियाँ पाई जाती हैं, उतनी स्यात् ही अन्य किसी देशके निवासियोंमें पाई जाती हों। चश्मा लगानेका रोग जितना भारतके भद्रपुरुषों (Gentelmen) में लगा हुआ है उतनी व्यापकतासे अन्य किसी भी देशमें यह रोग अपना प्रसार नहीं करने पाया है। फैशनके वातावरणमें पड़ कर तो कई स्वस्थ नेत्रवाले भी चश्मा लगाने लगते हैं और सदाके लिए अपने प्रचुर-प्राकृतिक-दृष्टिबलको खो बैठते हैं। जिस भारतमें कभी लोग गारुड़ी दृष्टि प्राप्त करनेका प्रयत्न करके आजीवन दृष्टिबलकी विभूतियोंसे वञ्चित नहीं होते थे, उसी भारतके अल्पवयस्क शिशुओंके भी नेत्र आज कान्तिहीन ओजोरहित तथा मंद दृष्टिवाले होते हैं। आधुनिक समयमें जहाँ किसी भी व्यक्तिकी दृष्टिमें दुर्बलता प्रतीत होने लगती है, तो पाश्चात्त्य चिकित्सा-प्रणालीके वैद्य (डाक्टर) शीघ्र ही ऐनक लगानेकी सम्मति देते हैं। उपनेत्र (ऐनक) के प्रयोगसे जहाँ मनुष्य इसके व्यसनी बन जाते हैं, वहाँ भारतकी एक प्रचुर धनराशि भी विदेशको जाती है, अतः इसमें समष्टिगत आर्थिक हानि भी कुछ न्यून नहीं। Precaution is Better than cure) अर्थात् "चिकित्साकी अपेक्षा रोग न होनेकी सावधानता रखनी अच्छी है" इस दृष्टिकोणसे यह उत्तम विधि है कि मनुष्य अपनी नेत्र दृष्टिको बढ़ाये और सुरक्षित रखनेका प्रयत्न करें, जिससे कि वह नेत्रके भयङ्कर रोग और उसके दुष्परिणामोंसे सदा ही दूर रह सके। प्रस्तुत लेखमें नेत्रोंकी रक्षाके विषयमें कुछ आवश्यक साधनोंका दिग्दर्शन कराया जायगा और मुझे आशा है कि पाठक महानुभाव इनका आचरण करेंगे और अपनी निकटवर्ती जनतामें भी इसका प्रचार करेंगे।

नेत्रोंके विषयमें कुछ लिखनेके पूर्व यह आवश्यक है कि प्रथम नेत्रोंकी रचनाके विषयमें पाठकोंको कुछ परिचय दिया जाय।

नेत्रोंकी रचना—

मानव शरीरके जो नेत्र हैं उन्हें वास्तवमें नेत्रगोलक (Eye ball) कहते हैं। यह एक कन्दुककी भांति गोलाकार होते हैं। नेत्रगोलक नेत्रगुहा (Orbitel cavity) में स्थित हैं, जोकि वर्त्म (पलकों) के दो पुटोंसे अर्धावृतसे रहते हैं। नेत्रका जो श्वेतभाग है उसे शुक्लभाग (Sclera) कहते हैं। शुक्लभागके मध्यभागमें कृष्णभाग (Cornea) होता है। कृष्णभागके पीछे एक छोटा-सा रिक्तस्थान है, इसे पूर्वीय प्रकोष्ठ (Anterior chamber) कहते हैं। इस पूर्वीय प्रकोष्ठमें एक पारदर्शक द्रवपदार्थ होता है जिसे तेजोजल (Aquashumour) कहते हैं। इस द्रवभागके पीछे दो रचनाएं होती

वर्ताव दूसरेके साथ करें, जैसा कि हम स्वयं अपने लिए चाहते हैं। महर्षि वेद व्यासजीने उचित वर्ताव की व्याख्या की है—

"आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।"

हैं, एक तो काली-काली रचना दिखाई देती है और दूसरा कुछ लाल-सा भाग दिखाई देता है। काला भाग वास्तवमें एक छिद्र है जिसे कनीनिका (Pupil) कहते हैं। लालभाग एक मांसपेशी है जिसे ऐरिस (Iris) कहते हैं। ऐरिसके बिल्कुल मध्यमें कनीनिका होती है। कनीनिकाके पीछे अथवा यों कहना चाहिये कि ऐरिस के मध्यमें काच (Lens) होता है। यह काच पारदर्शक होता है और इसकी रचना पलाण्डु (प्याज) की तरह होती है यह उभयोनतोदर (Biconvex) होता है। काच एक प्रकारकी दृढ़ रज्जुओंसे अपने स्थानमें बंधा रहता है, इनको दोलकरज्जु (Suspensary Legamente) कहते हैं। काचके पश्चात् भागमें एक विस्तृत स्थान है, जिसमें एक पारदर्शक अर्धतरल द्रव्य रहता है। इसे ज्योतिर्द्रव (Vitieous) कहते हैं। इस विस्तृत स्थानके पीछे चाक्षुषीनाड़ी (Optic Nerve) का तन्तुवितान है, जिस पर बाह्यपदार्थोंके चित्र पड़ते हैं। जिस प्रकारकी रचना 'कैमरा' की होती है उसी प्रकार हमारे नेत्रोंकी भी रचना है। हमारे दृष्टिपटलमें जो चित्र पड़ते हैं वे सदा ही उल्टे होते हैं, परन्तु सतत अभ्यासके कारण हम उन्हें सीधा ही देखते हैं। चाक्षुषीनाड़ी (Optic Nerve) सीधा ही मस्तिष्कके साथ सम्बन्धित है। जो चित्र दृष्टिपटल पर पड़ते हैं उनका विश्लेषणात्मक ज्ञान मस्तिष्कके चाक्षुषकेन्द्रों (Visual Centres) के द्वारा होता है। बाह्य वस्तुओंके वर्णाकृत्यादि रचनाओंका प्रतिबिम्ब किरणोंके द्वारा चाक्षुषवितान पर पड़ता है, यह किरणें नेत्र पारदर्शकभाग, कृष्णभाग (Covnea) तेजोद्रव (Aquas Humous) कनीनिका (Pupil) काच (Lens) तथा ज्योतिर्द्रव (Vitrcous) के द्वारा प्रवेश करके चाक्षुषवितानके एक गर्त (Macula lutea) पर प्रतिबिम्ब बनाती हैं। ऐरिस (Iris) में यह विशेष गुण है कि वह प्रकाशमें संकुचित होता है और अन्धकारमें प्रसार करता है। इस संकोचप्रसारके कारण ही नेत्र चकाचौंध करने वाले प्रकाशमें और धुन्धले प्रकाशमें भी बाह्यवस्तुओंको देखनेमें समर्थ होते हैं। नेत्रोंकी इस विलक्षण शक्तिको समावेशनशक्ति (Power of acommodation) कहते हैं। चाक्षुषी नाड़ीके वितान (Retena) में दश स्तर होते हैं। इनमेंसे एक स्तरकी रचना दो प्रकारकी रचनाओंसे बनी है। एक दण्ड (Rods) दूसरा कोण (Cones) यह दण्ड और कोण ही प्रकाशकी बाह्य किरणोंसे कम्पित हो कर चाक्षुषवितानके ऊपर प्रतिबिम्ब बनाते हैं। कुछ प्राणियोंमें दण्ड और कोणोंकी संख्यामें अधिकता और कुछमें न्यूनता होती है। इन्हींकी अधिकता या न्यूनताके कारण कुछ प्राणी दिनको देख सकते हैं रातको नहीं, जिनमें यह समगात्रामें होते हैं वे दिन और रात को समानरूपसे ही देखते हैं, जैसे सिंह कुत्ता आदि, और कुछ रातको ही देख सकते हैं। दिनको चाक्षुषीनाड़ी (Optic Nerve) मस्तिष्कके चाक्षुषपिण्ड (Optic Chiasma) से निकल कर एक छिद्र (Optic foramen) के द्वारा नेत्रगोलकमें प्रवेश करती है। यह नाड़ी अन्य नाड़ियोंकी भांति सूक्ष्मतम तन्तुओंसे बनी हुई है। यह तन्तु क्षौमतन्तुओंके समान चमकते हुए और श्वेतवर्णके होते हैं। चाक्षुषनाड़ीके यह तन्तु नेत्रगोलकके आभ्यन्तरिक भागमें फैलकर उसकी आन्तरिक स्तर बनाते हैं। इस नाड़ीके ठीक मध्यमें एक सूक्ष्मधमनी (Central Artesy) भी होती है। यह धमनी भी मस्तिष्कमें रहने वाले धमनीचक्रसे सम्बन्धित रहती है और यह नेत्रको रक्तसंवहन करती है।

मनुष्यके मस्तिष्कमें दृष्टिकेन्द्र (Visual Centre) होता है। चाक्षुषी नाड़ीके सभी तन्तु इसी दृष्टिकेन्द्रसे उदय करते हैं और कुल तन्तु यहीं समाप्त होते हैं। यह सभी नाड़ी-तन्तु दृष्टिज्ञानकी अद्भुत शक्ति मस्तिष्कके इसी केन्द्रसे प्राप्त करते हैं। वर्णों का तथा आकृतियोंका विश्लेषणात्मक ज्ञान इसी केन्द्रके द्वारा होता है। वैज्ञानिकोंका कथन है कि बाह्यवस्तुओंका प्रतिबिम्ब चाक्षुषवितान (Retinal Layer) पर पड़ता है, परन्तु उतनेसे ही हमें उस वस्तुका ज्ञान नहीं होता है। उस प्रतिबिम्बकी

संवेदना मस्तिष्कके दृष्टिकेन्द्र पर पहुँचती है। वहाँ नया प्रतिबिम्ब (Imagl) बनता है, वह प्रतिबिम्ब चाक्षुषवितानके प्रतिबिम्बकी भांति उल्टा नहीं होता, अपितु सीधा ही होता है। इसको इसी भांति समझना चाहिए जिस भांति कैमराकी वास्तविक फिल्म पर जो पहले चित्र पड़ता है वह उल्टा होता है, उसका जो (Heyatior) होता है वह सीधा होता है और वही वास्तविक चित्र कहलाता है। प्रतिबिम्ब की इस रचना तथा पुनर्निर्माणकी क्रिया इतनी शीघ्रतासे होती है कि उस समयको नापा जाना असम्भवसा ही है। किरणोंकी गति प्रतिसैकेण्डमें १८६००० मील है, इसीसे अनुमान करना चाहिये कि यह प्रतिबिम्ब रचना नेत्र और मस्तिष्कके पटलों पर कितनी शीघ्रतासे होती होगी।

उपर्युक्त वैज्ञानिक सिद्धान्तोंका आभास आयुर्वेदशास्त्रोंमें भी मिलता है। सुश्रुतने नेत्रोंकी रचनाका वर्णन करते हुए कहा है—

मसूरदलमात्रां तु पञ्चभूतप्रसादजाम्।
खद्योतविस्फुलिङ्गाभामिद्धां तेजोभिरव्ययैः॥
आवृतां पटलेनाक्ष्णोर्बाह्येन विवराकृतिम्।
शीतसात्म्यां नृणां दृष्टिमाहुर्नयनचिन्तकाः॥

इसका अर्थ यह है कि जो दृष्टि अर्थात् नेत्रोंके आलोचक भाग हैं, वह मसूरकी पत्तीके समान है और पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाशके प्रसाद-भागों (Iruusperant) से बनी हुई है। इसकी आभा जुगनू और चिनगारीकी तरह है और इसकी वृद्धि तेजके अक्षत परमाणुओंसे होती है। यह पटलों (आवरणों Coats) से ढकी हुई है। बाहिरसे यह छिद्राकार है और यह शीतलताको भी सहन करती है (अर्थात् भौतिक अग्निकी तरह जलसे बुझनेवाली नहीं है)। सुश्रुतके मतसे पित्तका ही एक विशेष भाग दृष्टिको बनाता है। इसको उसने 'आलोचक पित्त' की संज्ञा दी है। यह पित्त वास्तवमें नेत्रके तरलपदार्थ और चाक्षुषीनाड़ीको तन्तुवितानोंके सद्रव और चमकने वाले भाग हैं जिनसे दृष्टिज्ञान प्राप्त होता है। 'विवराकृतिम्' से कनीनिका (Pupil) की ओर संकेत है। पटलोंसे अभिप्राय नेत्रगोलकके पारदर्शक आवरणों (Reflecting Media) से है।

नेत्ररोगोंकी संख्या सुश्रुतने स्थूल रूपसे ७६ गिनाई है। इससे अधिक भी अन्य कई प्रकारके रोग हैं। परन्तु यहाँ रोगोंके वर्णन करनेकी आवश्यकता नहीं और नाहीं उतना स्थान भी है। आगामी अङ्कमें हम नेत्रोंकी रक्षाके उपायोंका सविस्तर विवेचनात्मक वर्णन करेंगे।

जीवन पथ !

[कवयित्री—श्रीमती सौ० सावित्रीदेवी 'व्रजेश']

सखे ! जीवनपथ दुर्गम और महान्।
आशाका पाथेय लिये चल, अविरल गतिसे निर्भय निश्चल।
अद्भुत साहसमय-मदिराका पथिक किये चल पान॥
कितने हैं तुझे डराने वाले, पग-पग पर अटकाने वाले।
कायर सदा डरायेंगे ये दुनियाँ दुखकी खान॥
जग कितना ही भय दिखलाये, पर तुझ पर कुछ आंच न आये।
ऐसे भीरु नपुंसककी तू सीख कदापि न मान॥